उपासक०
१

॥६०॥ प्रणम्य श्रीमहावीरं महानंदकरं मुदा उपासक सूत्रस्य चह्ये व्याख्यां सुबोधिका ॥ जिनचंद्रसूरि शिष्येण हर्षवल्लभ साधुना ... | तेह तीणइ कालइ चउथा आरानइं ...
... अध्ययन १० ... उद्देसा ... समुद्दे ...
... ११५२००० ... इग्यार लाख बावन हजार ... पद ... ॥

॥६०॥ श्री जीनाय नमः ॥ तेणं कालेणं ॥

तेह तीणइ समइ सुधर्म स्वामी इं कहिउं अर्थ ते समइ | चं० चंपा एहवे नामे नगरी हो० हुंती वर्णन वर्णक ... | पु० पुर्णभद्र इसिइं नामें चे० चैत्य व्यंतर देव नउ ... | तेह ते काल चउथा आराकाल | ते० ते समइ | अ० आर्य सुधर्मस्वामी पांचमा गणधर

तेणं समएणं ॥ चंपानामं नयरी होत्था ॥ वन्नउ ॥ पुण्णभद्दे चेइए वण्णउ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे

सो० स मो स रया | जा० यावत् देवता नइ पर्यंत ... जंबू स्वामी ... | ए० एहवउ वर्णक कहिवउ | जे० जीणइ दिशि स्वामी जंबू ... | स० श्रमण श्री महावीर | जा० यावत सं० मोक्ष पाम्या ते | छ० छट्ठा अंग | ना० ज्ञाता धर्म कथा ...

समोसरीए ॥ जाव जोबूजत्ता समाणे ॥ एवं वयासी ॥ जइणं भंते ॥ समणेणं ॥ जाव संपत्तेणं ॥ छट्ठस्स अंगस्स नायाधम्मकहा

अ० ए अर्थ पूछइ | स० सातमा अंग | अं० अंग | उ० उपासकदशा | स० श्रमण तपस्वी | जा० यावत सं० मोक्ष पाम्या | के० कुण अर्थ | ए० इम सुधर्म ...

णं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सत्तमस्सणं भंते ॥ अंगस्स ॥ उवासगदसाणं ॥ समणेणं ॥ जाव संपत्तेणं ॥ केअट्ठे पण्णत्ते ॥ एवं खलु जंबू

स० श्रमण तपस्वी | आ० यावत संस मो० पाम्या ते | स० सातमा | अं० अंग | उ० उपासकदशा | द० दस अ० अध्ययन ... | आ० आणंद | का० कामदेव | गा० गाथापती

समणेणं ॥ जावसंपत्तेणं ॥ सत्तमस्स अंगस्स ॥ उवासगदसाणं ॥ दस अज्झयणा पण्णत्ता ॥ तं ॥ आणंदे १ कामदेवेय २ गाहावइ

चु० चुलनीपीता ... | सु० सुरादेव ... | चु० चुल्लसतक ... | गा० गाथापति कुंडकोलिया ... | स० सद्दालपुत्र कुंभकार ... | म० महासतक ... | नं० नंदिनीपिता ...

चुलणीपिया ३ सुरादेवे ४ चुल्लसयए ५ गाहावइ कुंडकोलिए ६ सद्दालपुत्ते ७ महासयए ८ नंदिणीपिया ९

(margin) १

ले० लतियपिता ... दसमो ... श्रावक श्री महावीर ना परम ... १२ बारव्रत ... श्रावक हुआ | अ० अध्ययन ... | स० श्रमण तपस्वी | जा० यावत भगवंत महावीर सं० मोक्ष पाम्या ते | स० सातमा अंग ने विषे | उ० उपासकदशा नइ विषइ | द० दस

लेतियापिया १० ॥ जइणं भंते ॥ समणेणं ॥ जावसंपत्तेणं ॥ सत्तमस्स अंगस्स ॥ उवासगदसाणं ॥ दस

अ० अध्ययन ... | प० पहिलइ प्रथम अध्ययन ... | अ० श्रमण भगवंत स० समण तपस्वी श्री महावीर देव ... | आ० यावत ... | के० कुण अर्थ प० कह्या | ए० इम ... जंबू | ते० तिण समइ

अज्झयणाए ॥ पढमस्सणं भंते ॥ अज्झयणस्स समणेणं ॥ जाव संपत्तेणं ॥ केअट्ठे पण्णत्ते ॥ एवं खलु जंबू ॥ तेणं कालेणं २

वा० वाणिय ग्राम ... | नं० नगर ... | व० ... | त० तिणइ वा० वाणिग्राम | ग्रा० ग्राम | न० नगर नइ विषइ | व० ... | उ० ईशान ... | उ० दुतीपलास ...

वाणियगामे ॥ नामंनयरेहोत्था ॥ वन्नउ ॥ तस्सणं वाणिया गामस्स नयरस्स ॥ वहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए ॥ दुइपलासए

चे० चैत्य ... | न० ति ही ज | वा० वाणिज ग्राम एहवे नामें नगर नइ विषइ राजा ... | जि० जितसत्रु एहवे नामें राजा ... | वा० वाणिज्य एहवे नामें ग्राम नगर नइ विषइ ... | आ० आणंद एहवे नामें गा० गाथापती | प० ... वसइ ...

नामा चेइए ॥ तत्थणं ॥ वाणि ग्रामे नगरे ॥ जियसत्तुराया ॥ वन्नउ ॥ वाणियग्रामे नगरे ॥ आणंदे नाम गाहावइ परिवसइ

(margin) नः तिाहं
(margin) ×तत्थणं४

अ० ... | अ० अपरिभूत महा ... आणंद गाथापतीने कोइ ... | त० आणंद एहवे नामा गा० गाथापती ... | ध० ... हिरण्य ... कोडि | नि० ... | च० ... कोडि

अड्ढे जाव अपरिभूए ॥ तस्सणं आणंदस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडिउ निहाणपउत्ताउ चत्तारि हिरण्णकोडि

व० वृद्धि ... | च० ... कोडि प० ... | च० ... चालीस हजार गाइ | ... | से० तेह आणंद गा० गाथापती ...

उ वड्ढिपउत्ताउ चत्तारि हिरण्णकोडिउ पवित्थरपउत्ताउ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं हुत्था सेणं आणंदे गाहावइ

व० घणा इ० इत्यादि धर्यंत लगइ वासा जा० जीवत सर्व सर्वाग्र थाल अक्षत मांहिलीकने | व० बहुलक० कारजन इ विषइ घणादि बहुवर्दि | का० कारणान इ विषइ कु लताजोग | मं० मंत्र आलोचवान इ विषइ | कु० कुटंबन इ विषइ गुह्य गुल अक्कामनाय वातन इ वि० विषइ | र० रहस्य छानी एकां सथातन इ विषइ

बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य कुडुंबेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य

नि० निश्चय एकाम करवा नइ विषइ | व० व्यवहार व्यापारा दिकनइ विषइ | आ० आपूछवा इ छइ वायोग | प० वारवार सर्वनइ पू० पुछिवाजोग | स० विशेषत आपणा सगा कुटुंब उटमई मरणा दिक हुतइ कां मननइ विषइ केवलोतइ | मे० मेढी खलामां घरनु आधार जिम कुलनी आधार घर नइ विषइ आणंद | आ० आधार करवा नइ विषइ

निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे सयस्सवि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं

आ० आधार तत आ० जिम कुवा मांहि उतरता चढता प्राणी नइ रासडा आलंबन तीम लोकनाकारण इ आलंबन पद्म यत छइ मे० जिम खलइ मेढी आलंबनां तीइ करइ तिम ॥ | स० सर्व नइ पवरतन विरति तु ते दृष्टु देखाडवी द्वार पु छीवा योग्य सर्व नु पाय दे खाडवइ चक्षु लोचन समान कर्ष ध रमस्व कारज नइ विषइ नु सत्राइ उपमार्थ ते तें | आ० आणंद नामा गा० गाथापतीनइ

चक्खू मेढीभूए सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था तस्स णं आणंदस्स गाहावइस्स

सि० सिवनंदा एहवे नाम ना मइ स्त्री नारजा कुं० कुली वणकेहवीछइ | अ० नथी उणा अंग ना अवय व जा० यावत स० सरव मनोहर छइ | त० करी सहीत आलंब तस्य रूप देखां गमा समान शिवनंदा | आ० आणंदनइ इष्ट सरीवाइइ वाल्ही मनगमती छइ संतोष आणंद उपरि अनुरक्त राग वंत | अ० किवारइ विरक्त न थी इष्ट मनोज्ञ आ० शब्द परमगंध स्पर्श रूपको

सिवनंदा नामं भारिया हुत्था अहीण जाव सुरूवा आणंदस्स गाहावइस्स इट्ठा आणंदेणं सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठा सद्द

र नानुक्त इच्छीजे | मा० कोइक मनुष्य संबंधिया रवनां इ सं नेपं वविषय काम इ आ० आणंद सह गायावतीसं घाते नी पता पण कांयि विविरइ छइ सुख कांलही वातरो छइ नथी | त० ते वाणिज गाम नामनगर मइ विषइ | ब० बा हिर | उ० उ तरनें पुर्व विचाल इसान कूणइ

फरिस जाव पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणी विहरइ तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसी

ए छइ | को० कोल्लाक एहवे नामइ सं० स निवेस समीप इहु र उकुं० कुता | वि० तेवणिकथिं वं ते आ लाद करी पा० देखवा योग्य प्रसन चितया | त० ति वां को० कोल्लाक सनी वे सनइ विषइ | आ० आंठ चा मा णाप्याचतीना | ब० घणा मित्र ज्ञाती एक जाति ना गोती

एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे हुत्था रिद्धिमिय पासाइए ४ तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे आणंदस्स गाहावइस्स बहुमित्तनाइ

नि० नीजीक स० आवली पीतरीया श्रक थस० सज्जन संबंधी प० परजन परवरी वारिदासा प्रमुख कोल्ला गसनी वेसने विषइ प० निवसइ छइ | अ० रुद्धि वंत कोइ ते हना इपरा भवी न सकइ | ते० ते णी काल इ ते० ते णी समइ | स० श्रमण तप स्वीस० भगवंत | जा० यावत स० श्री महावीर देवस मोसर्या | प० पर षदा नि

नियग सयण संबंधि परियण परिवसइ अड्ढे जाव अपरिभूए तेणं कालेणं २ समणे भगवं जाव समोसरिए परि

क वांदिवा नी० चाल्या | कू० जिम कोणिक राजा वां दवा नीसर्यु तेम वाइने विशेषवरणव छइ | त० तिम जि० जितसत्रु राजा नि० वांदवा नी जाव छइ | जा० यावत प० पंच विगमसाववीवर्जवा सना सेवाकरे | म० तीवार आ० आणंद नामा गा० गाथापति इ तिण समइ | इ० एहवी कथा वा रता जाती श्री भग वंत महावीर प्रधा

सा निग्गया कूणिए राया जहा तहा जियसत्तू निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ तते णं से आणंदे गाहावई इमीसे कहाए

स्या० इम सांभलइ आणंद नामा गाथापतीए इम ख० निश्चइ स० श्रमण भगवंत | श्री महावीर इहां आवीनें वीचरे | ते० ते म० मोटो फल जाव त० तेनोगा जीतु नगवीं ते महावीर वांदीनइ वांद | न० यावत प० पर्जुपास तिसेवा कल जावतनी | ए० एवु मनमा हि संचींतवइ | ए० सनान मघन करइ स्नइ आवेस वस्त्र उत्तम प्रधा

लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे जाव विहरइ तं महाफलं गच्छामिणं जाव पज्जुवासामि एवं संपेहेइ २ ण्हाए सुद्धप्प

न मंगलीकतलक्षमइ प्रवेस जोग्य पहिरइ अ० अल्प थोडुं भार म० मुलइ मुं हगा एहवा आभरण वडइ पहिरनइ | स० आपणा गि० घरथकी प० नीकलइ नीकलीनइ | स० मस्तक नइ विषइ को रिंट नामा वृक्ष फूलनो | छ० छत्र धरावइ धरि जइ धकइ | म० मनुष्य नी वा० वरे

वेसाइं अप्पमहग्घाभरणा सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्स

लि निलिप वरवार इ वस्त्रोवक र्त | पा० पायविहारथा ता चालतइ | व० वाणिजगाम नगर मइ | म० मध्योमध्य नागरनइ नमारगइ | नि० नीक लइ | जे० जिहां दूइ पलास चे० चेत्य तइ संदेवत क्षेत्र | जे० जां हां स० श्रमण तवसीज० भगवंत श्री

वग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं वाणियगामं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं

महावी रदेव इ | ते० तिहांकणि इ आवे आवीनइ | ति० त्रिण वार | आ० आपण दक्षण या साथी | प० प्रद क्षणादे वइ | वं० वांदइ मनइ स्तव ना करइ न० नमस्का र करे मस्तक | जा० यावत प० पर्जुपासना से वा करइ | त० तीवारइ स० श्रमण तप सी भगवंत श्री महावीर देवइ उ क्षमह कारी सहित भगवत:

महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ तते णं समणे भगवं महावीरे

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

उपासक० २

आ० आणंद नामा गाथा पतीनइ | ती० तेहवार मोटी परखदा नइ जा० यावत् विस्तर ध० धर्म कथा साक श्रावकनो मार्ग कहइ | प० धर्म सांभली प० पाछी प्र० तीपरखदा | रा० राजा पणि प० पाछो वलो | त० तीवारे सेतेहे आ० आणंद नामा गाथा पती | स० श्रमण

आणंदस्सगाहावइस्स तीसेयमहइ जाव धम्मकहा परिसापडिगया रायायपडिगउ तएणंसेआणंदे समणस्स

भ० भगवंत महा श्री महावीर देवनी | अं० समीपइ ध० धर्मसांभलीनइ | नि० घणउं ह० हर्षपाम्या तु० मनसं तोष पाम्या जा० यावत् हि० हृदय उल्लसित थका | ए० एहवो व० वचन कहइ | स० सरदहुं तुं भं० हे भगवान् हुं | नि० निर्ग्रंथ साधुनउ मार्ग | ए० ए इं मे जइ

भगवउमहावीरस्स अंतिएधम्मंसोच्चा निसम्महठतुठ जावहियए एवंवयासी सद्दहामिणंभंते निग्गंथेपावयणं एव

प० तुम्हे कहिउं ते तिमइ | त० तथ्य साचउ भं० हे भगवान | अ० ए हमांहि फेर नथी | इ० इछउ जे ज० | इ० इछउ जी जीमोनइ इछित वांछितोलइ संदेह रहित तसाधुनो मोह मार्ग छइ | प० प्रतिछित थिसे वतवएइ करीन इ संकादिक | इ० इछीत रत्नउ पडिछा नवार इत्यादि करतां घणा करता थो पछइ | से० ते जिम तुम्हे कहउ छउ इति

मेयंभंते तहमेयंभंते अवितहमेयंभंते इच्छियमेयंभंते पडिच्छियमेयंभंते इच्छियपडिच्छियमेयंभंते सेजहेयंतुब्भे

क० कहिउं ते तिम इ त्रिकरण सूं कहइ | ज० जिम देवानुप्रीय तुम्हारइ | अं० समीपइ ब० घणाजि | रा० राजेस्वर त० कोटवाल | सा० सांडव माधणी | को० कुटंबीक टेवनाधणी | सि० श्रेष्टि सेठ नाथती | स० सारथवाह प० प्रमुख घणाइ मारइ

वयहत्तिकट्टु जहाणंदेवाणुप्पियाणं अंतिएबहवे राइसरतलवर माडंबिय कोडुंबिय सिठिसेणावइ सत्थवाह

समीपइ घरस वीध मादि कत्तोमानइ | फ० इवात ना वतपाणइ मुं कुपइ | अ० घर छांडी | अ० अणगार साधु प० जती थया | णो० नहीं ख० निश्चइ मो च त तजतीमउ छांडमल | इ० मुझ जाज्यावत् प० दीक्षा लेवा नहीं समस्थ हुं नहीं | अ० हुं

प्पभिइया मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियंपव्वइया णोखलुअहंतहासंचाएमि मुंडेजावपव्वइत्तए अहंणं

दे० देवानुप्रीय | तु० मारइ अं० समीपइ प० पांच अनुव्रत सीनावरतथीनान | स० सात सा० सा व्रत | दु० दुवालसविध कोरे बारव्रत नपनेद इ० करी श्रावकनो आचार गि० गृहस्थनो ध० धर्म | प० पडिवजीस हुं अंगीकार करीस तं | आ० तिवारे भगवंत कहे ए० आणंद देवानुप्रीय जीम सुख होवे

देवाणुप्पियाणं अंतिएपंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहंगिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि अहासुहंदेवाणुप्पिय

२

वेति मक री | मा० धर्मनइ विषइ प्रतिबंध अंतराय म करस्यउ तत्तेणं से आणंदे गाहावई समणस्स भगवउ महावीरस्स अंतिए तप्पढमयाए थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहंतिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा... | दि० तिवारे त० तीवारइ आ० आणंद नामा गा० गाथा पती | स० श्रमण भगवंत नइ

प्पियाभापडिबंधंकरेह तएणंसेआणंदेगाहावइ समणस्सभ

अं० समीपइ प० पहलउ थू० थूल मोटको ए | पा० त्रस जीव सं बंधीउ संकल्प थी पातवरणतीपा | त० पचखीयउ ए पचखाण नथी | जा० जावजीव सीम

अंतिएपढमयाएथूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइ जावजीवाए दुविहंतिविहेणं नकरेइ नकारवेइ मणसावयसा

म० मनेकरी व० वचने करी का० कायाइ करी | त० तीवारइ प० छइ | थू० थूल अद तादान जिणली

काइसा तयाणंतरंचणं थूलगं मुसावायं पच्चक्खाइ जावजीवाए मणसावयसाकायसा तयाणंतरंच थूलगंअ

च० चोर कहीयइ एह वी अदत्तादाननो पच्चक्खाण | म० मनइ करी व० वचन करी का० कायाइ करी | त० तिवा प० छइ | स० स्वदार संतोष आवली स्त्री क संतोष करु परिमाण कीधे | ए० बीजी नहीं | ए० एक शिवनंदा नामा स्त्रीमोकली बीजानो नीयम

दिन्नादाणंपच्चक्खाइ मणसावयसाकायसा तयाणंतरं सदारसंतोसिपरिमाणंकरेइ णन्नत्थ इक्काएसिवानंदाएभारियाए

अ० अवसेस बीजी स्त्री | मे० मैथुन संजोग करवानउ | प० पचखाण करइ | त० तीवार पछे | इ० इच्छा परिमाण करतो थको प० परमाण करइ | हि० हिरण्य तथा सोनो इन प्रकार नउ प० परिमाण करउ एतलाथी अधिक उनकरु | ए० बीजाउ नहीं च० च्यार

अवसेसंसव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं इच्छापरिमाणंकरेमाणे हिरणसुवन्नविहिपरिमाणं करेइ णन्नत्थ चउहिं

कोडि हिरणनी णि० निधान नेंइ विषइ छइ तेराखू अधिक न राखूं | च० च्यार कोडि हिरणनी व० वृधि व्यापार व्याजादिक रहइ छइ ते राखूं | च० च्यार कोडि घरवापर प्रमुखन अरथइ छइ ते राखूं | अ० अवसेस थाकती हिरणसुवर्णविधि सहु ति

हिरणकोडिहिंणिहाणपउत्ताहिं चउहिंहिरणकोडिहिंवुड्ढिपउत्ताहिं चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं अवसेसंसव्वंहिरणसुव

२

उपासक० ४

प्रकारनउ सोनाथीवापर्व ते हनउपचखाणकरइ | त० तीवा रइ | च० चउपदनउ प० परमा णकरइ यथा | न० नही बीज | च० च्यारि० वर्गगोकुलनेकिम दससहस्र गाइएक व्रजएहवा च्यारव्रजउपरांत पचखाणकरी ... | अवसेसमोकलीअवसेस पचखाणकर्यो | अ

ण्णविहिं पच्चक्खाइ ५ तयाणंतरं च णं चउप्पयविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं वएणं अवसेसं

च० चउपदनउ पचखाण करइ | त० तीवार पछइ | खि० खेत्रवत्थुकहतां घर तेहनीविधिनउ प० परमाण क० करइ छइ | न० नही बीजउ | प० पांचसइ हलनउ परिमाण० अनेनिवर्तननामे हलनउ ... एकहलसूं एक वरसमां बीसहजार ... एकवीसलीघे ... एक हल

चउप्पयविहिं पच्चक्खाइ ६ तयाणंतरं खित्तवत्थुविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ पंचहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं

हलेणं ... हलनीभूमि ... पांचसइ हलनी ... एहवा पांचसइ हलनी ... बीजो ... खेत्र ... तेहने ... तेहना ... पचखाणकरइ | त० तीवार पछइ | स० देसांतर जावाजोग्य गाडला भकटप्रमुखनुं परमाणकरइ

हलेणं अवसेसं खित्तवत्थुविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं सगडविहिं परिमाणं करे

न० नही बीजउ | प० पांचसइ गाडला परदेसनव... बाहिर लेजावा जोग्य पांच सइ ... | प० पांचसइ सकट गाम... सं० संवाहनीए स० दि० क थी इतिकाष्ठ धान घाती | आणीइं तेमंवाहनी ... | अ० थाकता सगट पचखाण करइ पाचस इ गाडा उपरांत पचखाणकरे ... चंकार इस ... विक्रमी ...

इ नन्नत्थ पंचहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं पंचहिं सगडसएहिं संवाहणिएहिं अवसेसं सगडविहिं पच्चक्खाइ

त० तीवारे पछइ | वा० वाहणनो प्रवहण परदीपजावानी मते वाहणजल वटजइ वाडजोग्य तेहनो परमाणकरइ | न० नही बीजो | च० च्यार प्रवहण | दि० परदीपजावा जोग्य मोटा प्रवा | च० च्यार संवहणीका ... प्रकरण काष्ठ धान जलवटी थी आणवाजोग्य ... | अ० अवसेसव० प्रवहण

तयाणंतरं च णं वाहणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ चउहिं दिसायत्तिएहिं वाहणेहिं चउहिं संवाहणिएहिं अवसेसं वाह

कि० विधिनउ प० प चखाणकरइ आणंद | त० तीवार पछइ | उ० उपभोगवारंवार सेवीइ ते वस्त्र प्रमुख प० एकवार तेलीजइ | कु० लेप्रमुखनउ प० प्रमाणकरे | उ० स्नानजलनो अंगपूछवानो ... अंगो छीतेहनउ प० परमाण क० करइ | न० नही बीजउ | ए० एक सौ डी ... | ४

णविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खाइमाणे उल्लणियाविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ एगाए गं

धकासाईए ... सा कषा ... कषायनी | अ० सेषथाकता सर्ववस्त्र अंगोछ इ ... | पचखाण करइ | त० तीवार पछइ आ० दंतवणना ... | दं० दांतणविधिनउ प० परमाणकरइ | न० नही बीजउ | ए० एक दा तण आइ

धकासाईए अवसेसं उल्लणियाविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं दंतवणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ एगेणं अ

ल्ल ... नीली आलीजे ठीमधुनउं | अ० सेष बीजा दांतण तेनउ प० पचखाण क० करइ | त० तीवार पछइ | फ० फलनीविधिनउ परमाण क० करइ ... फल जातिना | न० नही बीजउ | ए० एक खीर आमलो ... ... पाके ... ... आमलो ...

ल्लट्ठीमहुएणं अवसेसं दंतवणविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं फलविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं अवसेसं

यथाकुला फलनो | प० पचखाण करइ | त० तीवार पछइ | अ० अभ्यंगन मरदन तेहनउ | प० परमाण क० करइ छइ | न० नही बीजउ | स० सतपाक स० सहस्रपाक ते लि० ... तेलमांहि ... ते सतपा कक ... सहस्रपाक ... सहस्र पाक ते सहस्र पाक तेल संघात ... करि ...

फलविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं अब्भंगणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं

अ० सेष थाकता अनेतेल अभ्यंगन नउ प० पचखाणकरइ | त० तीवार पछइ | उ० उवटणं पीठी तेहनउ प० परमाण क० करइ छइ | न० नही बीजउ | ए० एक ... सुगंध ... ... गंध ... ... स्वामी ...

अवसेसं अब्भंगणविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं उव्वट्टणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा गंधवट्टएणं

अ० अवसेष थाकतां उ० उवट णनो प० पचखाण क० करइ | त० तीवार पछइ | म० स्नाननी विधिनउ | प० परमाण क० करइ | न० नही बीजो | अ० आठ उदककलश ... मोटा ... ... कलश ... ... नहीं ...

अवसेसं उव्वट्टणविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं मज्जणविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं उदगस्स घडेहिं

एतली मर्याद करवो उप रांत नही | अ० सेष थाकता ... मज्जन स्नाननी विधि परमाणनउ प० पचखाण करे आ णंद नामा गाथापती इ | त० तीवार पछइ | व० वस्त्रनी विधिनउ प० परमाण करइ आणंद | न० नही बीजउ | ए० एक खोम जुगल कपासिका दि क वस्त्र जुगल ... ... धोती ... ... अ० ...

अवसेसं मज्जणविहिं पच्चक्खाइ तयाणंतरं च णं वत्थविहिं परिमाणं करेइ नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं अव

कत्ता बीजा वस्त्रनो प० पच्च | न० तिवार ५ | वि० विलेपन शरीर कीजइ ते हनी वि | ण० नही | अ० अगर आगर नी जाति कुं० कुं | अ० शेष
खाण क० करइ | पछइ | धिनो प० परमाण क० करइ छइ | बीजउ | कुमते केसर चंदन वावनो तेहनो | थाकता
आगर जो करीते सर्वविलेपन करवी

उपासक० ५ सेसं वत्थविहिं पच्चक्खाइ तदाणंतरं च णं विलेवणविहिं परिमाणं करेति णन्नत्थ अगरुकुंकुमचंदणमाइएहिं अव
बीजा सर्व विलेपन नउ पच्चखाण क० करइ आणंद श्रावक १७ | त० तिवार पछइ वली | पु० फुलनी विधिनो प० परमाण क० करइ | ण० नही बीजउ | ए० एक स्वेत पुंडरीक कमल छीलाक नउ | अथवा मा० मालतीनो फूल अथवा जाइ ना फुल दा० मालामो कली

सेसं विलेवणविहिं पच्चक्खाइ तदाणंतरं च णं पुप्फविहिं परमाणं करेइ णन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदा
अ० शेष थाकता बीजा सर्व जाति ना फूलनउ प० पच्चखाण | त० तीवार पछइ वली | आ० आभरणनो प० परमाण क० करइ | ण० नही बीजउ | म० मष्ट काने कुंडल कानरा च्चिव मंतु आ दु असमक कुंडल तांबा सकुंडला नाम आदि कुंडली तुंका ने कुंडल पहरण

मेणं वा अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं आभरणविहिं परमाणं करेति णन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममु
बीजा नामांकित मुद्रा एतली आभरण पहर वा नाम नामांकित मुद्रा | अ० अवशेष थाकता आभरण नो प० पच्चखाण क० करइ १९ | त० तीवार पछइ वली | धू० धूप णनो | प० परमाण करइ आणंद नामा गाथापति | ण० नही बीजो | अ० अगर तगर तुरुक्क कु तांसेला रस तेहनो धूप णो

द्दाए य कालुगाद: अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं धूवणविहिं परमाण करेति णन्नत्थ अगरतुरुक्कधूव
न० तीवार ५ पछइ वली | गं० गुरु नीला जीरादि तो आवसनइ | अ० अव शेष थाकती धू० बीजा सर्व धूप णनो पच्चखाण करे आणंद नामा गाथा पति २० | भो० भोजननी विधि विधनउ प० परमाण करे आणंद नामा गाथापती | पि० पेयाविधिनो प० प्रमाण करइ म० मग प्रमुख पनइ घीसुं ते तली यइ तेपेया कहीये तथा पूर्व दिसइ मगर से प्रधान कमइ करी सरकारीइ ते पेया कहीये अथवा घृत मां कि वांचलसतले ते पेया कहीये ॥

* तदाणंतर माइएहिं अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खाति च णं भोयणविहिं परिमाकरेमाणे पिज्जविहिं परमाण
ण० नही बीजउ | ए० एक कट्ठ पेया मोकली | अ० अवशेष थाकती पेयानो प० पच्चखाण क० करइ २१ | त० तीवार पछइ वली | भ० पक्कीनादि कनो प० परमाण करइ | ए० एक घ० घृतपुर घेवर थायिकरी ए स्था आदि ५

णन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए अवसेसं पेज्जविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं भक्खणविहिं परिमाणं करेति णन्नत्थ एगेहिं घय

रा तथा खं० खाजा यांम तस्यामो कलाइ | अ० अवशेष थाकता बीजा सरव न० नयणमोष माणक करइ आणंद एतइ नामइ गा० गाथापती त० तीवा र पछइ वली | उ० उमालि ते हनी विधनउ पड परमाण क० करइ आणंद नामा गाथापती | ण० नही बीजउ | क० कमुगंधमालि नउ उदनमाक तो कुमंडाल ती जाती मोहे इ छम क | व

पुण्णेहिं खंडखज्जएहिं वा अवसेसं भक्खविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं उदणविहिं परमाणं करेति णन्नत्थ कलिमसालि
मलपुर्व दिसमा सीध | अ० अवशेष ताबीजा सर्व उ० सालि ते हनी विधनो प० परमाण क० करइ | त० तीवार पछइ | स० दालिक डील ते हनी वीधनउ प० परमाण करइ आणंद श्रावक | ण० नही बीजउ | क० मसूर नी दाल मोकली | मु० मुग स्या मुनी दाल मोकली

उदणेणं अवसेसं उदणविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं सूवविहिं परिमाणं करेति णन्नत्थ कलायसूवेण वा मुग्गमासूवेण वा
मा० उडद नी दाल मोकली छइ | अ० अवशेष थाकता सर्व प० दाल नो पच्चखाण क० करइ | त० तिवार पछइ | घ० घीनो परमाण क० करइ आणंद नामा श्रावक नावत दासे | ण० नही बीजइ | सा० सरत कालनो गोघृत नो घृत मोकलो आसु काती तथा तत काले नो घरमाकलो | अ० अव शेष थाकता

मासमूवेण वा अवसेससूयविहिं पच्चक्खाति तराणंतरं च णं घयविहिं परमाणं करेति णन्नत्थ सारदाएणं गोघयमंडेणं अव
बीजा सर्व घ० घृत नो प० पच्चखाण | करइ आणंद नाम इ श्रावक | त० तीवार इ पछइ | सा० साग सालणानो प० परमाण क० करइ आणंद एतवी नामइ श्रावक जाणवा | ण० नही बीजो | व० वथुआदि शाकनी नाली सके लिंडे सोवा मागनी | अ० जीवक भ्रमरा कोथी मी ही साक तथा वली | मं० मंडुकी साक एतला

सेसं घयविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं सागविहिं परिमाणं करेति णन्नत्थ वत्थुसाएणं वा सुत्थियसाएणं वा मंडुक्किय
शाक मोकलो | अ० अवशेष थाकता बीजा सरव सा० साकनो प० पच्चखाण क० करइ आणंद नामा श्रावक | त० तिवार पछइ | म० मधुर आमलो रस तेहनी विधनउ प० परमाण क० करइ आ० आणंद एतले नामइ श्रावक | ण० नही बीजउ | ए० एक पाल कालंक नाम म० माधुरो मोकलो वा० पालंका लजी विशेषमोक

साएणं वा अवसेसं सागविहिं पच्चक्खाति तयाणंतरं च णं माहुरयविहिं परिमाणं करेति णन्नत्थ एगेणं पालंकामा
गो० हे स्वामी | अ० अवशेष थाकता बीजा सरव म० मधुर रस विधनउ प० पच्चखाण क० करइ आणंद नामा श्रावक | त० तीवार इ पछइ | जि० जीमणा त्रि व्यंजन वडा पकवान नी विधनउ प० परमाण क० करइ आणंद श्रावक | ण० नही बीजउ | से० सेधी नी दालि वांदी मुग प्रमुखनी दाल सत बी नउ वडा तथा घोल वडा

हुरएणं अवसेसं मधुरयविहिं पच्चक्खाएति तयाणं तरं च णं जिमणविहि परमाण करेति णन्नत्थ सेहंबदालियवि

बेदनीजीदीनमा बुराणमुकड वातिक पुष्टिअ सा ल ण लिवा अ० अवसेसव्हा कनिसीजासरव जी मलानीपव परलाम कं० करइ आ० आणंद | त० तीवारइ पछइ | पा० पाणीनीविधि विधनपव परमाण करइ आणंद नामा श्रावक | ण० नही वीजो | ए० एकआकाशथी पाणी पडइ ते आकाशथी पडतु धरतीनें अणफिडु ते पाणी लेवउं

उपासक० ६

विहिं अवसेसं जेमणविहिं पच्चक्खामि तदाणंतरं च णं पाणियविहिं परिमाणं करेइ णन्नत्थ एगेणं अंतलिक्खोदए-

अ० अवसेस पाणी नी विधनासरव पच्चक्खाण कीधा | त० तिवारइ पछइ | मु० मुखवास मुखसोधवा परमाण करइ आणंद नामइ श्रावक जाणवा | ण० नही वीजउ काणंद | पं० पांचसोगंधक वस्तु सोपारी वंग जाइफल प्रमुख कंकोल एला वरजी बीजा पच्चक्खाण

णं अवसेसं पाणियविहिं पच्चक्खाति तदाणंतरं च णं मुहवासविहिं परिमाणं करेइ णन्नत्थ पंचसोगंधिएणं तंबो-

बीडा पचसात्रि वंबोल ... | अ० अवसेस मुखवासनी विधना पच्चक्खाण करइ | त० तीवारइ पछइ | च० च्यार कारइ | अ० अर्थ काम रहित जे दंड ते अनरथदंड नुं पच्चक्खाण करइ

लेणं अवसेसं मुहवासविहिं पच्चक्खाति तयाणंतरं च णं चउव्विहं अणट्ठादंडं पच्चक्खाति

तं० तेकहइ छइ | अ० अपध्यान माठउं ध्यान ध्याय मनमाहि १ तंहचिंतवीय २ | प० प्रमाद चारणविकथा पापप्रमाद आलसइ घणा विषय कषाय प्रमाद संसारना कार्य एकथी ते लनाणं मनमां घणा कर्म बंध अनरथा ... आतमांनी ए कांतरीक इमनरथ पाप ... सम्यक्तव तेतें ... संसार

तंजहा अवज्झाणाचरियं १ पमायचरियं २ एकंत विषय आत्मानी कीडा सेवना थी जे अनर्थ ते संसार ...

हिं० हिंसाकारी व स्तनो देवउ पहर... | पा० पापकर्मनो परदेशि ... कृषि इत्यादिक पापकर्म नो उपदेश देवो | आ० आणंदसंबोधवचन आणंद ... | भगवंत मा० श्रीमहावीर स्वामी सर्वगुण संयुक्त | अ समर्थ ... संसार ... निरवलयवणीनो अर्थ छे तेमाटि अर्थ नही पाला चरिय ...

हिंसप्पयाणं ३ पावकम्मोवएसे ४ आणंदाइ समणे भगवं महावीरे

आ० आणंद ए ... श्रमणो | वा० श्राव कनइ | ए० इम व० कहइ | ए० इम व० निश्चइ | आ० हे आणंद स० श्रमणो० पासक श्रावकनइ | अ० जाण्या ... | जी० जीवअजीवादि कनवपदारथ जी जी ... देवता दानव मानव ... धर्माधर्मथी चुकावी नसकइ ... जीव

आणंदं समणोवासगं एवं वयासी एवं खलु आणंदा समणोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं अणतिक्कमणिज्जेणं

स० श्रावक नइ सद समकितना पं० पांच | अ० अतीचार | पे० मोटा जा० जाणिवा परंश्रावकनइ | न० नही समाचार आचरवा नही | तं० तेकहइछइ | सं० संका जिनधर्म साचउ के तथा इस सत्य १ कं० आकांक्षा सर्व दरशन सरीखा २ वि० फलनउ संदेह आणइ ३ | प० परवादी कीनी संसाधरव

सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा संका १ कंखा २ वितिगिच्छा ३ परपासं-

मिथ्यात्वीनी प्रसंसा लिनमतटानी अनदरसनीनी | प० परपाखंडीनी सं० संस्तव परिचय ५ | त० तीवारइ पछइ आणंद | थू० मोटा प्राणातिपात | वे० वेरमण वरतनी | स० श्रमणोपासक श्रावकनइ | पं० पांच अ०

डपसंसा ४ परपासंडसंथवो ५ तदाणंतरं च णं थूलगस्स पाणाइवायस्स वेरमणस्स समणोवासएणं पंच अ-

अती चार | जा० जाणि वा पणि | न० समाचरवा नही आदरवा नही | तं० तेकहइ छइ | बं० बंधन लाकडी प्रमुखनी र कसपणि मारवा ३ छविच्छेद चमरापदनें सवत वधउ ... सरीर नी अवयव | कोतक वलछेदइ अ० अतीचार रोपण करइ लोभथी चकी अणवरत ... करइ ... भत्तपाण वीछो ५॥

इयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा बंधे १ वहे २ छविच्छेए ३ अइभारे

न० भातपाणी भुखनानीरो धकरइ ... अतीचार ... अनेकाय करी ... | दिअतिचार लागइ ... जाणवो त० तीवारइ पछइ थू० मोटा का मु० मृषावाद बोलनि वे० वेरमण व्रतना | पं० पांच अ० अतीचार

भत्तपाणवोच्छेए ५ तयाणंतरं च णं थूलगस्स मुसावायवेरमणस्स पंच अइयारा

जा० जाणि वा पणि | न० समाचर वानही | तं० तेकहइछइ सा० सहसा ... विचारि आल चडावइ एकल ... | र० एकांतइ अलीच कना देवीनइ कहइ ... | मो० पोतानी स्त्रीनो ... मर्म ... | मो० मृषावाद ... उपदेसइ

जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा सहस्साब्भक्खाणे १ रहस्साब्भक्खाणे २ मोसोवएसे ३ सदारमंतभेए ४

कू० कूडालेख अलती वातली लिखनेकूडा लेख ५ | त० तीवारइ पछइ आणंद | थू० मोटो आ० अदत्तादान जे नी धणी ... नो अदत्तादान नो | पं० पांच अती चार | जा० जाणिवा पणि | न० नसमाचरवा आदरवानही | तं० तेकहइ छइ

कूडलेहकरणे ५ तयाणंतरं च णं थूलगस्स अदिन्नादाणस्स पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा

तेन० चोरीनी आणी वस्तु संग्रहीवी चोरनो साहि ज्य देवु संयमतादिक २ | विरु० राजविरुद्ध राजाए चउंकी वइती लेजइ ते नारवी एको वेड व्यापार करइ ३ | कूड० कूडां तोलवां कूडां माप वां करी वाते अ नी चार जाणवा ४ | तप्प० तदारिसव सारिखी वस्तु घाली वेचइ कूडनो टीके कपूरनी वेचइ तेने लसमे ५ ४ | तो० तो वार ५ पलइ

उपासक० ७ तेनाहडे १ तक्करपओगे २ विरुद्धरज्जाइक्कमे ३ कूडतुलकूडमाणे ४ तप्पडिरूवगववहारे ५ तयाणंतरं च णं

सदार० पोतानी स्त्रीसंतोषी नामा व्रत नावी | पं० पांच अति चार | जा० जाणि वावाणि | न० समाचरवा नही आदरवा नही | तं० ते कहइ छइ | इ० थोडा कालने राखी तेहनि अवधि उठलं वाप त्रि भोग भोगवइ पारकी स्त्री ते अतीचार लाइ न्हानी दे इ मास वर्ष आपणा वसि राखइ तेसुं मइथुन भोगवइ ।।

सदारसंतोसिए पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा इत्तरिपरिग्गहीयागमणे १

अ० वेश्या अनाथि अवाकुवा रीकन्याप्रमुखनो गमन २ | अ० अनंग क्रीडा स्तन कक्षो रु वदन विकार निरीक्षकर इ ते अतिचार जाणवा ।। | प० आपणा पुत्र नी परइ परनी वी वाह मेलइ | का० काम भोगने विषइ अत्यंत तीव्र अभिलाष वाजीकरण आदिक मर्दन करइ सदा घोडी ओषधि मिथुन सेवा करावइ इ. जे पुरुष कालीने कालज इत्यादिक रावइ पुरुषानादि पुरुष स्त्रीको एक माथा न ह स्थान के राखी हुकइ ते इ सर्व लेता पण करइ। अ० जे स्त्री परणी न थी विधवा वेश्या दासी स्त्री आ श्री

अपरिग्गहियागमणे २ अणंगकीडा ३ परविवाहकरणे ४ कामभोगतिव्वाभिलासे ५

अतिचार इम कहीय इ अणपरणी जेतार अन्य अपरणी वा नाम वेश्या अनाथ स्त्री ते पारकी लेता साटि कां लेता नां वा अनाथ तीन अपार तीवो तेनी क्रमादि विरइ व्रत अ० अनंग आकार वाम कही मंद्वी काय विषे वो कर्म तना दे ह सुख मांग वरमादीनो तदाम व कय नी वाछ्यादिक करीस घनो अमन कीधे इदइ ते आवका नाइ अतिचार लागे २ आपणा छोकरा नी वी जाना विवाह जोडा न करइ तलिलवा नलतिव्वा तीवइ विवाहकरणीते अतिचार लागइ ४ आपणा कलत्र ने उपरे ते अतीतीव्रपणा हो का माभिलाषि तथा मा बवा नव देहम व लव पा ने कठे जाय आकिलका आदिक देवइ मेलइ दिवराते काम सेवा करइ इ पीयुंदे वी पीडे ते काम पूकी इस मारा ते नही इत्यादि पंचव द ते कर्ब ।।।

ते० ती वार इ पाळइ | इ० इच्छापरिमाण व्रतइ | स० श्रावकनइ | प० पांच अती चार | जा० जाणवा | न० समाचरवा न ही ते नेक | त० ते क इ | खित्त० खेत्रभूमिकावत्थु घरते जु प्रमाण करी कर्मको ते नव वीर्य कर्म क

तयाणंतरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा खित्त व

त्थु इ ते क्षेत्र काइ वीजोइ करे इ मधर हाट विणाएक कर इ र खेते त्र कहीय नघाडी भूमि कोते ए कके त्र संख्या व्रत करनइ बीते त्र नी संरती नो जोतर करी से घर ते खेत्र नो भांजी ए कर्तत्र करें वाड हाकी भूमे घर बत्तनी श्रात आणीए कुपोल करीने राखइ एक घ र लर ए मो इत्र इंआगे अधिको स्मा डी हतानी जाणा खिवली आत गाळा ए कव्र र नक सावनी लगी खर्वे ए कअक रे अ पवा घ र लइ अधिकांद वी वुत्र आदिकनइ नामइ तेपत्रमेह प्रमाण तिक्रम अतिचार ।।।।। | हि० हिरण्य रूपो सुवर्ण सो नो ते प्रमाण करया थकी अधिक उपजे तो जाली वाल जे ठामे राखइ संकार दे इ ले अ० अतीचार जाणवा रखवी जो अतीचार २

त्थुपमाणाइक्कमे १ हिरणसुवण्णपमाणाइक्कमे २

ध० धन्य धान्य ग्रामआन गीक सा ज प्रमुख प्रमाण करइ अमानो मथी लइ ज इ धान अधिको लो भ आरणाथ को संस्कार देइ आपणां करी राखइ ३ | दु० द्विपद भार्या दास दासी चतु० चतुष्पद गाइ सि बोधा वलद उंट आदि देइ ते ह्नाप्रमाण थी ऽ धिक नाथि वा वीत वइ ते अतीचार जाणवा ४ | कु० घरवायर घा ली लोटी आ पो छ प्रमुख अधिक ला धइ ते नी मोटा करइ अ० ५ | दि० दिग्विदिग्व्रत ना अती वार

धणधन्नपमाणाइक्कमे ३ दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे ४ कुवियपमाणाइक्कमे ५ दिसिवयस्स

पं० पांच | जा० जाण वा पण | न० समाचरव ली आदरवा नही | तं० ते कह इ छइ | उ० ऊंची दिस परवतादिक तुं प्रमाण अतीक्रम इ ते पढिल अतीचार जाणवा १ | अ० अधोनी चीदिसनो प्रमाण अतीक्रम इ अजाणइ अधोदिसि भूमिकादि तेह्ना प्रमाण थी गुलसा वेइ कि अतीक्रमइ २ | ति० तिरछी दिसी ना प्रमाण थी अति

पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे १ अहोदिसिपमाणाइक्कमे २ तिरियदिसि

क्रमतां अ ती चार लाग इ ३ | खि० खेत्र वृद्धि करइ पांच सइ जोजन मोकली कुंइ खिल दिसना पुर्वना पुर्व ना पखिम इ जात इ मार्ग जातां वीसम्यो खेत्र वृतिए कठाम पश्चिम डाइ व धारीले इ स्मृति अनंतर ध्यान जाणइ इ कांइ दिसि केतलो कीधे ते अतीचार प ५ | उ० उपभोग परिभोग ना मात्र नमात मो | दु० विविध प्रकार इ | प० क ही इ | त० ते कहइ इ | भो० एक व्हि दभोजन

पमाणातिक्कमे ३ खित्तवुड्ढिसइ ४ अंतरद्धा ५ तयाणंतरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पन्नत्ते तंजहा भोयण

भो० वीजा वेद कर्मनी त्रुजाणे वी २ | भो० ते भोजन ना स० श्रमणो वा० वासंग श्रावकनइ | पं० पंच अ ती चार | जा० जाणवा | न० समाचरवा न ली आदरवा नही | तं० ते क हे छइ | स० सचित्त कंदादिक थी पु लो कीधो स वाता अ हार १ अ० अती चार १ | स० सचित्त वृक्षपाका पक्वादिक

उ य कम्मउ य भोयणउ समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा सच्चित्ताहारे १ सच्चित्त

म चाववो र स० अ चात नी वुध नगरा कस्तु हो इ गुंदादी बूलवा धारे २ | अ० तत काल ना दला धांन तथा अर्ध आधांन ने ह्नो आ हार कीधो लि इ छे अ० अतीय उस धी ३ अपक्व अ हारनी ते इ पो ली ओलावइ कपापडी प्रमु | दु० दुपकं कुरी हाली हिना पाकनी भु ल्लसदे हेतु पोली उला पडुकपापडी प्रमु ख कुपक्व ते ह नु भखण करवो ४ | तुं० तुच्छ ओषधी कुली फली प्रमुख तुच्छ फल ते ह्ना वी जसम न्मानं कु जे फल थोडो इं तृप्ति तुस निषाइ ५

पडिबद्धाहारे २ अप्पउलिओसहिभक्खणया ३ दुप्पउलियओसहिभक्खणया ४ तुच्छोसहिभक्खणया ५

क० अप्पकम्मतस० श्रमणोपासक श्रावकनइ | प० पनरे कर्मादान कर्म आवबानो थामलइ | जा० जाण वा वण | न० समाचरवा न ही आदरवा नही ते नेतिक हइ छइ इ० इंगालविक्रय इत्यादि चाव कुंन कारनी धणारां सोनार जाड़ भुजा इसो ले कसंपति नी गाला ते ह्नो अर्थ कहे छै अंगारकर्म ते जाव कुंभार ली ल भडभूंजा नो कर्म इटवाह चुना दिक जे अ लीअ ग्नी ने आरंभे नीपजे तेसर्व अं गार कर्म जाणवो १

कम्मउ समणोवासएणं पन्नरस कम्मादाणाइं जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा इंगालकम्मे १

७

वं० फूलपनतीकठपलिकंदाद्याणविक्रयणं आमकहाक्षियाकरणं मं वणकम्मं सिक्रर अर्थः वन छेदीने वेचन आदिवेकको वनसावालादिकमा स्वपाड उलिपत्रमूलजानीलाम्रलकारूकंदवेचे वाडीका वाकरावेलवरणनु व्यापारकपासदीलावे अटा एदलीकरावितावनकादश सर्व वनकर्मजाणवाः

सा० साडा इकडरणे धाडा चलावणं नवि कररणजाविनी तेसा वडिडं कम्मं नहं नवि करणल नविनय १ अर्थ सकटक इसकट चंपूरगलेडना अवयव व करीकर सरस मीलकरकमयहावे गाडाकरी वेचे तेलाव वगरलकरीवे ३ त्रियवलक वगरलीगं परवीयं माहपणा ओलडर करिसाड कम्म मर्नो वाहस काहसमणतां तेसीः ४॥ श्री॥

भा० भाडावलद गईतनई मा उट घोडा लदपरी चारतरेडार घरक ए वीजाइपदेइ हइ४ जडविलाणो रुम मुरणामासकइ उपजाइल दुहुरा णं सत्र घालि कालिकाले कुल कालिकारलाइ कीउ एडथं॥५॥

वणकमे २

को० कोटक कर्म सूयावीविनला वि० वनोथनीपा हुणकोकाभाति लावलंनुकामहलइंतालीनुं ड फोडइर्पाणीकेदवेइत्यादि ५ अत्रवाकोडीकम्म सरिण भूमी फोडवाले उसि इकेल उड्पण दादवण्णाइतं ह एवीय कें

साडीकमे ३

कर्मकस्या एवेवास्त प्रकारनावमि अनहूदंतक्रय वननिविवे वदाथ सिध्यसरकायकमेरियथोइस माइये चइरुदंतवाणि जं ६ हा थीनादांत चमर मठना नखरा खककडा-वाइपोह सडाकरू रीमोती वाघ चित्ताादिकना चा

मडादिगादिकना चामडा वोंसभ्रमु प्रमुग्रनीविनिअ चमरी वना अवय वना वाणिज्यतदं तवाणि ज्य ७ लाख वडावा समल चीला धाइडीया इहसा आदि इ। जेव पाटं कला मयालाडना दि व्यापारनेलाख वणिज्य ७

भाडीकमे ४

रस० घीतेल गुल दही दूधमाखर म द मक्षमा इवल वसा आमलनेवेद सत्र० जेको इ दीवक्के तेरस वणिज्य कहीयें॥८॥ केम३ द्विपद मनुष्य मोरकडा प्रमुख च उ पदगाइ नइ भेंस जद ऊठलाली एसती अस्सव पुरुपनाजा व लेइ वेचइ ते के सवाणिज्य ९ वि० विषमी वछनाग अ

फोडीकमे ५ दंतवाणिज्जे ६

कित्णकथीयार सघलोइ हल कुशि कुदाल ह रटीलोह तुंसायु प्रमुख इत्यादि सगलाइ वि ष वाणिज जेई जीवघात वस्तनो व्यापार १० दिवे पाव सामानकर मकदहुडह जंतपीलें णा अरहट घांणीकोलुनी सा उघल मूसल कांकसीप्रमण वेचवे यत्रपीड नकर्म ११

रसवाणिज्जे ७

निल्लं० अलमवामली अथवा बाला दिमी मत ड दिवदचनुपदादिक नेज्जाकदित ने नाक वींदावेको नकानडें कंवलरुखंदृश सादिकनि लरुने करम १२ दव० वीलगाडा नवकुवनीवलावाने काजेइ दव लगावइते १३ सर १४ सरोवर जे

लखवाणिज्जे ८

अलघणाणाकुरईनेदाइ दहला वकूवावीविकीकुवावरदंट कारीनोज्जवेचनालमांदि खेडा प्रावे वाडी प्रादिक १४ अ० असतिने सड अपयडूअनमानावोसने कुसीलवमकजी तुमाजार मा आर मोर कुकंडा स्वान मांजारी वसी कुए घाजा णम वेचेवा दिइदाससी वोषइ माक्तागरतेजीवा गरी घोरीक आपा रकरकरइतेअधमलोक कहीयें तथाअसंजतानेपात्र नीपुष्टपोषचवदामादिकना कोडावोतइ राषइक

केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपीलणकम्मे ११ निलंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३

मावामो कलिने बनीआजीय कारत अस जी नीवो स णया १५ पप नर करमा लने नाम आणावासम से एवन्न र व्यापार कहा ते कुणी वीलाअनेक नी दनादनीक व्यापार छे ते तजवी

दन्नीककतं अछे तेसर्व ए १५ मध्ये जाणवा तथा एपनर इकुलाने नादली करजेजीन मारमी नइ आचरवा जीनमा रगनो व्यवहार नरद ते दुवा प ला राक्षमांटे जुल जुमही जामसी शांतइ दु खाइति मन अरजन कर वो॥

सरदहतलाव सोसणया १४ असतिजणपोसणया १५

तं० तीवारइ पछइ आणंदएहवे नामइ णाथापतीश्रावक अ० अनरथदंडवेरमण अ० अनर्थदंडचो० आर प्र कारनाव्रतश्रीमहावीरदेवप० परकास्या कही

तं० तेक हइछ ५

अ० अवध्यान दुमामनना अ० अवसमयपाने ज्ञांनोम २ हि० अपध्यान जाणवा॥१॥

प० प्रमादआलस धीलेलउघागाराइ ग्रावेकथनाकाइ

हि० हिंसाकारीशस्त्र हथीआर मीदे तेधरदीशकुषु अपावकर्मनीउप देस नदेइ ४

तयाणंतरं चणं अणठादंड वेरमणे चोविहे पनत्ते तंजहा अवझाणचरियं १ पमायचरियं २ हिंसप्पदाणं पावकम्मोव

तं० ते ९

अ० अनर्थदंड वेरमण व्रतना

स० श्रमणोपासक नइआवकनइ

पं० पांच अइ आतीचार

जा० जाण वा

न० आचरवा नहीं आदरवा नहीं श्रावकनइ

तं० तेक हइछइ

कं० कं दप सराग वेचन हास्यादिक मदनो दीपक १

एसि णसमणं अणठादंड वेरमण समणोवासएणं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा कंदप्पे १

कु० भांड चेष्टानु अनथा विका रइ बोलइ २

मो० मुकार वचकारादिक वचनबोलइ ३

सं० अधिकरण उखल मुसलनिर्ध कलकला करानुक इतेलोक आवी घइ ४

उ० उपभोग परिभोग अतिरिक्ते जेनतु स्नानइ का जा आवइ तेकुतली अधिक संनावरसीजे जलादिकसानए मेलइ ५

न० तिवार इपछइ

सा० सामाइकनवमा व्रतना स० श्रमणोपासकनइ

कुक्कुइए २ मोहरिए ३ संजुत्ताहिगरणे ४ उवभोगपरिभोगइरित्ते ५ तयाणंतरं चणं सामाइयस्स समणोवासए

पं० पांचमीतीचार अ० अतीचारजाणवा

जा० जाणवा श्रावकनइ

न० समाचरवा नही आदरवा नहीं तं० तेकहइछइ

म० मनोदुःप्रणिधान सामाइक लेइ मनमांहि पाडुवो ची तवइ घरना कांम चीतवे त्यावीरमेरो १

व० वचनदुःप्रणिधान सामाइकमांहि सावद्य वचन बोलइ २

का० कायदुःप्रणिधान सामाइक कायामांहि प्रवरतावइ अणपूज आसे वइ ३

णं पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं मणदुप्पणिहाणे १ वयदुप्पणिहाणे २ कायदुप्पणिहाणे ३

सा० सामाइक मांहि साति नकी धी नि द्रादिक प्रमाद स्मृतिवणइ करइ सामाइक ४

सा० अनवस्थीतकरण सामाइक लेइनइ अणपुरो एपाविदि नीउतावलइ पारइ तिअसक्ति तसामाइक करी मुन निवर्तण इस्पइकीपडानो नीरतिमरावइ निरनीपठइ पारइ॥५॥

न० तिवारइ पछइ

दे० देसावगासिक छठा व्रतनो संक्षेप ते दसमा व्रत सिकहीयइ

स० दसमा व्रतना श्रावणेपासक श्रावकनइ

सामाइयस्स सइअकरणया ४ सामाइयस्स अणवठियस्स करणया ५ तयाणंतरं चणं देसावगासियस्स समणोवासएणं

पं० पांच अइ अतीचार

जा० जाणवा श्रावकनइ

न० समाचरवा नहीं आदरवा नहीं तं० ते कहइछइ

आ० देसावगासीकलाध इस्थकइ अनेरापासइ वस्तु अणावे १

पे० निमंत्रस वणअनेरा पासि पाठवइ २

स० शब्दानु पात पाडे बोलवे करी आपणपु जणावइ कंकारादि ३

रू० उंचो थइ रूपदेखाडइ तेरूपानुप्र

पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं आणवणप्पओगे १ पेसवणप्पओगे २ सद्दाणुवाए ३ रूवाणुवाए

उपासक० ९

योगश्च विकर्पण दोष ४ | व० का करो वृजलकांइ नाखी आपणा आप वइसे वृद्धि पुद्गल प्रक्षेप प्रयोग ५ | त० ते ना वार इपछइ | पो० पुष्यनइ पुष्ट प्रधरइ ते पोषध उपवास अष्टमी चउदसि अमावस्यादिक पर्वकि धइ ते | स० श्रमणोपासक श्रावक नइ | पं० पांच अतीचार | जा० जाणवा पण इ

४ वहियापोगलपक्खेवे ५ तयाणंचे पोसहोववासस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा

न० समाचरवा नहीं आदरवा पण नहीं ते कहइ छइ आगले | अ० अणपडिलेहिया जीव रक्षा नि अर्थे सिज्जा शय्या संथारादिक दृष्टि पडिलेहण नकी धा ते अप्रतिलेखित दुप्रतिलेखित अ० अतीचार लागइ १ | अ० अपमार्जिया ते अप्रमार्जित दुप्रमार्जित पाथर्या नहीं तथा रजोहरणादिक प्रमार्जी नहीं शिय्या अनइ संथारा नो सेवन करइ २

न समायरियव्वा तं जहा अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारे १ अप्पमज्जियदुप्पमज्जियसिज्जासंथारे २

अ० अपडिलेहियाइ ते दृष्टि नही पडिलेहि ते पडि लेहि दुः ठाम ते परठवी ते अप्रतिलेखित डीठा वगर परिवर्जी नीहार पा० पासवण नी मीहर वाना मान ते परठवी पडिलेहि ३ | अ० अणपूंजी का इरखी काइ पसवण भूमिका ठामे परठवइ ४ | पो० पोसहनो पाप वेयाओ नहीं

अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहिए उच्चारपासवणभूमि ३ अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी ४ पोसहोववासस्स

अ० पोसह उपवास की धइ आहार नी वांछा करइ परभाते लाहार मंगावी ते स्पर्शे अनुपालन ना अतीचार ५ | त० ते ना वार इपछइ | आ० यथा संविभाग साधनइ | अ० सु आवक नइ | पं० पांच अतीचार | जा० जाणवा | न० समाय

सम्मं अणणुपालणया ५ तयाणंतरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पंचअइयारा जाणियव्वा न स

स० सचित्त ऊपरि आहार सचित्त वस्तु आदि वा नही | स० सुझती वस्तु सचित्त सुं ढांकी दीइ | का० भोजन वेला अतीक्रमावते साधनइ तेडइ ३ | प० परनो अपदेस आपणी वा नी पुठि अनपान पारकुं छे इम कहइ मत्सरादि करी दान दीयइ ५ | त० तेना वार इपछइ

मायरियव्वा तं सच्चित्तनिक्खेवणया १ सच्चित्तपेहणया २ कालाइक्कमे ३ परववएसे ४ मच्छरियाए ५ तयाणंतरं च णं

अ० छेहला मरण संलेखणा अणसण कीधा ते आराधना सलेखणा नो | ज० जूसणा सेवना आराधना कारण ते इहलोक आवक नइ | प० पांच अतीचार | जा० जाणवा | न० समाचरवा नहीं आदरवा नहीं | इ० ते इहलोक मनुष्यनी आसंसा वांछा प्रधानादिक वांछा न करइ श्रावक

अपच्छिममारणंतियसंलेहणा झूसणाराहणाए पंचअइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तं इहलोगासंसप्पओगे

प० परलोकी इंद्र देवनी पदवीनी वांछा करइ २ | जी० अणसण लीधइ पुजा सत्कार देखी जीववुं वांछे जे हुं घणा जीवुं तो भला घणा थाइ ३ | म० मरणनी आकांक्षा करइ दुःख कष्ट आवइ आवक कर्म ४ | का० मनुष्यना तथा देवता ना काम भोग नी वांछा करइ ५ ए पांच पाप पण आणवा अतीचार ५ | त० तेना वार इपछइ ते

१ परलोगासंसप्पओगे २ जीवियासंसप्पओगे ३ मरणासंसप्पओगे ४ कामभोगासंसप्पओगे ५ तए णं से

आ० आणंद नामइ | गा० गाथापति | स० श्रमण तपस्वी भगवंत श्री महावीर अं० समीपइ सर्व विचार सांभली सांभलीनइ | अं० समीपइ पंच अणुव्रत नाम तथा नाम्ही | स० सात सिक्षाव्रत सर्व पडइ नइ | दु० बार प्रकार | सा० श्रावक नो ध० धर्म पडिगी कार करइ एह वुं श्रावक नो धर्म पडी जीवनइ

आणंदे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ

स० श्रमण तपस्वी भगवंत श्री महावीर देवनइ आणंद नामा गाथापति | वं० वांदइ | न० नमस्कार करइ | ए० इम वचन बोल्यो आणंद गाथापति | नो० नहीं खलु निश्चइ मो० मुझनइ भं० हे भगवन् कल्पइ | अ० आजीथी इपछइ | अ० अन्यतीर्थी ना साधु शुद्ध शाक्यादिक जोगी संन्यासी अन्यलीगी ना साधु अ० अन्यतीर्थी या संबंधीय देवजी

समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी नो खलु मे भंते कप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नउत्थिया वा अन्नउत्थिय

जीन तीर्थंकर टाली हरिहरादि दे० देवता | अ० अन्यतीर्थीयइ आपणा करी मान्या तीर्थंकरनी प्रतिमा जिन सासन करी सामान्य एह थी जिन प्रतिमा ते हवि एतलइ आरंभी चैत साधु साधुनइ भगवाने आपी उतारइ अपमानी ते ... वांदिवा नमस्कार करवु धर्मनी मतइं न कल्पइ ॥ | वं० वांदेवा

देवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाइं वा वंदित्तए वा

न० नमस्कार करवी धर्मनी स न कल्पइ | पु० पहिलां मीथ्यात्वनो संभाषण बोलावइ तेनइ कल्पइ | आ० तिणइ बोलाव्या वइ बोलावइ वो | स० संलापणा २ संलापण | ते० ते मीथ्यात्वीनइ धर्मनी मतइ करनइ यथीत ली अन्न असन आदि कपालीखादिम सादिम मुखवास | दा० देवु नही थोडी वार इ तथा अ० वार २ देवु नही धर्मनी बुधइ करी इ

नमंसित्तए वा पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा तेसिं असणं वा ४ दाउं वा अणुप्पदाउं वा

ण० नन्नत्थ बीजउं | रा० राजादिकनइ आग्रहइ तीव्र ते अइ कार्तिक | अ० आमनी वरइ गणइ गणादिक साधु संघनइ कारणइ गणनइ मुहनी अभियोग विनाइइ | व० बलात्कारइ सबल मनुष्यनइ जोरइ | अ० असन अन्न जाती पा० पानीनी जाति खा० खादिम सुखडीनी जाति सा० सादिम मुखवासनी जाति ... | व० वस्त्र पछेवडी प० पात्र काष्ठ तरी | कं० कांबल पाद प्रोछण पुंछणउ ते जोहरणादिक

णन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं असणंपाणंखाइमंसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपा

दे० देवतादिकनइ आदिकनइ परिवसी पालीयइ तिहां गु० गुरु मातापितादिकनइ आग्रहइ तथा वेस साधनइ उपसर्ग नइ कामइ | वि० वृत्ति कांतार अटवी दुर्भिक्षादिक कारण इइ | क० हिवे मोक्षार्थइ ए वा नइ देवुं कल्पइ इस० श्रमण भगवंत निर्ग्रंथ नइ | फा० फासु एषणीय विहरावी दइ विघ्न करी रहित

देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं कप्पइ मे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं

उपासक० १०

पी० पाटीउ फ० फीउ पाट लु पाटिया उपाश्रय संथारो दरभ तृणादिक १० | उ० उषध रोगनाशकारी भेषजपथ्य धर्मने जोग्य ना द्रव्य | धर्म बुधि साधु प्रतइ प्रतिलाभतो विचरवुं इ० इम करीनइ एहवुं रूप डो अभिग्रह लेवि विचरइ | ... काले पडिकमणो करइ १४ ... न मनोरथ ... १५ ... विसा

अपुछणेणं पीढफलगसिज्जासंथारेणं उसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए त्तिकट्टु इमं एयारूवं

माहमाहणा ... वायवाय काजो ... करइ ... विमाने विमा ... नाम कुमारनइ देहरइ ... करइ ३ ... वक ... सामायिक पडिकमणो ... करइ ... विसामो ... करइ १८ ... करइ १९ सगली जीवउपरहित ... १९ स
गलाजीव उपर ... करइ २० संथारो करइ ... एवं ... तजीनो मारग आराधइ एहवी ... देवानो ... एहवो ...

अ० अभिग्रह लेई नइ विचरइ आणंद श्रावक | प० प्रश्न पुछइ जी वअजीवादिक नेहते ... | अ० अर्थ सांभलीनइ ... आदरीनइ | स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत श्रीमहावीर देवनइ

अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ पसिणाइं पुछइ २ अट्ठाइं आदियति २ समणं भगवं मह

ति० त्रिवार जीमणा थी सांची लेइ त्रिणिवार ... करीवं० वांदइ न० नमस्कार करीनइ | स० समण तपस्वी भ० भगवंत | मा० श्री महा वीर देवना | अं० समीप थकी | इ० इतीपलासए इच्छ्य नामइ चे० चैत्य | प० नीकले नीकलीनइ | जे० जी हां | वा० वाणि यग्रामा

वीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ दूतिपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति २ जेणेव वाणिय

न० नगर छइ | जे० जीहां स० पोता नउ गि० घर छइ | ते० तीहां उ० आव इ आवीनइ | सि० शिवानंदा ना० भार्या स्त्री प्रतइ | ए० इम व० कहइ | ए० इम ख० निश्चइ दे० हे देवानुप्रिय देवता नइ वल्लभ | म० मइ स० श्रमण तप स्वी भ० भगवंत

गामे णयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २ सिवाणंदा भारियं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया मए समणस्स भगवओ

म० श्रीमहा वीरदेवनइ | अं० समी पइ | ध० धर्म जीवदया आदि ... सम्यक् प्रकार सांभल्यो ते विशेषइ धर्म मि बीयइ | इ० ते धर्म मुजनइ इच्छ्यो नगम्यो सार करी जांण्यो | अ० ते धर्म प्रतिइ इच्छ्यो वां० श्री ... | तं० ति णि कारणि मुज नइ ग० जाते नली तुम्हि दे० ते जी ... हे देवानुप्रिय | स० श्रमण तप स्वी भ० भगवंत

महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते से विय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए समणं भग १०

म० श्रीमहा वीरदेवनइ | वं० वांदो जा० जावत् | प० पर्युपासना सेवा भक्ति करउ स० श्रमण तपस्वी | भ० भगवंत म० श्रीम हावीर देवनइ | अं० समी पइ | प० पांच अ णुव्रत | स० सात सिक्षा व्रत | दु० ए बार समकि त मुल बार व्रत

वं महावीरं वंदाहि जाव पज्जुवासाहि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं

गि० गृहस्थ नउ धर्म प० अंगीकार करउ | त० ती वार इ | सा० ते सि० सिवानंदा एहवे नामा ना० स्त्री | आ० आणंद स० श्रमणोपा० पासक श्रावक साधुने सिवक श्रावक ते | ए० इम वुक्त इम कहइ | ह० हर्ष पामी तु० संतोष पामी | को० कोटविक आप णा सेवक पुरुषने

गिहिधम्मं पडिवज्जाहि तते णं सा सिवाणंदा भारिया आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय पुरि

स० तेडावि ते डावीनइ | ए० इम व० क हइ | खि० खिप्र उतावलो भो० अहो इति आमंत्रण दे० हे देवाता नइ वल्लभ | ल० लघुकरण ... नीकरी सहीत ... जोतरी नइ धर्मिया ... जा० यावत् प० पर्युपासना सेवा करती हवइ वरती इ | सि० सिवानंदा प्रतइ

सा सद्दावेति एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया लहुकरण जाव पज्जुवासति तते णं से समणे भगवं महावीरे सिवाणंदाए

ती० तेहनइ म० मोटी | ध० धर्मकथा क इ धर्मदेसना दि उ | त० तीवार पछइ सा० ते सि० सिवनंदा एहवे नामे ना० नारी स्त्री | स० श्रमण तपस्वी भ० भगवं त म० श्रीमहावीर देवनइ | अं० समीपइ ध० धर्म देशना | सो० सांभलीनइ ह० हर्ष संतोष पांमी जा० यावत्

तीसे य महति धम्मकहा तते णं सा सिवाणंदा भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठा जा

गि० गृहस्थ श्रावक नो ध० ध र्म समकित फल बार व्रत अं गीकार करइ २ वांदीनइ | त० तीम ज व० तेहीज ध० धर्म जान र ... यावत् ... पाछी करी घरे आवइ आवीनइ | जा० जीणइ दीस थकी आवी हंता | ता० तेहिज ते णे ... दिसी पाछ वली आपणा इ घरइ आवी भं० तिवारइ ते भदंत पु ज्य

व गिहिधम्मं पडिवज्जति २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया भंते त्ति भगवं

गो० गौत मस्वामी | स० श्रमण भ० भगवंत म० श्री महावीर देवनी वं० वांदइ | न० नमस्कार करवें | ए० इम व० कहइ | प० प्रभू समर्थ छइ प० ... भं० पूज्य आ० आणंद | स० श्रमणोपा सक श्रावक | दे० हे देवानुप्रीया कुमारइ | अं० समी पइ

गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति एवं वयासी पहू णं भंते आणंदे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतिए

फा० गृहस्था वासमांहिजा० यावत् | प० प्रव्रज्यालिवा समर्थकस्यइ नीवा रद्द अगवंतकहइलइ | नो० निभाए अर्थ समर्थनही | नो० हिंगो तम | आ० आणंद स० श्रमणोपासकश्रावक | व० घणाहू व रसलगइ | स० थो च कनी

उपासक० ११

फडे जाव पज्जुवासए ।।। नो खलु एस अट्ठे समट्ठे । गोयमा आणंदेणं समणोवासएणं वहूइं वासाइं समणो वासग

प० पर्या य | पा० पालीनइ | आ० आ वरस सो० ध र्मलिसो धर्म दे वलोकइ | अ० अरुण नए दे वइ भामइ वि० विमाए नइ विवइ | दे० देवतापणे उ० उपजइपइ | तो० त्री हीए | अ० एकेका दे० देव तानउ आउखो | च० च्या

परियागं पाउणिहितिर जाव सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवताए उववज्जिहिति तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि

र पल्योपम नी ठि० स्थीता | प० कही छइ | त० तिहां आ० आणंद | दे० देवतापणपणि | च० च्यार पल्योपमनी ठि० स्थिति आउखो | प० क हउं | त० तीवारइ पछइ स० समण तपस्वी भ० भगवंत म० श्रीमहावीर देव

पलिओवमाइं ठिइ पन्नत्ता तत्थणं आणंदस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिइ पन्नत्ता ततेणं समणे भगवं महावीरे

अ० अनदा प्रस्ताविइ व० बाहिर जन पद देसमांहि वीहारकरता | जा० जावत वि० विचरइ | त० तीवार पछे से० ते | आ० आणंद स० श्रमणो पासक श्रावक थयो | अ० जाण्या छइ जेणे जीव अजीवादिक नव तत्व ना भेदभार पदार्थ रूप | जा० जावत प० साधु ना [illegible]

अन्नयाकयाइ बहिया जणवय जाव विहरति ततेणं से आणंदे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडि

फा० फासु एषणीय असनादि च तु र्विध आ हार देतो वीचरइ | त० ती वार पछइ सा० ते सि० सिवानंदा ए हव इ नामइ भार्या स्त्री | स० श्रमणो पासिका सुद्ध श्राविका थइ | आ० आवतो द० वाए साधु साध्वी प्रते प्र० [illegible] | त० तिवारइ ते

लाभेमाणे विहरति ततेणं सा सिवानंदा भारिया समणोवासीया जाया जाव पडिलाभेमाणे विहरति ।।। ततेणं तस्स

आ० आ णंद | स० श्रावकना | उ० उतर ध्वंस गुण मोटा सीलव्रतादिक गुण धरता थकां अतीचार रहित | प० पच्चखाण दस विध समाचरता तथा पोसह उपवा सइ करी | आ० आपणो आत्मानि र्मल करतो थको वि चरइ | च० चउ दे

आणंदस्स समणोवासयस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमण पच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चउद्दस

सं० वरस व० अति क्रम्या गयां | प० पनरमा वरस नइ वि च्चइ प्रवर्त्ततां थका एकवइ समइ | अं० आंतरइ आ वइ थकइ | अ० अनदा क० प्रस्तावइ | पु० मध्यरात्रिना स० स मयनइ विषइ | ध० धर्मजाग रिका धर्म सं

संवच्छराइं वइक्कंताइं पन्नरसमस्स संवच्छरस्स अंतरावट्टमाणस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजा

वंधी मनोरथ चिंतव तो थको एतला दिवस कुटंब पलित | इ० ए द वो अ ताइ सयए | अ० अध्यवसाय वा छा मन मांहि चींतनरूप तेस० संक ल्प पएइ वइ उपनइ | ए० इम खल० निश्चे | अ० हुंवा० वाणिज्यग्रामनइ वइ नामा नगरनइ विषइ | व० घणा णं इति वाक्या लंकार | इ० द्रव्य ना ध णी वि व हारी याजा० यावत

गरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं वाणियगामे णयरे बहूणं ईसर जाव सय

स० आपणी जाती स्वजन प रवार तथा | कु० कुटंब मांहि अनेराइ नगरवासी लोक मांहि आधार भूत छइ केरको सो एक छइ ते कहि छे तं० तेहना काम मांहि ए० एतो विखे पइ ।। | अ० हु नो० न ही स० बलवंत धर्म कर वाने | स० श्रमण न० भग वंत | म० श्रीमहावीर देव नइ | अं० समापि ध० धर्म प्र० प्ररूपी कहेली नी म करवा आदरी

स्सवियणं कुडुंवस्स जाव आधारे तं एतेणं विक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्म

नइ वा लइ ली पइ | उ० उवसंपद लेइनइ वि० विचरू | तं० ते सेसं० श्रेय ख० निश्चइ म० म नइ क० प्रभा ते कुल घ कर स्य उगइ जा० यावत् ज० ज्वाल्य ल मान उगइ थकइ | वि० विस्तीर्ण अ० असन तेते अनपाली स्वादिम स० वनीसादिम पुष्पवास | ज० जीम पु० पुरण तापस तापस मार्ग अधिकार जाणवो | जा० यावत् जे० जेठा पुत्र नें

पन्नत्ति उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ जहा पुरणो जाव जेठ

कु० कुटंब नइ भार इ ठा० ठापउ वा थानइ | ते० तेमित्र स्थानीये जेष्ठा वडा पुत्रनइ | आ० पुछइ पुछीनइ | को० कोल्लाग पासइ जे पुर छइ वो तानो ते तनइ विषइ | णा० ज्ञाती सगा लोक सगा कुल छइ | पो० पोषधसाला उपाश्रय प० पडिलेह पडिलेहीनइ | स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत

पुत्तं कुडुंवे ठावेता तं मितं जेठपुत्तं च आपुच्छित्ता कोल्लाए संन्निवेसे णायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगव

म० श्रीमहावी रदेवनइ | अं० समीपइ ध० धर्म अंगीकार करवो उ इ आदरवो छइ | उ० श्रावक नी पर तेमा पडु० ते हधर्म करी वरइ अतीचार रहित पालतो वि० विचरइ छइ | ए० इम मन नइ विचइ विचार वि चारीनइ | क० प्रभाती वि० विस्तिर्ण असनादि क तइ तीम जि० जीमाडीनइ घण उ सत्कार सनमान देइनइ | तं० तेमि त्र सगा नइ

ओ महावीरस्स अंतियं धम्मपन्नतिं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए एवं संपेहेइ २ कल्लं विउलं तं देव जिमिय भुत्तरागए तं मित्त

उपासक० १२

जा० यावत् वि० विस्तीर्ण धान स हित जेमा म्या० | पु० फूलफल इकरी वस्त्र इकरी नइ वस्त्राभरणादि नइ स० मलका रस० सनमानादि इ | तं० तेमित्र न्याति पुं० आगल | जे० वडा पुत्र नइ तेडावि तेडावीनइ | ए० इम व० क हइ आणंद श्रावक | ए० इम खलु नि श्चइ पु० हे पुत्र | अ० हुं वा० वाणिय ग्राम नइ विषइ

जाव विउलेणं पुप्फस क्कारेइ सम्माणेति तंसेअमित्त जाव पुरउ जेट्ठ पुत्तं सद्दावेति २ एवं वयासी एवं खलु पुत्ता अहं वाणियग्गा

ब० घणा इं० रा जेस्वर मांहि | जे० जाम वि० अधिकाय लाइ | जा० यावत वि० विवस्य न उप कनु | तं० ते तस्मा अ० श्रय ख० निश्चे इस० मुकन इ इ० दि वइ ४ मनमो आज पडइ मुकन इ | उ० तुम्हे स० आपणा स्व जन तथा कुटुंब नो आदि नी रा खिनुं कामल | थे० कालिव इकार्य उ करीवुं कुटंब मा हि नायक पणइ | आ० अ वनहा नो छइ म्या च्यो वनो क

मे बहूणं ईसर जहा चितियं जाव विहरित्तए तंसेय खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुंबस्स आलावणस्स लवत्ताजा

रा जा० यावत् वि० श्रम क इत अलिवरे | तं० तिवारि पछेत से० ते जे० वडा पु० पुत्र नइ | आ० आणंद ए० इत वइ नाम इ स० समणो वा० वासग श्रावक नइ तं० तइत प्रमाण वचन क | र० इ पुत्र ए० तव उत्तर दइ | वि० विनइ इय पुर्वक पु० सांभलइ सांभलीनइ | त० तीवार इ पछइ से० ते आ० आणंद ए० इइ नाम इ स० श्रमणोपासक

व विहरित्तए तएणंसे जेट्ठ पुत्ते आणंदस्स समणो वासगस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति ततेणंसे आणंदे समणो

वा० श्रावक वार व्रतनो धरणहार | त० तिवार इ प छइ मि० मि त्रैत नइ | उ० आ न लिजि० वडी पुत्र कुटंब नइ छा० मारइ ताव्या वोदीन इ आणंद नामा गाथा पती | ए० इम व० क हइ आणंद नामा श्रावक | मा० रखि दे वा नुप्रि य अ० तुम्हे | अ० आजे पछीको इ मा हरो पुत्र आजथकी ए छ | म० माहरो व० घणी

वास ए तम्मित्त जाव पुरउ जेट्ठ पुत्तं कुडुंबे ठावेति २ एवं वयासी माणं देवाणुप्पिया तुब्भे अज्जप्पभिइं केति ममं बहुसु कज्जे

क० कार्य नइ विष इ | आ० पुछीवउ अथवा माद इ अर्थइ | पु० छिवउ वि० वा र बइ करी नइ वार र पुछीवउ | म० घणी मा हरइ अर्थइ | अ० आसन पाणवादि म र वादि मध | उ० रंधस्यो जो नी वआवी जो उ० घणा अनादि कसर करी क० करि जो ते काइ न पुछीवउ जे० जे उत्सव तेहनु अनइ मित्र ना० नाती | आ० पुछी नइ

कज्जेसु य आपुच्छिउवा पडिपुच्छिउवा ममं अट्ठाए असणंवा ४ उवक्खडेउवा उवकरेउवा जेट्ठ पुत्तं मित्त नाइ | आपुच्छ

त० तीवार पछइ से० ते आ० आणं द पछव इ | नाम इस० श्रमणो पासक श्राव कवा र व्रतनो धरणहार | स० आपणा गि० घर थकी प० नीसरइ नीसरी नइ | वा० वाणिक ग्रा० ग्राम नाम नगर करन होतन गर जाणवा | म० मांहि मांहि थइ नइ नी सरइ नीसरीनइ | जे० जीहां को को ला ग स

ति ततेणंसे आणंदे समणो वासए सयाउ गिहाउ पडिनिक्खमति २ वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव को

नं० विस पुरना रछइ गामडउ | जे० जीहां कि० लि आ नि स० सगाना य र छइ आणंद नो | जे० जीहां पो० पोषध सा० साला छइ | ते० तीहां आणंद नामा गाथापती श्रावइ आवीनें पोषधसालामइ विषइ पो० तेपोषधसाला | प० प्रमार्जइ पुंजइ पुंजे इ पुंजी नइ पछइ उ० च मानी तपास० लघु | नीत नीत नी कां

ल्लाए सन्निवेसे जेणेव नाय कुले जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ उच्चार पासवण भूमि

प० इ० आणंद नामा श्रावक पडिलेह पडिलेही नइ | द० दाभ नइ संथारइ संथारो थापइ पाथ रीनइ आणंद | द० दाभना संथारा नइ विषइ इस० बेसइ बेसीनइ पछइ ते | पो० पोषध सालाइ | पो० पोसह सहित थ कनु | द० दाभना संथारा उपरि बइसव इ सी नइ | स० श्रमणं भ० भग वंत श्रीमहावी र देवनइ | अं० समी पइ

पडिलेहेइ २ दब्भसंथारं संथरइ दब्भसंथारयं दुरुहइ पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ अंति

ध० धर्म पा मीछइ | उ० ते धर्मसंबंधी उवसंप० आंगीकार करतउ थ कउ वि० वि चरइ | त० तीवारइ छइ से० ते आ० आणंद ए० इ छइ नाम इ स० श्रमणोपासक श्रावक | प० प्रथम उ० श्रावकनी पडिम त मा० अंगीकार करइ करीनइ वि० विचरइ सकइ आणंद | प० प्रथम श्रा वकनी प० प्रतम | आ० जी म सूत्र मां हि छि

यं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ततेणंसे आणंदे समणो वासए पढमं उवासग पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ २ पढमं उवा आल

थ कही तिम सम्यक प्रकार इ का० काया इ फा० फरस इ पालइ जा० जावत | आ० आराधइ श्रावकनी इग्यारइ प्रतमा कुइ पहिली प्रतमा इ समकी तपालइ एक मास लगइ आवआराधइ | ती० तीवारइ पछइ आ० आणंद स० श्रमणोपासक श्रावक बार व्रतनो धरणहार | दो० बीजी प्रतमा श्रावकनी पाछी वा ते व्रत फ डारा थइ ए० इम त० त्रीजी प्रतमा नी नमा मलाइ समाइ पडिक मणो करइ

मासिय सम्मं काएणं फासइ जाव आराहेइ ततेणंसे आणंदे समणो वासए दोच्चं उवासग पडिमं एवं तच्चं

च० चउथी प्रतमा चार मा सलगइ मासमां छ छ पो सा करइ आणंद श्रावक | पं० पांचमी प्रतमा पांच मासनी पोसा दिन रात्रिका य सग्ग स्नान करइ इ रात्री जीजन टालइ क छोगन वालइ धदिवस मा ब्रह्मचारी प रात नो परमाण छ एतला बोल करइ आणंद श्रावक | छ० छठी प्रतमा छ मासनी सदा ब्रह्मचारी छ पछली सर्व पालइ पाछला छ बो लकहणा | स० सातमी प्र० प्रतमा सात मासनी चित नी सागसथा आणंद श्रावक प्रथम वारे व्रत आदइ सान ती वारइ आकास नो पाली मो कलु राध्यु कली छि अने पछइ प्रतिमा आ दरी तिवारइ उन्हा धोवण पाणी वइ

चउत्थं ४ पंचमं ५ छट्ठं ६ सत्तमं ७

८ आ० आठमी प्र० आठ मासनी पोतइ आरंभ करइ नही आणंद नामा गाथापती ए आठ मी प्रतमा ९ न० नवमी प्रतमा नवमासनी पोतइ आरंभ करइ नही ए नवमी प्रतमा करी आगे दसमी कहइ छइ ० द० दसमी प्रतमा दस मासनी परमुंड कराव इसि खाए छ थवी तानी मत इ आलस की धुं ते नो थइ नहीं दो | आठ मासनी आगलि ११ मी प्रतिमा कहइ छइ ते आगलि वइ

सा आ कला ति वार इ मुलगा व्रत इम प्रतन त्रण इ इ जे मलो कांकाना पाली आ का रा वाणी मोकल्यं उन्हुं पोली धण मील इ ते छ छ वत्रु ए सात सातमी प्रतिमा आगे आठमी वालासी:॥

अट्ठमं ८ नवमं ९ दसमं १० | यजमानी आहइ आणंद ते कहइ जाणइ नही ते कहइ न जाणुं १०

१२

एइ इग्यारमी इग्यारमास नी पुरवली परइ सर्व साध्य परइ आलोच मस्तक नइ लोच करावइ आणंद नामा गाथापती अथवा मस्तक ... अतिपुस्तक ... रजोहरण ... एकरउ एकारमी उ० श्रावक नी इग्यार प्रतिमा ... पांचे आणंद नामा गाथापतीना ... श्रावकनी ... ॥ आ० यथा आचार

एकारसमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ एकारसमं उवासगपडिमइ आहासुत्तं ——— आहाकप्पं

अन्यथा मारग तुलं घइ मही | अ० यथा सत्य | सं० सम्यक प्रकारे का० पइ सरीरे फा० फरसीनइ | पा० पालिन इ समकइ कारइ | सो० अति चारहा लीनइ | ती० पुरी पइ पाली ... | कि० करण दार ... | आ० सम्यक प्रकारइ ... | आ० तिर्थंकर नी आज्ञा ... आ० ...

आहामग्गं आहातच्चं सम्मं काएणं फासिता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अ

पालीनइ आणंद नामा गाथापती श्रावक इग्यारमी ... गा० ... आराधइ ॥ | त० तीवारइ प० ... | आ० आणंद एहवइ नामइ स० समणोपासक श्रावक ... एहवइ ... | उ० उदार स्थापर ... | वि० वी ... | प० प्रयत्नइ करी ...

एणुपालित्ता भवइ ॥ तते णं से आणंदे समणोवासए इमेणं एया रूवेणं उरालेणं विउलेणं पयते णं

प० ... | त० तपकर्म इ करी ... | सा० सा० ... | ध० धमणी ... आणंद ... | त० तीवारइ ... | आ० आणंद एहवे नामइ स० श्रमणो पासक श्रावक | अ० अन्यदा ... विषइ आवत

पग्गहिएणं तवोकम्मेणं सुक्के जाव किसे धमणिसंतए जाए तते णं तस्स आणंदस्स स० अन्नयाइ कयाइ

पु० पहिली मध्यरात्रीना काल नइ | स० समय न इ विषइ | ध० धर्म जागरिका धर्म नी चीं ताकरइ | जा० धर्म ध्यान मे जागइ | अ० एहवउ ... अध्यवसाय ... | ए० एणइ प्रकारइ ... | जा० यावत ध० ध... सरी ...

पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ४ एवं खलु अहं इमेणं जाव धमणि संत

... | उ० उ० ज्ञानादिक | क० कर्म ... संघेण ... वीर्य ... | पु० पुरुषाकार ... | स० श्रद्धा धर्म वासना धृति ... वेग वासना ... | अ० उ० उथानादि

ए जाए तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिइसंवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठा

स० श्रद्धा ... | जा० ... ध० धर्माचार्य गुरु | ध० धर्मना उपदेसक | स० श्रमण भगवंत ... | जा० यावत जि० जिन ... श्री वर्द्धमानस्वामी ... | ता० तीवारइ ... श्रेय | क० प्रभा ... उगइ

णे सद्धाधिइसंवेगे जा व मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे ० जाव जिणे सुहत्थी विहरइ ताव ता मे सेयं कल्लं

... | अ० अपश्चिम छेहु लीमा० मारणांतिक | सं० संलेखणा शरीर ... भ० भात पाणी नउ प० पचखाण करीनइ | का० काल ... आणंद एहवइ नामइ श्रावक ...

जाव जलंते अपच्छिममारणंतिय संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडीयाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स वि

... | ए० ... सं० ... | क० प्र० राति | अ० ... धमा जा० यावत | अ० का० काल ... | त० तीवारइ ... आ० आणंद नामा श्रावक ... | अ० एकदा ...

हरित्तए ॥ एवं संपेहेइ २ कल्लं पाउ० अपच्छिम जाव कालं अणवकंखमाणे विहरइ तते णं तस्स आणंदस्स अन्नया कयाइ

... | सो० ... करीनइ ... आणंद | ले० लेस्या वि० ... करीनइ | त० तिवारइ आवरणीय ... ज्ञाना वरणी कर्मनि | ख० खयोपसम इ ...

सुभेणं अज्झवसाणेणं सोहणेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं

अ० अवधिज्ञान स० उपनउ आणंद नामा श्रावक नइ | पु० पुरव दिसि ... ल० लवण समुद्र ... | पं० पांच सइ जोजन ... | पा० देखइ | ए० ... दिखण दिस ... | प० ... पश्चिम दिस ... देखइ

ओहिणाणे समुप्पन्ने पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पंचजोयणसयाइं खेत्तं जाणइ पासइ एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं

उ० उतर दिस ... | आ० जा० यावत् ... हिमवंत ... | जा० जाणइ ... आणंद | उ० ऊंचो जा० यावत सो० सौधर्म ... देवलोक ... आणंद श्रावक | अ० हेठउ ... रत्नप्रभा ...

उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ अहे जाव इमीसे र

नामइं पकीलीयडइ पर्वतीनइ विषइ | जो० जोलूया न० नरकावासा ल ग इ देषइ व० जिहां चोरासी हजारस्व रस नी आउषानी ठि० स्थितीइ छइ ते नइ करीनइ आणइ पा० दरसनइं करी नइ देषइ आणंदन्नावक जगवंतनो सेवानो कारण जाण ॥१॥ | ते० तेणइ काल इ ते० तेणइ अ समइ | स० श्रमण तपस्वी त० जगवंत नाम श्री म हावीरदेव वीचरंता

यणप्पभाए पुढविए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइ वाससहस्सठिइयं जाणइ पासइ तेणं कालेणं २ समणे ३

गा० ग्रामानु ग्राम वालि य नामा ग्रामनः | स० समो सस्या | प० परखदा वादि वा नी कलीनइ गवंतनें | जा० यावत धर्मदे सना सांजलीनइ परखदा पाछी वली | ते० तेणइ काल इ तेणइ समइ | स० समण तपसी जगवंत श्री महा वीर देवनइ | जि० वडो शिष्य अंतेवासी वनी वसणहार | इं० इंद्रभूति ना० म इं० अणगार साधु

समोसरीए परिसा निग्गया जाव पडिगया तेणं कालेणं २ समणस्स ३ जिठे अंतेवासी इंदभूयं नाम अणं

गो० गोतम गोत्रनो धणी | स० सात हा थ शरीर प्रमाण देह | च० समचउ रस सं स्थान | सं० संस्थित | व० वज्र रिषभ नाराच संघेणनो धणी गोतम नामइं स्वामी जाणवा केहवा छे | क० कनककसवटी इं नि घस्यो सोनानी परइं दीपता मान देह उत्तम कमलसरीखा प० गोरवरण उ० उग्र तपवंत

गारे गोयमगुत्तेणं सत्त उस्सेहे समचउरंस संठाणसंठिए वज्जरिसहनाराय संघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे

दि० दीप्ती वंत | त० तप्त तपवंत घो० मोटो तप वंत जाणवा | म० रौद्र तपवंत | उ० प्रधान तपवंत | घो० घोर ब्रह्मचर्य गुणवंत | घो० घोर तपसी | घो० घोर ब्रह्मचर्य नी लहइ जेहनइ गो तम स्वामी जाण | उ० छेहल्यू स० सरीर छइ | सं० तेज लेस्या | वि० विस्तीर्ण कीध वी छे जाणइ छे

दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे महातवे उराले घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त विउल

प० छट्ठ छट्ठ पारणा करइ | छ० छट्ठ छट्ठ उपवासनें पारणइ | अ० निरंतर एहवा तप करो | त० तपकर्म करइ | स० सत्तर १७ भेदे संजम कहे छे ५ आश्रवाद्दि कने केडी पंचि कलेश ५ विकलेंद्री ४ अजीव संजम ५ वेद संजम ५ थ वेलसंजम १२ पमज्जण संजम १३ परछावणीया संजम १४ मनसंजम १५ वचनसंजम १६ काय संजम १७ ए सत्तर प्रकार रे संजम एहवा जाणइ बार प्रकारे तप अणसण १ आणोदरी तप २ वि

तेयलेसे छठंछठेणं अणिखित्तेणं तवोकम्मेणं संयमेणं तवसा

त्ति संक्षेप तप ३ रसत्याग तप ४ कायाकलेस तप ५ संलीनता तप ६ प्रायछित तप ७ विनय तप ८ वेयावच्च तप ९ सज्झाय तप १० ध्यान तप ११ काउसग तप १२ ए बार प्रकारे तप आत्माने भावता थका आतमा ना साध ना थकां वि० विचरइ छइ ॥ | त० तिवारइ पछइ ते से० ते ज० जगवंत गो तम स्वामीने | छ० छट्ठना पारणानें विषइ | प० पहिली पो० पोरसी नइ विषइ स० सज्झाय करे सूत्र नी गोतम एहवइ नामइ स्वामी

अप्पाणं भावेमाणे विहरंति तते णं से भगवं गोयमे छठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झायं

बी० बीजी पोरसीइ विषइ ध्या० ध्यान करे गोतम | त० त्रीजी पोरसी नइ विषइ गोतम नामे स्वामी | म० उताव लो नहीं | म० अतीचपल नहीं | म० मुखवस्त्रिका मुंह मु हपती प० पडिलेहे | जा० जाजन वस्त्र प्रमुख प० पडिलेहे

९ करेइ बीयाए पोरसीए झाणं झियाइ तयाए पोरसीए अतुरियं मचवलं मसंभंते मुहपत्तियं पडिलेहेइ भायणवत्थाइं प

इ पडीलेहीनइ | जा० पात्राएकठा करी पुंजइ | जा० जाजनपात्रा ए कठा करइ उ० ग्रहइ | जे० जीहां स० श्रम ण तपसी जगवंत श्री महावीर देव छे | ते० तिहां आवइ आवीनइ स० श्रमण जगवंत | वं० वांदइ न० नमस्कार करे | ए० इम बो० बोल्या

डिलेहेइ भायणं पमज्जइ भायणाइं उग्गाहेइ जेणेव समणे ३ तेणेव उवागच्छइ समणं ३ वंदइ नमं सइ एवं वयासी

इं० वांछुं छुं हे जगवान तुम्हारी | अ० आगनाइं हूंती | छ० छट्ठखमण पारणा नइ विषइ वह रवा जाउं | वा० वाणियगामनइ विषइ न० नगरइ | उ० उंचनीच मध्यम कुल नें विषइ | घ० समुदान

इच्छामि णं तेतुं भेहिं अब्भणुणाए समाणे छठक्खमणपारणगंसि वाणियग्गामे नयरे उच्चनियमझिमाइं कुलाइं घरसमुदाण

कोसिष्या | अ० जमीनइ विहरु | अ० तीवारे जगवंत बोल्या जीम सुख उपजे तीम करे हे देवानुप्रिया मा० रखे प० प्रतिबंध मत करो | त० तिवारइ ज० जगवंत | गो० गोतम नाते स्वामीनइ | स० श्रमण जगवंत म हावीर | अ० आग्या दीधइ थकइ स० समण जगवंत मह

स्स भिक्खायरियाए अडित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं करेह तते णं भगवं गोयमे समणेणं ३ अब्भणुणाए समाणे

वीरदेवथी आग्या | अ० समी पथी | हू० दुतीपलास चैत्यथी | प० नीकलें नीक लीनइ | आ० उतावलो नथी प० चपल नथी म० असंभ्रांत रहित | जु० जुसर समान धरती दि० जोतइ ए० ईर्यासुमती प्राणीजीव जो तां थकां

समणस्स ३ अंतियाउ दूइपलासाउ चेइयाउ पडिनिक्खमतिस्सा अतुरियं मचवलं मसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिठिए

तीन हाथ प्रमाण धरती जोवे गोतम नामइ स्वामी | जे० जीहां वा० वाणीयग्रा म नामा न० नगर छइ | ते० तीहां आ वे आवीनइ | वा० वाणि यग्राम ना | मा० न० नगरने विषइ गोतम | उ० उंचा द्रव्य करीनें उ० घरनी० नीचा कुल मध्यम करी रहीत नीचा प० मध्यम समान घर | घ० समुदा

पुरउ इरियं सोहेमाणे जेणेव वाणियग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ वाणियग्गामे नयरे उच्चनीयमझिमाइं कुलाइं घरसमु

उपासकं०
१५

नकी जिहां थि हरइ । अ० प० २६ । त० तीवार इ पछइ भ० भगवंत गो० गोतमस्वामी वा० वाणियग्राम न० नगर नइ विषइ । जा० यावत गोतमस्वामी अ० च मतां थकां । अ० जथापर्याप्त भ० भात पाणी ल्पीती तरइ लेइ नइ

दूइपलासाओ चेइयाओ अडइ तते णं से भगवं गोयमे वाणियग्रामे नयरे जाव अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं पडिगाहे
वा० वाणियग्राम न० नगर थकी । प० नीकलै नीकलीनइ । को० कोल्लाग सनीवेस थकी । अ० अतीवेगला नथी अतीन जी कपणनही । वी० जातां थकां ब० घणा ज० लोकनो स० सब्द नि० सांजलै सांजलीनइ । ब० घणा

तिर वाणियगामाउ पडिनिगच्छइ २ कोल्लागसंनिवेसस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ बहुजणे
लोक मांहोमांहि । ए० इम मा० कहइ । ए० इम जा० जणावइ । ए० इम प० परूपइ । ए० इम प० विशेषइ परूपइ । ए० इम ख० निश्चै दे० अहो देवानुप्रीया । स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत म० श्री महावीरदेवनो

अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४ एवं भासंति एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया समणस्स भगवउ महावी
अं० अंतेवासी सीस कहवंत । अ० आणंद एहवं नामे स० श्रमणोपासक श्रावक बारह व्रत नो धरणहार । पो० पौषधसालानइ विषइ । अ० छेहली जाव यावत । का० काल अणवांछतो थको विचरइ छइ आणंद । त० तीवार पछइ

रस्स अंतेवासी आणंदे नामं समणोवासए पोसहसाला अपच्छिम जाव कालं अणवकंखमाणे विहरइ तए णं
त० तेह गो० गोतमइ । ब० घणा जन लोकनै अ० समीपइ । अं० ए० अर्थ सो० सांजली नि० हियै धारीनइ । अ० एतादृश वा० एहवी । अ० मनमांहि एहवी इच्छा उपनी । तं० तिहां जाउं । आ० आणंद । स० समणो

तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४ तं गच्छामि णं आणंदं समणो
पा० पासं कआव क । पा० देखुं । ए० इम सं० विचारइ विचारीनइ । जे० जीहांकी को० कोल्लाक सनिवेस छे । जे० जीहां आ० आणंद एहवेनामे स० श्रमणोपासक श्रावक बारह व्रतनो धरणहार छइ । जे० जीहां पो० पोषध सालाछइ । ते० तीहां आवे आवीनइ । त० तीवार पछइ

वासयं पासामि एवं संपेहेइ २ जेणेव कोल्लाए संनिवेसे जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ तते णं १५

से० ते आ० आणंद नामा स० समणोपासक श्रावक वरतनो धरणहार । भ० भगवंत गो० गोतम नइ । ए० आवता थका । पा० देखइ देखीनइ । ह० हर्ष तुष्ट संतोष पा० म्या जा० यावत हि० हियानइ विषइ । भ० भगवंत गो० गोतम नइ । वं० वांदइ । न० नमस्कार करीनइ । ए० इम व० कहइ

से आणंदे समणोवासए भयवं गोयमं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठ जाव हियए भयवं गोयमं वंदति नमंसति एवं वयासी
ए० इम ख० निश्चै भं० हे भगवान । अ० हुं इ० इण उ० उदार प्रधान तपइ करी । जा० यावत ध० धमणी सरिषो क्रस दुबलो । नो० नहि स० समर्थ । दे० तेहनी तुम्ह समीपइ नथी आवी सकै नो दे० नू प्रियइ । अ० समीपइ उवत्तुमाराच रणकमलनइ समीपइ । ति० त्रिणवार

एवं खलु भंते अहं इमेणं उरालेणं तवेणं जाव धमणिसंतए जाए नो संचाएमि देवाणुप्पियस्स अंतियं पाउब्भवित्ताणं तिक्खुत्तो
मु० मस्तकै करीनइ पा० पगनु म्हारा अ० इम नइ वांदू हे भगवान । तु० ते माणीतुम्हे भं० भदंत नइ पुस्थाइ इछाकार । अ० अनुग्रह करी । इ० उरला पधारो वेगि नि०श्चि । म । ति० तीनवार म० मस्तकइ करी । पा० तुमारा पग वं० वांदस्यु । न० नमस्कार करुं

मुद्धाणेणं पाए अभिवंदित्तए तुब्भे णं भंते इच्छाकारेणं अणभिओगेणं इओ चेव एह जेणं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वंदामि नमंसा
त० तीवार पछइ से० ते भ० भगवंत गो० गोतम नामइ स्वामी । जे० जीहां आ० आणंद ए एहवे नामे स० श्रमणोपासक श्रावक । ते० तीहां आवइ आवीनइ । त० तीवार पछइ आ० आणंद नामा स० श्रमणोपासक श्रावक । भ० भगवंत गो० गोतम ना त्रिकरणसुध म० मस्तकइ करी गोतम नामइ स्वामीना

मि तते णं से भगवं गोयमे जेणेव आणंदे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ तते णं आणंदे समणोवासए भगवउ तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं
पा० पग मस्तकइ करी वं० वांदइ न० नमस्कार करे । ए० इम व० कहइ । अ० छइ भं० हे भगवान गृहस्थ गि० गृही श्रावक गृहवास व० वसतां थकां नइ । उ० अवधिज्ञान स० उपजइ । ह० तिवारइ गोतमस्वामी कहइ हा छे उपजइ छइ । ज० जइ भं० हे भगवान गृहस्थ गि० गृहस्थने जा० यावत स० अवधिज्ञान उपजइ उपजतो

पाएसु वंदइ नमंसइ एवं वयासी अत्थि णं भंते गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ हंता अत्थि जइ णं भंते गिहिणो जाव समु
ए० इम ख० निश्चै भं० हे भगवान गृहस्थपणु मुझनइ थयो । गि० गृहवास वसतां थकां नइ । उ० अवधिज्ञान स० उपनो छइ । पु० पुर्वदिसि कांनी ल० लवणसमुद्र मांहि पं० पांच सै जोजन ताइं जा० जाणुं देखुं छु जा० जावत दक्षिणदिसइ लवणसमुद्र मांहि पांच सै जोजन ताइं देखुं छु जाणुं छुं

प्पज्जइ एवं खलु भंते मम वि गिहिणो गिहमज्झावसंतस्स ओहिणाणे समुप्पन्ने पुरच्छिमेणं लवणसमुद्दे पंच जोयणसयाइं

पं० पश्चिम दिसइ लवणसमुद्र पांचसे जोजन खेत्र तांइ देखुं जाणुं छुं उत्तर दिसइ चुलहेमवंत वासधर परवत देखुं छुं उ० नाचा अधर्म देवलोक पर्यंत सा० नीचा रतनप्रभा अस्थ्व जोजन नो एक नरक तो नरक असंख्याता जोजन नी कोडाकोड प्रमाणदि ऊलादिकलोक अधस्ताचो अधोलोक रतनप्रभा नाम

एवं सेवीउ पृथ्वीनो लोलु छु नामइ पाथडो देखुं छुं जाणुं छुं तं० तिवारे नं० भगवंतनो गोतम | आ० आणंद समणो पासक ने | ए० ए० म

उपासक० १६

जाव लोलुयच्चुयं नरयं जाणामि पासामि ‖ तएणं से भगवं से भगवं गोयमे आणंदं समणोवासयं एवं

कहइ | अ० छइ आणंद गृहस्थ नइ जावत अवधिज्ञान सं० उपजइ पिण एतलो मोटो न उपजे इम गौतमे कह्यो निश्चे एह मोटो ते तलइ मां मि टो तउ आलोअवकनइ तिवारि फेर गोतमस्वामी बोल्या | उपजइ आ० आणंद | ए० ए० एवमस्या न कह | अ० आलोय मिच्छामि दुक्कडं वा जाव यावत

वयासी अत्थिणं आणंदा गिहिजाव समुप्पज्जइ नो चेव णं एमहालए णं तं णं आणंदा एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्म

प० प्रायछित्त तो तवकर्म प० पडिवज्ज | त० तीवारइ पछइ से ते आ० आणंद सं० श्रमणोपासक आ० श्रावक भगवंत | गो० गोतमप्रनइ | ए० एम कह० कहइ | अ० छइ नं० स्वामी जिन वचननो सं० छता | त० सा च | त० तत्त | स० सद्भूत

पडिवज्जाहि तएणं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी अत्थिणं भंते जिणवयणे संताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं

अ० यथा वस्थित भावा अ० आलोइ | जा० यावत तपनो प० प्रायछित लीज इ | गो० गोतम स्वामी कह इछइ लोज अर्थस मरण नही जावत | नं० जम जं० छे भगवान पूज्य जे० जीन वचने भगवंत श्रीमहावीर देवनासं० साचा | आ० यावत जावना | नो० नही आ० अ लोइजनही | जा० यावत त० तपप्रायछि

आलोइज्जइ जाव पडिवज्जइ नो इणट्ठे समट्ठे जइणं भंते जिणवयणे संताणं जाव भावाणं नो आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं नो पडिव

मन कर वो | तं० ते नतलीताइ वाक्या लेकाए न ली जं० हे भगवान्नसूत्र उ जु म हे इ चे निश्चे ए० ए० स्थानक ह | अ० अ तीयो | जा० यावत प० प्रायछित लो | त० तीवारइ पछइ तं० भगवंत गो० गोतम | आ० आणंद नामा स० श्रमणोपासकनो | ए० ए० एतलो कहइ इ त कहे सं० संकाउपनी मनमे

ज्जइ तं णं भंते तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव पडिवज्जह तएणं से भगवं गोयमे आणंदेणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए

क० कं खा | वि० वितीगछादि क सं० धाम्या | आ० आणंद नामा स० श्रमणो पासक श्रावक नावासाथी | अ० समीपथी प० नीकले नीकलीने | जे० जीहां दुइपलास चैत्य नइ जिहा नामइ व० च | जे० जीहां स० श्रमण तप स्वी भ० भगवंत श्रीमहावीर देव

कंखिए वितिगिच्छसमावन्ने आणंदस्स समणोवासयस्स अंतियाओ पडिनि० जेणेव दूइपलासे चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे

१६

ते० तिहां आवइ | स० श्रमण भगवंत नइ | अ० अती दूर नहीन जीक नथी गमनागमन कहइ तां इरियावहि पडिकमइ जा० यावत त० तिवारइ वार नासरखं कहइ गोतम स्वामी | ए० एम कहतो अ० फ० अ० आलोयइ न० निकट पा० पाली प० दिवाडे दि बाडीनइ

तेणेव उवागच्छइ २ समणस्स २ अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ २ एसणमणेसणं आलोएइ भत्तपाणं पडिदंसेइ २

स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत श्रीमहावीर देव वं० वांदइ न० नमस्कार करे गोतम नामि स्वामी | ए० इम स्वा० निश्चे भं० हे भगवंत पूज्य अ० तुम्हे कुमारी | अ० अम्हपा लेइ विद्वागयो अनुज्ञा मइ सं० सरव वात कहइ जा० यावत त० तिवारइ वार नासर कहइ | गोतम स्वामी | सं० संकापामीकवी ए० वीतिगि छा समा वली | आ० आणं द श्राव क

समणं भगवं० वंदइ नमंसइ एवं वयासी एवं खलु भंते अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव तएणं अहं संकिए ३ आणंदस्स

मा स० समीपथी प० उं नीकलउ नीकलीनइ | जे० जिहां तुम्हे तिहां | क० कुंडआव लोआ मो | तं० ते कहो भं० भगवान पूज्य | कि० किम अ० आणंद नामा स० श्रमणोपासक श्रावक | त० तेह० स्थानक | अ० आलोवइ | जा० जावत प० किंवा

सम० अंतियाओ पडिनि० जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए तं णं भंते किं आणंदेणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं जाव प

उं ते ह स्थानक आलोव इ ते कहो अथवा म० मु झने भं० हे भगवान पूज्य | गो० तिवारइ स्वामी बोल्या गोतम नामा लेइ ते हेतु भगवंत कहइ इ छइ गो० गोतम प्रतइ | ए० इम व० बो ल्या भगवंत | गो० हे गोतम तु० मे चे० निश्चे | त० तेह स्थानक | अ० अ लोवो | जा० यावत प० प्रा यछित लो

डिवज्जेयव्वं उदाहु मए गोयमाइ समणे भगवं गोयमं एवं वयासी गोयमा तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि

आ० आणंद स० श्रमणो पा० पासक श्रावक नइ | ए० ए अर्थ खा० खमावो | त० तिवारइ से ते भगवंत गो० गोतम कहइ यकइ | स० श्रमण भगवंत ना वचन त० तहत्त ए० एक वचन | वि० विनय सुं प० सांभ लेइ सांभलीनइ | त० ते ह स्थानक आ० आलोवे

आणंदे य समणोवासए एयमट्ठं खामेहि तएणं से भगवं गोयमे समणस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ तस्स ठाणस्स आलोए

जा० यावत प० प्रा यछित ल्या | आ० आणंद स० श्रमणोपासक श्रावक नइ ए० ए अर्थ विनय सुं खं० खमावइ | त० तेह स० श्रमण भ० गवंत श्रीमहावीर देवनो | अ० एकदा प्र० स्तावेन ब० बाहिर वि० विहार करइ | ज० जनपद देस नइ विषे विहार करता थका

इ जाव पडिवज्जइ आणंदं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ २ तएणं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ

[library stamp, partly legible]

तं० तिवारइ पछेसे० ते आ० आणं
दआवकमतेवासक आ
वकव० धम्म | सि० सीलव्रत
नादी धर्म ने | जा० यावत् अ० आपणा आ
त्मानइ भा० भावतां थका | वी० वीस वरस तांइ स० श्रम
णो पासक श्रावकनी | प० पर्याय पुरो आउ खो
पा० पालीनइ

उपासक० १७

ततेणंसे आणंदे समणोवासए बहूहिं सिलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावित्ता वीसं वासायं समणोवासग परियागं पाउणित्ता

ए० इग्यारइ श्रमणोपासक श्रा
वकनी व० प्रतिमा तेणी परइं | स० सम्यक प्रकारइ का
० काया करी नइ फा० फ
रसीनइ पालीनइ | मा० एक मासनी स०
संलेखणा करी पछइ | अ० आपणी आत्मा
क० कृश करी स० सा
ठ० साठ भक्त | अ० अणसण छे०
छेदीछइ | आ० आ
लोइ

एक्कारसय उवासगपडिमाउ सम्मं काएणं फासित्ता मासीयाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदइत्ता आलोइ

प० पडिकमीछइ स०
समाधि पामीनइ | का० कालनइ अवस
र कालकरीनइ | सो० सोधर्म देवलोकइ सो०
सोधर्मावतंसक | म० महाविमा
नइ | उ० उत्तर पूर्व
इशाने कुणा
इ विषइ | अ० अरु
णाभे वि

यपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणाभे वि

मा० नइ विषइ दे०
देवतापणइ | उ० ऊ
पनो | त० तिहां आइगणा एक विमानइ
विषइ केतलाएक देवतानी थाती | च० च्यार पल्योपम नी आ
उखानी स्थिती कही | प० प | त० तिहां आणंद नामा दे
वतानी पणि कही छइ श्री | च० च्यार
पल्योप

माणे देवत्ताए उववन्ने तत्थणं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिउवमाइं ठिइं पन्नत्ता तत्थणं आणंदस्स विदेवस्स चत्तारि

म० आउखानी
स्थिती | प० परूपी
भगवंते | आ० आणंद नामा देवता भं० हे भगवं
न देवतापणउ पालीनइ देवलोक थकी | आ० आउखो
क्षय करीनइ | भ० भवक्षय
करीनइ | ठि० स्थिति
क्षय करीनइ | अ० अंतर रहित
च० चवनइ

लिउवमाइं ठिइ पन्नत्ता आणंदेणंभंते देवे ताउ देवलोयाउ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं २१

क० किहां जासें | क० किहां उपजसे
गो० हे गौतम | म० महाविदेह
क्षेत्रने विषइ | सि० सिझसें | बु० बुझसे | मु० मूका
वसें | प० कर्मकि क्षमां नवते
टाल बाध की आसंत
ताहि इसइ

चइत्ता कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिति गो० महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाइहिति

स० सकल दुख सरीर मान
सना तेहनुं अंत करी
अनंत नाहीं सुखसें | ए० इम खलु नि
श्चे जं० हे जंबू | स० श्रमण तपसी भ० भगवंत
तश्री महावीर देव | आ० आद्य आकरण लातित्थ
प्रवरतावणहार जा० यावत
न संपुर्ण ने विषि आसले सी | स० सातमा अंग उपासकद
शानो प० प्रथम अध्ययननो
ए० अर्थ कह्यो प० परूपणा

५ जावसंपत्ते
णं ४

सव्वदुक्खाणं मंतं करिहिति एवं खलु जंबु समणेणं भगवया महावीरेणं आदिकरेणं तित्थकरेणं सत्तमस्स अंगस्स उवा

प० प्रथम अध्येन आणंद नामा गाथापतीनो संपूर्ण इती श्री सुधर्मास्वामी जंबू प्रतइ कहइ छे जंबू जिम
इं श्रीमहावीर देवइ कह्यो तिम कहुं छु जे प्रतेक पहेलो श्रावकी मनरथ श्री नउ था कहतो पहलो आणंद नो
कलाअंतरहित वीजो अध्येन कामदेवना गाथा था पतीनो कहइ छइ ते कहवा लेछइ॥१॥ | अं० ज
उ | जं० हे जंबू
सां० भगव
भ्रमण | तवसी भ० भगवंत म०
श्रीमहावीर देवइ

सगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते अपढमं अज्झयणं सम्मत्तं १ जइणं भंतेसमणेणं भगवया महावीरे

जा० यावत् सं० मो
क्षनें विषे प्राप्त
हुआ तेणइ | स० सा
तमा | अं० अं
गना | उ० उपासक
दशानां | प० प
हला | अ० अध्ये
नना | अ० अर्थ कह्यो
छे प० परूप्यो | दो० दुजा अध्ययननो
अर्थ कह्यो भं० हे
भगवंत प्रभु | अ० अध्येनना
के० कुणअर्थ

णं जावसंपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्सणंभंते अज्झयणस्स के

प० कह्या | ए० इम खलु नि
श्चे जं० हे जंबू | ते० तीणकाल
चउथा आरा
नइ विषइ | ते० तीणसमे
भगवंत ज
यवंत | चं० चंपा एह
वी नामे नगरी | हो० हुं
ती | रि० भवनादिककरी सहीत तत बहु निरुपद्रव जयकारी नगर
हितसं० धनधान्यमध्यमादिक हइ प० हर्षित ज० जनलोकने
जोक जनगरना वणजार तथा जन पद देस नालोक ब

अट्ठे पन्नत्ते एवंखलुजंबु तेणंकालेणं तेणंसमएणं चंपानामंनयरी होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धा पमुइयजणजाणवया

रबचे
न छ
इ | आ० जोइ आयाथका
हरबइ | ति० ते च० चंपा नामा
न नगरी नइ विषइ | ब० बा
हिर | उ० उत्तर दिशि नइ पुर्व दिशि ते
ईशान विभाग दिशालइ एत
वइ इशानकुणइ नइविषइ | पु० पुन्नभद्र एहवे नामे चे०
चैत्य बागकोई कुतो पण
कइवे एक छइ | वि० घणा
जना मनो
छइ

।।।।। आइण्णजणमणुस्साति सेणंचंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए पुन्नभद्दे नामं चेइए होत्था विराइए

पु० पुरवइ जे पुन्य कुवाते एह पु० नाको
जे एह आराधिवा जोग प्रसिधना जे नीज
गमांहि पहइछइ पो० पोराणीछे स० सहीत | स० सहीत घणा सहित वखाणा सह्याछइ
कि० विख्यात छइ कि० वली कावलछइ जि०
जीनसइ नामा राजा पय नो कारण कार ते | का० कांमदेव एहवइ नामे गाथापती
प० वसइ छइ र० छइ छइ अ०
कुधवंतो छइ | दि० धन
वंत दि
पतो | जा० यावत अ०
कोइ परा नवी
न सकइ

उच्छुरिस पन्नत्ते पोराणे सहिए वित्तिए कित्तिए णाए जियसत्तू राया कामदेवे नामं गाहावइ परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरि

ज० जहा एहवी नामे भार्या | छ० छ हिरण्य कोडि निधान न्यस्त गतलइ धरतीमाहि दाट्या छइ | छ० छ हिरण्यनी कोडि वृद्धि प्रामलइ | छ० छ हिरण्यनी कोडि ए घरवाखर वर्ते कस्यइ इति प्रभुख | छ छ व्र

तए भद्दा भारिया छ हिरण्णकोडिओ निहाणपउत्ताओ छ हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ छ हिरण्णकोडिओ पवित्थरपउत्ताओ छव्व

जाव दसहजार गाइं एक व्रज एहवा छ व्रज माहि हजार गाइ | ते० ते काले च० चउथा आरा नइ विषइ ते० ते समइ भगवंत उतव० ते | स० श्रमण भगवंत श्री महावीर देव | पु० पुर्वलाउ पुर्विवीको डा कोडी चालता | गा० एक गामथी विजा गाम आवइ

या दसगोसाहस्सिएणं वएणं तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्ज

स० एतलइ सुखइ करी श्री र कुम्भनावइ तिहां विचरता थका | जा० यावत स० स मोसरया भगवंत | प० नगरीनी परखदा वांदवा आइ | ज० जीम आणंदनामा गाथापती वांदवा गयो तिम कामदेव पण वांदवा नीकल्या | त० तिम श्रावक धर्म सांभलीइ श्रावकनो धर्म प० पडिवज्य समकित मूलबार व्रत अंगीकार कीधा पूर्व

माणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जाव समोसरिए परिसा निग्गया जहा आणंदो तहा निग्गओ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ सो

वक्तव्यता कहवी आणंदनी परे नइ तिकलो तिण वार व्रत अंगीकार कीधा जीनधर्म जयो अविछि पालता थकां वरस अंतीकम्या पर्छ नइ मध्य धर्म जा | गरका जागतां एतला दिन कुटंब चिन्ता कीधी हिव प्रभुतमाव कुलेन नइ मुंको तदिक स्वजन वर्ग तेमीस जीमाडी वस्त्रादिक दइ संतोखी जेष्ठ वडो पुत्र आ पणाइ थानी थापी अनुमती लेइ नइ | मि० मित्र ज्ञाति न्यातीन पु० पुछीनइ | जे० जीहां पो० पोषधसाला छइ

चे वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता मित्तणाइ आपुच्छित्ता जेणेव पोसह

ते० तिहां व० आवे आवी नइ कामदेव नामा गाथापती | ज० जीम आणंद नामा श्रावक धर्मनी संपदा लेइनइ विचरतो जा० यावत | स० श्रमण तपसी भ० भगवंत श्री महावीर देवे | अं० समीपइ धर्म तिम दर्शनप्रति मांडइ उ० अंगीकार लेइनइ वि० सुखइ वि० विचरइ छइ कामदेव नामा गाथापती श्री भगवंत श्री महावीर देवनो श्रावक एहवत नोधरण हार

ला तेणेव उवागच्छइ जहा आणंदे जाव समणस्स भगवओ अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ

त० तीवार पछी ते० ते वाखाव कार तणी त० ते कामदेव नामा गाथापतीए कदा समै | पु० पौषध काल नइ विषइ धर्मजागरका करे छे नीत माघा नइ विषइ पु० प्रथमरात्री नइ समइ अधिरात्र नइ विषइ तीण समै | ए० एक दे० देवता मि० मिथ्याती कुसमा० मायाइ करी मिथ्याती देवता | अ० कामदेव नामा श्रावक नइ पास अ० समीपइ पा० प्रगट थयो पिशाच नो एक मनोरूपकरी प्रगट थयो

तए णं तस्स कामदेवस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छद्दिट्ठी अंतियं पाउब्भूए

१८

स० तीवार पछी से० ते दे० देवता जि० किणो एघ सा नइ विषइ तीत का म देवनामा श्रावक नी ला हे देवता आवे आवीनइ तिहां ए० एक म० मोटो पि० पिसाच ना रूप देवता वि० विकुर्वे करीनइ ते केहवो | त० ते द० | दे० रूपते देवतानरूपी साचरूप केहवा ते कहइ छइ | ए० एतारूप ए० ए वक्तउ एक | व० वर्णवास छइ जे ह वर्ण करणा कयाते हवु छइ

तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ तस्स णं देवस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते

सी० माथु चारवान मडीउ धमीउ धउ कीधुं ते ह्वउं स० सा तउं संठाण इसंसठित छइ एहवउं | सा० शाल नाकण तलइ डीघ्लाना कण पिसल्यास री खा के० केस छइ नासि गा० आसमेत्री कासिगे ते तनी केर के सछइ कवि के स माथइ एहवा का वरा दीपतो कादिल वर्ण | ते० ते वारिपछे दे० दिप्त दीपर मान दीसो ऊस | म० मोटो उ० उष्टिका मोटो माटी रोइ हलि आसरी वो

से सीसं से गोकिलंज संठाण संठियं सालि भसेल्ल सरिसा से केसा कविल तेएणं दिप्पमाणा महल्ल उट्टिया कभल्ल

नि० एहवो नीलाफडे अथवा मोटो माटी रो भाजन वि० ओषण हवो नीलाडे जेह नो एहवो पसनोप पवि कुर्वदि ता | म० घीउ कुदीनी पुछ सरीखा ना वति मारे माहि अणलाग ता कि कल तें डउद र्गनि पु स्त कां त र जल जटिल कें त्रा एह वी पाव छइ | वि० वि० कराय कस्यो छेवि० बीजलैं पजेण्ड देवता | सी० सीस घडी मस्तक नइ घडी त्रिक मी रहो

संठाण संठियं निडालं मुगुंसपुंछं व तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ विगयबीभच्छदंसणाओ सीसघडि विणिग्गयाइं

अ० आंखि लोचन जेहनाहि तस विक्षा मणउ दर्शन दे षतां भयकार छइ मा पतउं घटरूप जेहनइ आकारी नइ डीदिवतांवी हामणी एहवी देवता आंख विकुर वइ इगा | क० कान जेहवा सु० सूपडु खड रूपी वटी वरा कारे इ जे हनाके निछे | वि० विस्तार करछइ विवि नलरूप जेवइ देवता इंदो दर्लसन जेहनइ | उ० उरण हुतिहनापास पुटसरी खी नासिका न | पु० टलेस रीबी चीप

अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं कण्णा जह सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा उरब्भपुडसन्निभा से नासा

टा० नासिकासहतवघण तथा मोटो विलए हवी नासिका तथा चुलीनो जोडउ तिणइं संस्थार इसंस्थित छइ वेइनाक ना फुटक लोटा छइ पु० फुरणा छइ जेहना | घो० घोडाना पु० पुंछ सरी खउं मुछ दाढी नाकि स छइ वणि केहवी | क० कावरा छइ कावरा छइ कावरा विक्रत विलामणा फरस कठोर उ नारोभ वि० विक्रय रूप वि० विस्तार इ दर्शन विलामणउं दासन छइ जेहनी

झुसिरा जमल चुल्ली संठाण संठिया दो वि तस्स नासापुडया घोडयपुंछं व तस्स मंसूइं कविलकविलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं

उ० होठ उंटना जि मा लंबा विर हो ट छइ जेहना | फा० लोहानां कच्यपतेकी खिपरसरीखा जेहना दां त छइ लांब | जि० जिभ जेहवी स० सर्पनी कातरसरीखी छइ तेह निश्चे | वि० विक्रत विलामणी जि का दर्शन छइ माथी | ह० मुकासरी कु मुष हलनइ ठप रि आगसरीखा वांको लांबा छइ हडफ तदाढा चिरीब

उट्ठा उट्टस्स चेव लंबा फालसरिसा से दंता जिब्भा जह सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा हलकुद्दालसंठिया से हणुया

उपासक० १९

ग० गालकेल्हवा कं० कारल्ल जीरो टी कारइ नारी तेहस रीखौजिसी मधमनि वालइ रव० खांड वरण कथा तिनो आकार छइ तेसांत समान कुं० दीर्घ | क० कविलउफ० आर्चा कंवोर॥ | म० मोटीमुं० मादलनइ आसा० आ कारइ तेहना सरीषउ संठस्या धनउष्णाउ छइ | उं० नगरनी ओली ना क० कम कुंजे ह्यउ उरस्थाने विस्तीर्ण सें० तेहे उवे० हि धु छइ आ तीदेवतानी

गल्लंकडिसंठाणं तस्सखंदं कुंडं कविलं फरुसं महल्लमुइंगागारोवमे सेखंधे पुरवरकवाडोवमे से वच्छे

कि० लो ल्हाडिक्षित धम वा नइ मांहीनी कुमुलीकाति हलइ आकार इ कोठि कोठ दी ते धात धम धम वानी नाली तेह वी ले० छेके न० ते ह नइ वा० नत्रा स्थल जे हनी सि० दालिको टवानी एल लइ नी सासरी घा जेहनी जोटी वाटवा नो सं० संस्थित हइ आदाय नी आंगुली छइ विस्तृत वी हमणो छइ | नि० नीसासरी घा सं० संस्थित छइ दो० वेइ ते० तेहना आगला छो लाथ छइ जेहनाई

कोट्ठियासंठाणसंठिया दो वि तस्स बाहा निसापाहाणसंठियाओ दो वि तस्स अग्गहत्था निसालोढसंठाणसंठिया अंगुलीओ

सि० सी पली एकं पासा नासरी बाहा नी आंगुली नानह छइ ते देव ताना एल्हो रा वस | एल्ह० ना वी नालिही घाली वा सरी को ते देवता नो दिरदय छे | दो० वेइ त० तेह नाथ रतन छइ | पो० लोढ़ गालिवा नी कोठि ने आकारि पेट वाट लाउ छइ जेहनो | पा० पाली नी कुंभी

पुलीउ सिप्पिपुडगसंठियासे नखा ण्हावियपसेवउ व्व उरंसि लंबंति दो वि तस्स थणया पोट्टं अयकोट्ठउ व्व वट्टं पाणालं

न० सरीछे से० ते हनी ना० नखी देवतानी | सि० सि का ना सरी मु सं० संस्थान जे हनो नेत्र पड़ी पर वाया मथानी रासडो सरीखु छइ इंडी जे हदेवतानी छइ | कि० काणना पोटि गुण नां वइ आंबा कोठी ना वा तेण इ आकार इ दो० वेइ लं० तेहना घा बाणपो ता वृल्ल छइ आड जे देवतां ना | जं० वेइ ध्यान नरवाना को ठी सरी खा ते है देवतानी सं० स ठा ण संस्थित छइ

दसरिसा से नाही सिक्कगसंठाणसंठिए से नेत्ते किण्णपुडसंठाणसंठिया दो वि तस्स वसणा जमलकोट्टियासंठाणसंठि

दो० दोइ ले० ते हनी उ० जे घा मोटी माथल छे | अं० अर गुणा इ वनी खलवको गुल्ले लं० लेह सरीखा बेइ गोमा वांकाअदीरनां गोमा समान कुं० कुटिल अधि कं पण इ वांका छइ देवता ना गोमा वां का॥ | वि० विकृत वीलामण उं दं० द रशनि छइ जे लनइ | जे० जांघ नइ विषइ कठिन आका लो० रोम छइ वहुल घण

या दो वि तस्स ऊरू अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिलकुडिलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं जंघाओ कक्खडीओ लोमेहिं

अ० वाटवानी सीला ते ह समान देवताना दो० वेइ ते हनाचा० पगछइ तथा | अ० कंपासलोढवानो काणे लो० हदं ड समान | पा० पगनी आंगुली छइ ते ह देवतानी | सि० सीप वी सरी खाए कपड सरी खा अन इ का टिला मोटा नख छइ

उवचियाओ अहरीसंठाणसंठिया दो वि तस्स पाया अहरीलोढसंठाणसंठियाओ पाएसु अंगुलीओ सिप्पिपुडसंठिया से नक्खा

ल० लडघड़ ता ते हना जा० ही वाणछ इ दे वे ताना गाढी नी सीघ | ते ह समान गोमा वि० ते ही च ल ण व० वांका जागा स्था न क छइ जेहना | अ० फाल्हा मुखवांको मुख नो वि वर छे जेहन उ देवता नउ | नि० वाहिर काढी छइ जी० जीभ जेणइ ते व का वत उ छइ | स० कांकिडा किरकांटीयानी ते तमाला माथानी माल कं डिल माइ घाली छे अ० उद

लडहमडहजाणुए विगयभग्गभुग्गभुमए अवदालियवयणविवरनिल्लालियग्गजीहे सरडकयमालियाए उंदुर

रा नी माला गल इ पहिरी छे एल्ह वी देवता इ पवतीयो स त वि ल्हाम लो ट्र वता इ ए ह वीर चना की धी वि० वि ल्हु जेणइ देवताइ | न० नोलीयांनी माला क० कानां नरणकां नइ पहीरी छइ | स० सर्प नु कृत रास ला व ह ल्हा छइ गलइ | अ० लाथ वे माला लोटा दे तो य को | अ० मल्हा ग जली जाइ छइ जी० रोइ कुं कुं कार्य छइ | अ० अहइ ल सप छइ ल्हाट

माला परिणद्धसुकयचिंधे नउलकयकण्णपूरे सप्पकयवेगच्छे अप्फोडंते अभिगज्जंते भीमुक्कट्टहासे

कर तीय कउ | ना० नाना प्रकारना | पं० पंच वर्ण लो० रोम इ करी नइ उ० उपचित सहित | ए० एक स० मोटो | नी० नहनील कमल सरी खउ ग० गवल भ० भंग स म गु० गुली वरण स्या म छइ | अ० अलसी धान्य विशे ष कुं० तेहनी फूल समान स्याम वरण छइ | अ० उ ह वउ खड्ग विषधारा इ करी लाघ नइ० वि खइ गल्ली नेपा

हासे नाणाविहपंचवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असिखुरधारं ग

छए ना धारा सरी खो ह धले इ नेह की पल खोव इ गके ह व उ छइ प्रकासनो करण हार छइ | जे० जिह्लां करणीके पोषध साला छइ | जे० जिहां कलिका मादेव स० श्रा वक पोसह करी रहउ छइ | ते० तिहां दो वताग० आवि आवीनइ | त० ति वारइ पछइ आ० मां ल्हए क कोप्पान जल ती सइ करीनइ धमधमा जाज्वलमान कोधइ वदो रा इ ह स

हाय जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ त्ता आसुरत्ते

रु० रु ठो | कु० को प्यो | चं० घण चंड रोइ कठिन | मि० कोधानाथ पको दंत पीसइ वारंवार | का० कामदेव स० सम णोवासक श्रावक प्रतइ | ए० ह म व० बोल्यो | ह० अरे काम देव | स० श्रमणोवास क श्रावक | अ० अण दीठी वस्त नां वा० वांछण हार

रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसियमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी हं भो कामदेवा समणोवासया अपत्थियपत्थि

उ० नुमापर्याय नाथली ते ह लक्षण वंत ल क्षण हीण पुन्य च उ द सिया का लीच वदसा ना जाया | सि० श्री लक्ष्मी हि० ह्री लज्जा धि० धीर कि० कीर्ति ना ही ण हलजा | जा० यावत प० परित्याग न्ज वर्जित | ध० श्रुत चारित्र ध र्म लक्षण जे धर्म तेहनी वांछाना | उ० चलीघुमनी वांछाना स० स्व र्गनी वांछाना काम भोगादिक मो० मोक्षनी वांछा

अ दुरंतपंतलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसिया सिरिहिरिधिइकित्तिपरिवज्जिया धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया॥

ध० धर्मनो कामी एहवा वांछावंत स्वर्ग नी पुन्यनी मोक्षनी | पु० पुन्यनी वांछा | स० स्वर्गनी वांछा | मो० मोक्षनी वांछा | ध० धर्मपिपासा पीपासा कांमी ति० | पुं० पुन्यपीपासा वांछि मनमांहे | स० स्वर्ग विमांन नी पिपासा | मो० मोक्षपीपासा वांछावंत

उपासक० २०

धम्मकंखिया पुण्णकंखिया सग्गकंखिया मोक्खकंखिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासि

नो० नहीं कल्पइ तुझनें देवानुप्रिया | सी० सीलादिक अणुव्रत त्रिगुणव्रतादिक नइ नाहरा व्रतादिक वीरतीविरमण | प० पचखांण | पो० पोसहो उपवासादिक | चा० तेहथकी चालवा वांछि वांछइ छइ | खं० खंडवो नवई | खं० खंडित

या नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडि

देस नउ | भं० भांजवुं देस थकी सर्वथकी व्रतादिक | उ० सर्वना सर्वथकी तजिवा | प० परित्यागनइ समर्थ एतलइ धर्मनें वि दिइ छइ | तं० तेजड जउ तुं० तुमे अ० आजए हवी सि० सीलअणुव्रतसर्वव्रतसीलादिक | जा० ग्या वत | पो० पोषधव्रतादिक उपवास | इ० नहीं छंड छाडइ

त्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं जाव पोसहोववासाइं न छंडेसि

न० भांजही भांजइनो | तो० तु कइनें अह० हुं अ० आज नी० नीलउपल नीलो कमलसमानजे जा० यावत पूर्व वत | अ० तरवारइ करी खं० खंड खं० डकडा कडा क० करेमि | ज० जेह नली उ० उ० तुमे | अ० आर्त्तध्यान करी आर्त्त हइ इहइ करी वसत मइ पलीकरी नइ | अ० अकाली जीवत थकी वि० निश्चइ करीनइ

न भंजेसि तो ते अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल जाव असिणा खंडाखंडिं करेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव

वि० मरण पमाडि सीम ही करी | त० तीवारइ से० ते का० कामदेव नीनामइ स० श्रमणोपासक श्रावक | ते० ते दि० देवतानु पि० पिसाचनो स्वरूप देखीनइ | ए० एह वउ बोल बोलतो सांभलीनइ | ते कामदेव अ० बीहनो नथी अ० त्रा सतो नथी | अ० उद्वेग न पाम्यउ

जीवियाओ ववरोविज्जसि तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे

अ० नामथी ऊसोभनथी | अ० हिवइ मु झिज्झकइमन नन बलो | अ० संभ्रात न थयो एकठउ मारइ छइ | तु० अणबोल्यो ध० धर्मध्या नमइ विषइ विचरइ | वि० विचरइ प्रवर्तइ | त० तिवारइ से० ते दि० देवता पि० पिसाचइ | का० कामदेव श्रावक नइ | अ० अ बीह न

अक्खुभिए अचलिए असंभंते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगते विहरइ तए णं से दिव्वे पिसाय कामदेवं समणोवासयं अभि

च० चलि जा० या वत | ध० आणबोल्यो धर्मध्यानमइ विषइ वि० विचरतउ पा० देखइ देखीनइ | दो० बीजीवार * त० तीजीवार | का० कामदेव स० श्रावक प्रतइ | ए० इमव० बोल्या | दे० अरे कामदेव स० समणोपासक श्रावक

यं जाव धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ २ दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी हं भो कामदेवा समणोवास

अ० अप्रार्थीवस्तु जे मरण पत्र तेहनउ प्रार्थनहार छइ | ज० ज उ० उ | अ० आज भरम न्हारइ कइहइं तमे मूलइं मारा कलो नहीं मानइ तो जाण्यो वत वत जीवतम थकी रहित करी | त० तीवारइ पछइ से० ते कामदेव श्रावक त० तिवारइ पि० सा च रूपए हवु दि० देवता | दो० बीजीवार त० तीजीवार | ए० कहइ छउ नइ

यं अपत्थियपत्थिया जइ णं तुमं अज्ज जाव ववरोविज्जसि तए णं से कामदेवे तेणं दिव्वेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते स

अ० बिहनो नथी जा० यावत ध० धर्मध्यानइ विषइ विचरइ | वि० विचर वालागो | त० तिवारइ से० ते दि० देवतादि पि० साचरूप | का० कामदेव श्रावक नइ | अ० अबी हपणइ ज० यावत वि० विचरतउ दि० देखइ देखीनइ | अ० क्रो धेका

माणे अभीए जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं समणो० अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ आसु

री धम आपो | ति० त्रिवली चढइ त्रि० भृकुटी नि० निलाडइ करइ करीनइ | का० कामदे वनइ | नी० नीलोत्पल स मान जा० यावत | अ० खड्ग इ करी खं० डकरड करइ | त० ति वारइ | से० ते का० कामदेव श्रावकनइ

रुत्ते ५ तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं सम० नीलुप्पल जाव असिणा खंडाखंडिं करेइ तए णं से काम देवे स

तं० तिक्ष्ण उ० उज्वल वे० दना जा० यावत इ० जाज्वलमांन थकी न वावत वेदना | सं० संमपणइ कारइ वे० वेदना सह० सहइ इ० खमइ | जा० यावत अ० मन संघातइ अहियासइ | त० तिवारइ से० ते दि० देव ताइ पि० पिसाच रूपइ | का० कामदेवनामा स० श्रमणोपास क श्रावक नइ | अ० अ बीह तो | जा० यावत

मणोवासए तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ जाव अहियासेइ तए णं से दिव्वे पिसायरूवे कामदेवं सम० अभीयं जाव

वि० विचरतो थको काम देव श्रावकनें पा० देखइ देखीनइ | जा० जिवारइ नो० नहीं स० समर्थ | का० कामदेवनामा श्रमणोपासक श्रावक नइ | नि० निग्रंथ नाधर्म थकी व० वचन थकी | चा० चलाव थकी | खो० क्षोभ पामव थकी | वि० विपर्यास थकी वे वावि नम लको मनना परिणाम धर्मथकी

विहरमाणं पासइ २ जाहे नो संचाएइ कामदेवं सम० निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामि

२०

उपासक० २१

इ संकाना वइ कइ मनमें | ता० तेदेवता श्रमणोपासकनि श्रातकुतोविसेषकरीनेंथा कोवि मावरूप देखता | स० ज्ञानेर इलु कइर पाछोव लो कामदेव श्रावक हूंनी नीकल्यो नीकलीनइ | पो० पोसहसा लाथकी | प० नीकलेनीक लीनइ | दि० देवतासंबंधि पि साचनोरूप | वि० विसर्जे विसर्जीन इदेवतो

सएवा ॥ ताहसंतेतंसेयरितंते सालियरुवंओसक्कइ पोसहसालाउ पडिनिक्खमइ २ दिव्वंपिसायरूवं विप्पजहि

ना० निकुंचरूप त्यजी | ए० एक मह मोटो दि० दिव्य प्रधान हत्थि | स० सप्तांग प्रतिष्ठित ... सुजात ... पुरओ आगलि ...

त्तिा एगंमहंदिव्वंहत्थिरूवंविउव्वइ २ सत्तंगपतिट्ठियंसम्मंसंठियं सुजायंपुरउदग्गं

... | ... | ... | ... | ... | वि० विमल उजला ध वला दं० दांत | कं० सो नानी कोसि

पिट्ठिउवराहं अयाकुच्छी अलंबकुच्छिं पलंबलंबोदराधरकरं अब्भुग्गयमउलमल्लिया विमलधवलदंतं कंचण

... | ... | ... | कु० कुर्मनासरीषा च० चर्ण चरण छइ | वी० वीस नख छइ | अ० प्रमाणोपेत ... छइ

कोसिसपविट्ठदंतं आणामितचावललिया संवेल्लियग्गसोंडं कुम्मपडिपुन्नचलणं वीसतीनक्खं अलिणपमाण

... | ... | ... | जे० जीहां पो० पोसह सालाछइ | जे० जीहां का० काम देवना

जुत्तपुच्छ मत्तंमेहमिवगुलगुलिंतं मणपवणजइणवेगं दिव्वंहत्थिरूवंविउव्वइ जेणेवपोसहसाला जेणेवकामदेवे

स० श्रमणोपास क श्रावक छइ | ते० तीहां उ० आवे आवीनइ | का० कामदे वप्रतइ | ए० इमव० कहइ | हं० अरे कामदे वश्रावक | त० तिमजन० कहइ छइ | जा० यावत् न० नही नं० भाजसि व्रत | तो० तो तुजनइ अ० आज अ० हूं

समणोवासए तेणेवउवागच्छइ कामदेवं एवंवयासी हंभोकामदेवा तहेवभणइ जावनभंजसि तोतेअज्जअहं

स० सूंड थकी गि० गहीनइ | पो० पोषधसाला थकी | नी० लेइ नइ | उ० उंचो उछालिनाखीस नाखीनइ आकासइ | ति० तीखा दांत मूसल सरीखा तेणिकरी नइ पीडा करस्युं ... | अ० नीचो धरतीना भूमी ने वार पा० पग ...

सुंडाएगिण्हामिपोसहसालाउनीणेमी उड्ढंवेहासंउव्विहामिर तिक्खेहिंदंतमुसलेहिंपडिच्छामिर अहेधरणितलंसि

... | ज० जीम तुं० तुं स व... | अ० अकालिमरण ... | व० ... रीस | तं० तीवारइं से० ते काम का० कामदे वस० श्रमणोपासक श्रावक | ते० ति ... इ

तिखुत्तोपाएसुलोलेमि जहाणंतुमंअट्टदुहट्टवसट्टे अकालेचेवजीवियाउ ववरोविज्जसि ततेणंसेकामदेवेसमणो० तेणं

दि० दीव्य ह० हा थी रूपइ | ए० इम कहइ थक | अ० ... | त० तीवारइं से० ते दिव्य ह० देवता हाथीनइ रूपइ | का० कामदेव श्रावक अ० अविह ... यावत

दिव्वेणंहत्थिरूवेणं एवंवुत्तेसमाणे अभिएजावविहरइ ॥ ततेणंसेदिव्वेहत्थिरूवे कामदेवं अभीयं जाव

वि० विचरइ धर्म ध्यानइ विचरइ | पा० देषइ दो० बीजीवार त० त्रीजीवार का० कामदेव श्रमणोपासक प्रतइ | ए० इम व० बो ल्या हं० ... देवता | हं० अरे कामदेव श्रावक ... | ... | त० तीवारइ पछे से० ते दिव्य देवताइ

विहरइमाणं पासित्तादोच्चंपितच्चंपिकामदेवं एवंवयासी हंभोकामदेवातहेव ॥ जावसोविविहरइ ततेणंसेदिव्वेह

... ते का० कामदेव श्रावकनइ | ... | आ० क्रोधइ धमधम्यो | का० कामदेव स० श्रमणोपा | पासक श्रावक ... | उ० उंचो आकासनइ विषइ ... | ति० तिखे

त्थिरूवेकामदेवंस अभियंजावविहरमाणंपासइ २ आसुरुत्ते ४ कामदेवंस० सोंडाएगिण्हइ २ उड्ढंवेहासंउव्विहइ २ तिक्खेहिं

... | ... | लो० लोले ... | त० तिवारइ ... का० कामदेव श्रमणोपा सक श्रावक प्रतइ | ... | त० तिं ... उपर वतनी ...

दंतमुसलेहिंपडिच्छइ २ अहेधरणितलंसितिखुत्तो पाएसुलोलेइ २ तएणंसेकामदेवे तंउज्जलं जावअहियासेइ तएणं

२१

आ० आवत अं० ए पद्यसी मकांसि ए हवी वे दलो दीधी देवता त० ति वारे ए छांडि० देवता हस्ति० रूपकाम० कामदेव ने सुकावी नसक | जा० निर्ग्रंथना वचन पुती का० चला वी खोभावी न सक्कै वि० धर्म पौषधसालानी मांहि लो ति वा र ए परिसंकेत आवेत थकौ ते० पछी थकाे | प० परिश्रांत सर्व थाक ना ति वारे दस दसु वे ए पा० पाछो व लइ पो० पोषधसाला थी सद० करवानी ते ह चकी प० नीकलइ नीकली मइ

दिद्वे दस्त्रि रूवे कामदेवं जा दे नो संचाए ति जाव सणियं २ पच्चोसक्कइ २ पोसहसालाउ पडि निक्खमइ २

दि० दिव्य प्रधान दे० हस्ति रू० रूप विं० विसर्जे वि सर जीने रूप नोकव | ए० एक म० मोटो काले सर्प दि० दिव्य प्रधान स० सर्प नो रूप वि० विकुर्वे वि कुर्वी नइ पछे ते सर्प करे केहवो उ० पति विस नो धणी त सर्प नउ ग्रमो टो विष छइ कर के हउ छइ ते कहे छे | दि० दिव्य विकोदि दृष्टि जोता मारे स मर उ उ० उग्र जा वला विष पा पाव जेहनो विष घोर विष पोधली अती दीघ जं विन मांह मा मोटी छे ते वाय मांनम काज

दिव्वं दस्त्रि रूवं विउव्वइ २ एगं महं दिव्वं सप्परूवं विन्नइ उग्गविसं दिहिविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसा

त सरीखो वर्ण कायास्यामया दावर लोचे | न० न यन लोचन आर्य वरी विष रुसे सर्व रहि अन लोचे डो संतोष आं० काजल नो पुं० सम रू० होगलीने रू मरी की प्रकामसे रंग रूडा तारे जोडि ता बलो | लो० सरीखा लोचनने जोयने जेवा आर्य वा चपलजिहने ल व काव ती ते हरा म त व हरव जो हों मरीषी वाली चापल लवना हरवी जी न लड जेहनी फिर सर्व कहे को छइ ते कहइ छइ | ५० ए पवीत लन्न ने विकहइ जाणे वे

कालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंजनिगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमलजुयलचंचलजीहं धरणियल

णी कृततव मा सरीखी वे लीमडी | उ० उ० कट प्र० नावनी करते कुट स्फटप्रगट कु० वाको कुम जट ग्रामभंव | क० कर्कश विकट फणनोआटोप आ० सरकरवाराली दं० द सदा उच्छ उलीके सगाढु इ | लो० लोहना आगरनी परेधं० धम धमाट करी तो घोर रा ह करतो धमली जे हेको आरट कुवे ते ह को सा दइ रू० आदि करतो ए हवो घोष शब्द छइ | अ० अणमेयो अति विरोधमन ति वि तु

वेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमितघोसं अणागलिति

ला बेणी छइ सो ते ज सरीखी तन हवु का लेदए कर्म ज्ञा पति विकर्वे वि कुर्वी नइ | जे० जिहां पोषधसाला छे जे० जिहां का० कामदेव श्रमणोपासक श्रावक जिहां पासक छो कीयो छे तेह छइ | ते० ति हां | उ० आवीन | का० कामदेव स० श्रमणोपासक श्रतइ | ए० इस व वो लतो हुं | ए० अरे का० कामदेव

व्वचंडरोससप्पस्वं विउव्वइ जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे सं० तेणेव उवागच्छइ २ कामदेवं सं० एवं वयासी हंभो काम

आ० आवत सं० नही तं० तुम्ह सील जीनही तो० तो आज अ० हुं सं० ताद री काया इ | स० सरसराट करतो० हुं व० तिम तठी निर्डवो देवता बोलतो हुं वो फेर देवता को मदेव नामा श्रावक ने कहइ छइ | प० पाछि ले रगाम पुछ भेकरी ने | ति० ति नवार ग्रीवा नी पाचरन वीट सांवी दीन इतिं० तिखा दंत विष दाग

दिवा जाव न भंजसि तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरूहामि २ पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेदेमि २ तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं

दा० दाह संयुक्त पेट मांहि सर्व दं० दं कहं धारं सरीरं मांहि | जे० जीमाणं ज वा करालंकार जली उ० र आ० आर्त ध्यान दुः रौद्र ध्यान मांहि | अ० अकाले न विहुं जें० निश्चइ जी० जीवित वथकी थे० रहित करीस तं० तिवारे का० कामदेव श्रावक ने ते० तेहि दि० दिव्य प्रधान स० सर्पनी रूपे | ए० इस कहइ थके कामदेव फल्यो वयत

दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाउ ववरोविज्जसि तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं दिव्वेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समा

अ० अविहु पणइ जा० यावत वि० धर्मध्याने विविध विचर ते मो ते सर्प दु० दूजी वार त० तीजी वार स० कहइ छइ | का० कामदेव श्रावक जा० यावत फेर धर्मध्यान ने विविध विचरइ | त० तीवार दु० ए छइ से० ते दि० देवता स० सर्प रू० रूप का० कामदेव नामा श्रावक ने जा० यावत अ० अवीकवणी पा० देवता देखइ दे वी सइ पल छइ जे

णे अभीए जाव विहरइ सो वि दुच्चंपि तच्चंपि भणइ कामदेवो वि जाव विहरइ तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं अभीयं जाव पासइ

आ० कोप को धमधम्यो पचइ | का० कामदेव श्रमणोपासक श्रावक वे | स० उचो चढ्यो चढीनइ स० उतावलो | प० पाछिला वासा ने विषे ति० त्रिणवार वीटणो दली कोटि पाछली दाढ नेति ग्राम | वि० विष हरी

आसुरुत्ते ४ कामदेवस्स समणोवासयस्स सरसरस्स कायं दुरूहइ २ पच्छिमभाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ तिक्खाहिं विसपरि

द० दाढइ तिर्षकरी | उ० पेट हृदे कटीली चे० निश्चे नि० कूटो | तं० ते एवो उग्र पत ते कामदे वने दूटो | ने० ते उ० उज्ज्वल वेदना सकल सरीरे व्यापी जा० जी का अ० वमसकइ ते दे नो थकी नै जा वाग द वी ते दना | त० तीवार ए पछे से० ते दिव्य देवता स० सर्पने रू० रूप का० कामदेव श्रावक नइ | अ० अ विहु पणे

गयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ तए णं से कामदेवे तं उज्जलं जाव अहियासेइ तए णं से दिव्वे सप्परूवे कामदेवं अभिय

जा० जी ते जा० यावत का० दे० खइ देखीन इ | जा० जिवारे नो ० न ही स० समर्थ | का० कामदेव स० श्रमणो पा० पासक श्रावक नइ | नि० निर्ग्रंथ जे पावच न तेह थकी | चा० चलाविवा समर्थ नही | खो० मनना परिणाम खोभवाय को अ० अतिहि अ समर्थ

जाव पासइ २ जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा

ता० श्रांत थको था कोतं० घणं थाको प० परितांत सर्व थी थाको स० हलवे हलवे पाछो वलइ | पो० पौषधसाला थकी प० नीकले नीकली नइ पछ दु ल वे हलुवे नीकलइ | दि० देवतानं सर्प वे की य० कवि पते | वि० संवरइ सं वरीनइ | ए० एक म० मोटो दि० दिव्यप्रधान दे० देवतानो रूप

ताहे संते तंते परितंते सणियं २ पच्चोसक्कइ २ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ २ दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ २ एगं महं दिव्वं देवरू

वि० विकुर्वित्ति करीनइ | का० कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावकनै वि० करवानु मालामालि | अ० एइसइ पकडू सीनइ एतलुइ | अ० आविर आवीनै श्रा आकाशिने पक निर भार रहिनइ | म० नाहनी जेह घुघरीनिताइकरासहितां पां० ने वर्णाइ करसहित एक पाक कस्त्र देवतानइ

वं खित्तडिन्नाँ कामदेवस्स समणोवासकस्सालं अप्फय्य विसइर अनेलिम्कपं डिवन्ने सखिखिणियाइं पंचवन्नाइं वत्थाइं

प० पहिर्यानवउ रीहीनइ | का० कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावकनइ | ए० इम वद कहइ | ह० अरे कां कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावक नगवंतजिनधर्मनि बिवइ | धं० ना न | उ० उम लइ | दे० देवितानु दिवा | सं० पुनवंत सद्धर्णः

पवरपरिहिए कामदेवं समणोवासयं एवंवयासी हंनो कामदेवा समणोवासया धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकंखिया पुण्णकंखिया सग्गकंखिया मोक्खकंखिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासिया नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा

(marginal/interlinear glosses, partly legible:)

कयलक्खणे सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया माणुस्सए जम्मजीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ति

लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया एवं खलु देवाणुप्पिया सक्के देविंदे देवराया सते कत्र जाव सक्कंसि सीहासणंसि चउरा

दे० देवताइं नेपरवारे परवर्यां... चोरासी हजार सामानिक ...

सीणं सामाणियसाहस्सीणं

जा० यावत अ० अनेराइ... | दे० देवताइं करीनइ दे० देवाणुप्पिया... | ए० इम भाखीत... | ए० इम स० निरवे देवे देवता... | अ० जंबूद्वीप नामा... | चं० चंपा नाम

जाव अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवं माइक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया जंबुद्दीवे भारहे वासे चंपा

न० नगरी छइ | का० कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावक वसइ छइ | पो० पोषधशालानइ वि० वइ स० सहित | बं० ब्रह्मचारी | जा० यावत द० दाभनासं थारो... | स० समण भगवंत श्री महावीर नइ

ए नयरिए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स

अं० समीपे धर्म... | वि० विचरइ व० ते नोही... | को० कोइ दिवि देवता... जा० यावत ...

अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ नो खलु से सक्का केणइ देवेण वा दाणवेण वा जाव गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ

चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामित्तए वा तए णं अहं सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ इहं हव्वमागए

ए अहो णं देवाणुप्पिया इड्ढी लद्धा ३ | तं दिट्ठा णं देवे इड्ढी जाव समणोपासया | तं खामे

मि णं देवाणुप्पिया खमंतु मं अरिहंति णं देवाणुप्पिया नाइ भुज्जो करणयाए त्ति कट्टु पायवडिए पंजलिउडे एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो खामेइ २

आ० जीणदिसथी पा० | ना० तिणदिसे पाछो | त० तिवारपछी से० ते का० कामदेव समणोपासक श्रावक नि० उपसर्ग पिकीनिर्वत्या इति करता | प० प्रतिमापूरा... | ते० ते ...

जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए तए णं से कामदेवे समणे निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ २ तेणं कालेणं तेणं

उपासकद० २४

स० श्रमण भगवंत श्रीमहावीर विचरता आव्या चंपा नगरे पूर्णभद्र चैत्य माहि तिहां उद्यानमांहि विचरे छे ते कोइक आवीने कहेतो हवो
त० तिवारइ पछइ से० तेकाल कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावक कहण हवी तेकथानी वातसाभलीने श्रमण भगवंत श्रीमहावीर विहार करता आव्या चंपानगरी तेनि तिहां आव्य समोसर्या
ए० इम खलु निश्चे स० श्रमण भ० भगवंत श्रीमहावीर देव जि० ति विचरइ छइ तेणे तो

समणे भगवं जाव विहरइ तं तेणं से कामदेवे स० इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे जाव विहरइ तं

से० सेय खलु निश्चे स० हुं स० श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देव प्रते वां० वांदीने न० नमस्कार करीने भगवंत नइ
स० ति पछे घर पछइ उ० पोसो उपोसह लेवो ते पारइ
ति० इम चिंति मनइ
ए० इम मनमांहि चींतवतो थको
स० सहुयकवचन

सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता तउ पडिनियत्तस्स पोसहं पारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहइ २ सुद्धप्पा
म० मलरहित हाथ लुहणां शुद्ध वस्त्र पहेरी मोलीमं० रुप गाय पहेरी आ० या वत् म० मनुष्यनी श्रेणि परवर्यो
स० आपणा घर थकी प० नी कलइ निकलीनइ
चं० चंपानइ नगरे मांहइ मा० मध्यमध्ये थइनइ नी नीकली नीकलीनइ

वेसाइं वत्थाइं अप्पमहग्घ जाव मणुस्सवग्गुरापरिखित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ चंपं नगरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ २
जे० जीहां पु० पूर्णभद्र चैत्य वनखंड चैत्य उद्यान
ज० जिम स० संख श्रावक ली नइ भगवती सूत्र मांहि वर्णव्या ते नी परइ कामदेव वांदी स० श्रमण भ० भगवंत म० श्रीमहावीर देव इ॥
का० कामदेव स० श्रमणोपासक श्रावक नइ
ती० ते हवी एक आ० यावत्

जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणो० तीसे य जाव
ध० धर्मकथा कहीनइ धर्मकथा नि० आन्तरइ का० कामदेव श्रमणोपासक नइ वोला कहे इ हुइ
स० श्रमण भ० भगवंत श्रीमहावीर देव का० कामदेव श्रावक प्रतइ
ए० इम क० कहतां हवी से० तेनू निश्चे का० हे कामदेव श्रावक उक्त नइ
उ० आधीरात्रिने समयें वरतती थकां

धम्मकहा सम्मत्ता कामदेवाइ समणे भगवं महावीरे कामदेवं सम० एवं वयासी से नूणं कामदेवा तुमं पुव्वरत्तावरत्तकालसम
ए० एकदेवे देवता आ० समीप इ पा० समीप प्रगट्यो
त० तिवारे से० तेदेव देवता
ए० एक म० मोटो दि० दिव्य प्रधान पि० पिसाच नो रूप
वि० विकुर्वे विकुर्वीनइ
आ० क्रुद्ध कोप्यो ४
ए० एक म० मोटो नील नीलोत्पल सरीखो ख

यंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ २ आसुरुत्ते ४ एगं महं नीलुप्प

ल० लेइ तुझने तिलि देवइ
ए० इम वइ कहइ
दे० अहो कामदेव व्रत भांजि नहीतोजी० जीवत थाती रहित व० करिस्यो
ते० तिवारइ पछइ ते देवताइ ए० इम कहे छके अहो कामदेव
अ० अविहतो बीहनो नइ जावत्

लं असिं गहाय तुमं एवं वयासी हंभो कामदेवा जाव जीवियाओ ववरोवेसि तुमं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव
ध० धर्मध्यानें विवेक चरे
ए० इम जवली देवताइ हाथीनो रूप करीनइ वली सर्पनो ३ उपसर्ग कीधो त्रीजो सर्पनो उपसर्ग कीधो ए वात सर्व कही
जा० यावत् देव देवता प० पाछो गयो हवो तेनपहले देवलोके से० तेनू निश्चे का० हे कामदेव यावत् कहइ
अ० ए हवी वात साची का० हे कामदेव हा० हा स्वामी ए० अर्थ साचो छइ

विहरसि एवं वण्णगरहिता तिन्निवि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगउ से नूणं कामदेवा अट्ठे समट्ठे हंता अत्थि
स० तिवारइ पछइ स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत म० श्रीमहावीर देव इ
व० घणा स० समण नि० निग्रंथ
नि० साध्वी
आ० तेडावी ए० इ म० कहइ
अ० जो आर्यो आर्य समणो
स० समणोपासक श्रावक गि० गृहस्थ गृहस्थ धर्म मांहे वस

अज्जो त्ति समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी जइ ताव अज्जो समणोवासगा गिहिणो गि
तां थकां
दि० देवतानां कीधा म० मनुष्य कीधा ति० तिर्यंचनां कीधा
उ० उपसर्ग स० समता एकरीमं० खमइ सहइ
जा० यावत् अ० स हियासइ
स० शक्य दें देखे ई आज पवित्र घणा सभ्य तथावी अ० हे आर्यो
स० समण इ
नि० निग्रंथ र्व साध

हमज्झावसंता दिव्वमाणुस्सतिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहंति जाव अहियासंति सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गंथेहिं
दु० द्वादशांगी सूत्रनां जोणिक्या ग० कटक स कल भावासूत्र ना भणणहार भ० ति भाणमा धीवीउ क्षांतमे
दि० घणा दवी देवतानां स० मनुष्य नाति० तिर्यंचनां कीधा उपसर्ग
स० समपणइ कार इ स दिवोव मवे
जा० यावत् अ० अहियास त्ये हि साधवो
त० तिवारइ ते व० घणा स० समणे क हीने साध

दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए तउ ते बहवे समणा
नि० निर्ग्रंथ नी० नीग्रंथ वी साधवी स० समण स० भगवंत श्री महावीर देव नो व० वचन तहत्ति करी नो ए हवो अर्थ वि० विनय पूर्वक प० सांभली नइ वचन वचन प्रमाण कीधउ
त० तिवारइ पछइ से० ते का० कामदेव स० समणोपासक श्रावक भगवंत ना मुखनी वचन सांभलीनइ हर्ष संतोष पामी चि० चित्त मांहि आणंद थयो
स० श्रमण नइ

निग्गंथा य समणस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया समणं

२४

भा॰ तेने प॰ प्रश्न पु॰ पूछइ | अ॰ अर्थ प्रश्न सहित मन हृदय धरीने इ॰ ए श्रमण भगवंत ने | ति॰ त्रिणि वार वांदइ वं॰ वांदी न॰ नमस्कार करे करीनइ | जा॰ जिणि दिसि थकी पा॰ प्रगट थया छो | ता॰ तीणि दिसि प॰ पाछा गया | त॰ तिवारइ स॰ श्रमण भग

गवं पसिणाइं पुच्छइ अट्ठमादियाति समणे भगवं तिखुत्तो वंदइ नमंसइ २ जामेव दिसिं पाउ॰ तामेव पडिगया तए णं समणे

वंत श्रीमहावीरदेव अ॰ अन्यदा प्रस्तावे चं॰ चंपा नगरी थकी नीकले नीकलीने वा॰ बाहिर जनपद देस नइ विषइ विहार करइ करीनइ | त॰ तिवारइ पछइ से॰ ते कामदेव श्रमणोपासक श्रावक इग्यारह मा विहइ तेमांसी प॰ पहली श्रावकनी प॰ प्रतिमा समकित पालि एक मास लगइ आव आरोधइ बीजी प्रतिमा श्रावकनी पा॰ लो बे मास डी राखइ तीजी व्रत मां सामाय लगे पडिकमणा करे चोथी प्रतिमा च्यार मास लगइ मास मांहि छ पोसा करे

अन्नया चंपाउ पडि वहिया जणवयविहरति तए णं से कामदेवे स पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ

पांचमी प्रतिमां पांच मास नी छट्ठी प्रतिमा मास गले ब्रह्मचारी पाले छ मास लगा बे सातमी प्रतिमा सचित नो त्याग करे आठमी प्रतिमा आठ मास नी आरंभ करे नवमी प्रतिमा नवमी मास नी तो ते आरंभ न करे दसमी प्रतिमा | दसमास नी मस्तक मुंड करावे इग्यारमी प्रतिमा इग्यारमासनी सर्व सघली पडि॥ नीरतीचार एह वी इग्यार प्रतिमा वही स॰ तिवारे | से॰ ते का॰ कामदेव श्राव क अ॰ घणा उहां आठ माद

तए णं से कामदेवे समणोवासए बहूहिं जाव भाएत्ता वीसं वासाइं समणो

जाव आवतीय कोकिंवि सिवरस ता इ स॰ समणो वा॰ वासग श्राव कपनउ प॰ पर जाय पाणा | ए एग्यार श्रावक नी प्रतिमा जां लगइ स॰ सम्यग प्रकारइ काया इ करी सरीरइ फरसीनइ पा॰ पालिनइ सो॰ अतीचार ती नइ ती॰ पूरे व चइपणे थोडो विसाउ लंघीनइ | कि॰ एहनी करवा नी कीरती करीनइ आ॰ सम्यग प्रकारइ आराधीनइ | त॰ तिवार इ पछइ

वासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमा सम्मं काएणं फासित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता तते णं

से॰ ते का॰ कामदेव देवसं स मणो वा॰ पासक श्रावकइ | इ॰ इम प्रतिमा नइ तप इ करी नइ ए॰ उदार प्रधान | वि॰ विपुल घणे | त॰ तपकर्म करीनइ सु॰ सरीर सूका मलो लु॰ लूखा थया लु॰ सरीर लुखो थयो कामदेव नो नि॰ मांस रहित | अ॰ हाड चर्म ना मां करी वीटो छइ | कि॰ कडकडि

से कामदेवे समणोवासए इमेणं एतारूवेणं उरालेणं विउलेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडि

भू॰ भूतछइ | कि॰ किस दुबलो ध॰ नसा जाल ऊपरि | जा॰ यावत अ॰ एक दा प्रस्तावइ | अ॰ छेहली मरणांत | सं॰ संलेखणा रागद्वेष ओछा की धी रस सी मास छेह लो आउखो मा॰ एक मासनी स ले खणा की धी | अ॰ आपणी

किडियाभूए किसिधमणीसंतए जाव अन्नया कयाइं अपच्छिममारणंतिय संलेहणाझूसणामासियाए संलेहणाए अप्पा

आत्मा झू॰ फरसीनइ | स॰ छ॰ साठि भक्ति अ॰ अणसण इ थाली रहित छे॰ छेदीनइ | आ॰ पाप आलोईनइ प॰ पाप पडिक मीनइ स॰ समाधी पामीनइ | का॰ काल नइ समय काल करीनइ | सो॰ सौधर्म दवलोके | सो॰ सौधर्मवं तसक विमान

णं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिं

स॰ महाविमानइ | उ॰ ईसान कूणइ विषइ | अ॰ अरुण नामा विमा नइ विषइ दे॰ देवतापणइ | उ॰ उप नउ | त॰ तिहां अ॰ केतलाएक दे॰ देवता नो आउखो | च॰ च्यार पलोपमनी स्थिति छइ स्थिति

सयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिउवमाइं ठिइ

प॰ कही भगवंतइ | का॰ तिहां कामदेवनी ठि॰ स्थिति छइ पलि च॰ च्यार | पल्योपमनी स्थिति प॰ कही भगवंते | स॰ कहो स्वामी ते॰ देवता वांनका॰ कामदेव समणो समणो पासक श्रावक ता॰ ते दे॰ देवलो कथकी आउ॰ आउखो कर्मक्षय करीनइ | भ॰ देवतानउ भवक्षय करीनइ स्थि तीदेवतानी च्यार पल्योपमनी क्षय करी

पन्नत्ता कामदेवस्स चत्तारि पलिउवमाइं ठिइं पन्नत्ता से णं भंते कामदेवे ततो देवलोगाउ आउक्खएणं भवक्खएणं ठितीक्खएणं अणंतरं

चइत स्वामी नथी | क॰ अ॰ आंतरा रहीत चवीनइ क॰ किहां जासी कि॰ किहां जायनइ उपजसे दे॰ भगवान तिवारे भग वत कहइ वा गोतम स्वामी प्रते गो॰ हे गोतम | सांभलउ जंबूद्वीप ना मां वीपने विषइ मा॰ महाविदेह क्षेत्रने विष इ इ॰ एह वो उतम कुल नइ विषइ | जा॰ यावत अ॰ पराभवी नइ उ॰ आ॰ यत॰ तिहां अनेरा कोइ उतम कुल नइ विषइ

चइत्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति गोयमा इहेव जंबूद्दीवे महाविदेहे वासे इमाइं कुलाइं जाव अपरिभूयाइं तत्थ अन्नयरे

पु॰ पुत्रपणइ उ॰ उ | प॰ अवत रसइ | से॰ ते वली त॰ तिहां उ॰ मूकाणसी बाल भावथकी | जा॰ यावत जो॰ जोवनवयस्था पांमीमी वो होत रूप तो सौवमी | त॰ तथारूप नाथे॰ थिवर नइ | अं॰ समीपइ ध॰ धर्म सा॰ सांभलीनइ

कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाइ संति से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे जाव जोयणगमणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा

निर्मल हियड धारीन इ म॰ मुंड साधु थइने | आ॰ गृहस्थ वास थकी घर छांडीनइ अ॰ अणगार साधुपणइ प्रव्रज्या लेसइ | से॰ ते त॰ तिहां अ॰ अणगार साधु न॰ थाइसइ | इ॰ इरजा समितिवंत | जा॰ यावत ब्रह्मचारी सं थे थइ | से॰ ते वली ति लां घणा

निसम्म मुंडे भवित्ता आगारतो अणगारियं पव्वइस्संति से णं तत्थ अणगारे भविस्सइ इरियासमिए जाव बंभयारी से णं तत्थ

उपासक० २६

वि० विचित्र प्रकारना । त० तपकर्मे । अ० आपणो आत्मा नै भावता थका । त० तिवार प० पछै । अ० अनंतो । अ० प्र धान । नि० व्याघात रहित । नि० आवर णरहित । क० सर्वपद र्थनो जाण । प० संपूर्ण ज्ञान

छवि विवित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे तउप्पन्ना अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने

वि० अज्ञानरूपीयो अंधकार रहित वि० सर्वदोषरहित लो० लोकालोक ना दे प्रकास नो करणहार । के० केवलज्ञान केवल दर्शन । स० उपजस्यइ । सी० सीझस्यइ । बु० बुझस्यइ । मु० सकल कर्म थकी । प० कर्मकी भरिते सती प नै टालवा थकी अ स्यत ताढो हुस्यै

वितिमिरे विसुद्धे लोगालोगप्पभावगं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिहि

स० सर्व दुखदारिद्रनो अंत करसी इ० ते दुखी अर्थ नतो होस्यइ । ए० इम खलु निश्चै जं० है जं० जंबू स० श्रमण तपसी भ० भ गवंत श्री महावीर देव ना आवंत की भाए कहइ । आ० धर्म नी आदिना करणहार ति० तीर्थ नो करणहार जा० यावत सं० सं प्राप्त थया मोक्षनै विषइ । स० सातमा अंग नाउ० उपासगद

ति सव्वदुक्खाणमंतं करिहिति एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंग

सा ना अर्थ कहो बि० बिजो अध्ययन इसो अर्थ इ० तिवार पछी सुधर्मास्वामी जं० जंबू प्रते कहिउ जब जी स० श्री महावीर देवनै सांभल्यो इतो तिम तुज प्रते कहुं छइ । मा० जी मत थकी तप्पाक ह तो बीजो अध्ययन संपूर्ण आगे तीजो अध्ययन कहे ताउ इ० जो श्रमण भगवंत म० महावीर देव । आ० धर्मनी आदना करण हार ति० तिर्थना करणहार । जा० यावत सं० स प्राप्त थया मोक्ष

स्स उवासगदसाणं बितियस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं

दो० दुजा अध्ययन नो अर्थ । य० पद ज्ञाति मे कह्यो । त० तीजा अध्य यन नो । अ० अर्थ । के० कुण अर्थ प० कह्यो । त० तिवारे से० ते सुधर्म अ० अणगार मनइ । जं० जंबूस्वामि प्रतइ । ए० इम व०

दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते तच्चस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं व २६

कह्यो । ए० इम ख० नि श्चै जं० हे जंबू । ते० तेणे काले इ० चउथे आरो । ते० तीण समय अ० धर्मस्वामी ज थकता । वा० वाणारसी ना० नाम न० नगरी हो० हुती वणी करराढिका र्द्धि । को० कोठक ना म इ० चे० चै त्यवाग । जि० जितशत्रु नाम इ रा० राजा । म० महा र्द्धिक । त० तीण वाण वाणारसी

यासी एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसीनामं नयरी होत्था कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया महद्धिए तत्थ णं वाणा

नामा न० नग रीन इ विषइ । चू० चूलणीपि ता नाम । गा० गाथापति व० बस इ छइ वि० धनवंतो छइ ते कहइ छइ । अ० ऋद्धिवंत छइ दि० दि प्त वंत छइ जा० यावत अ० कोई पराभवी न सकइ । सो० सोमा नाम इ भा० भार्या पणि कहवी छइ सर्वता हणीकरी सहित छइ अ० आठ हि० सोवर्ण नी को० कोडि नि० निधान मा छइ

रसीए नयरीए चूलणीपिता नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए सामा नारीया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहा

अ० आठ हि० सोवर्ण नी का० कोडि वु० व्याजनै अर्थे छइ । अ० आठ हि० सोवर्ण नी को० कोडि प० घर वाखरै छइ । अ० अट्ठ व्रज वतवद आठ जात र्याय मनो एक व्रज ए दश आठ व्रज ८०००० असी हजार गायो होइ छै जे० जिम आ० आणंद तिम नगरमांहि मोटी स

णपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं हो

मां न स चूलणीपिया गाथापतीछइ वकुणं सतलव र मांडे वियसे बे सप वाहाणं व कलकहीसक्य कारणे सकय मंते सकय कु टंबे सकय गुह्य सकर रहस्य सकयनी चक्र ववहारे० आपुच्छे० पडिपु० समस्ति यणा कुटंब समेतसी न्हए आहार० आर्जि च वैसेन्हए मेढीपए तेनै दी कालि पूछवा योग्य छइ । इ० ईश्वर आ० यावत अन्य मेस व किदवा स० सर्वका मनी वधावणहार हो० हुतो० तीणकाल च उथा आरानै विषइ ते० तीणै काल आराने विषइ

त्था जहा आणंदो ॥ इ० चूलणीपिया गाथापती रहे छइ ॥ इसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥

ते० तिण समाने विषे जयवंते । सा० सामी स मोसर्या । प० परषदा वांदीवा नीकली वि० चूलणी पीया आंदवानीकल्यो जा० जिम । आ० आणंद नीपरै नांदवानीकल्यो । त० तिमज गि० गृहस्थनो ध० धर्मप० पडवज्यो अंगीकार कीधउ १२ व्रतरूप

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे परिसा निग्गया चूलणीपियावि जहा आणंदो तहा निग्गतो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ

गो० गौतम पु० पुछ्यो । त० तिम ही ज कहिवो सेस० सेष स गलो का० कामदेव नी परइ । जा० यावत पो० पोषधसाला नइ विषइ पोसह कीधो । ब० ब्रह्मचारी । स० श्रमण भ० भगवंत म० श्री महावीर देव नइ । अं० समी पइ । ध० धर्मनी प्रज्ञप्ति

गोयमपुच्छा तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मपण्णत्ति

उ० उवसंपदा लेइ वि० वि चरइ त० तिवारइ त० ते । चू० चुलणीपिया पिता । स० श्रमणोपास गश्रावग । पु० पुर्वरा० रात्रि व० वध्यरा त्रिन इस० समय नइ विषइ । ए० एक दे० देवता अं० समीपइ आयो पा० प्रगटथयो

उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तते णं तस्स चूलणीपियस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं पाउब्भूए

उपासकद०
२१

ततेणंसेदेवेएगंतीलुप्पल असिगहाय चूलणीपीयंसमणोवासयं एवंवयासी हंनोचूलणिपिया अपछियपछि

या दुरंतपंतलखणा जावपरिवज्जिया धम्मकामया पुन्नकामया सग्गकामया मोख्खकामया जहाकामदेवो जावमम्मा

जमितती अहंजेठपुत्तं सातोगिहातोणीणेमि२ तवअग्गतोघाएमि ततोमंससोलेकरेमि आदाणंभरियं सिकडाहयंसि

अद्दहेमि तवगायंसमंसेणय सोणिएण अयंचामि जाणंतुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकालेचेवजीयातो ववरोविज्जामि ततो

चूलणीपितासमणोवासया तेणंदेवेणं एवंवुत्तेसमाणे अभिए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असंभंतेतुसणी

एसं विहरइ धम्मज्झाणोवगएविहरइ ततेणंसेदेवेचूलणीपियं अभियंजावविहरमाणंपासइ२ ताडोच्चंपितच्चंपि चूलणी

पियं एवंवयासी हंनोचुलणीपिया समणोवासया अपछि० जावपरिवज्जिया नंचेवभणइसोजावविहरइ तंसेदेवे चूल

णीपिया अभीतंजावपासित्ता आसुरुत्ते जावमिसमिसेमाणे चूलणीपियस्ससमणोवासगस्स जेठपुत्तंगिहातोणीणेमि२ ता अग्ग

उघाएमि ततोमंससोल्लेकरेति२ आदाणंभरियंसिकडाहंसि अद्दहेइरत्ता चूलणीपियस्स समणोवासगस्स गायंमंसेणय

सोणियएणय आयंचति ततेणंसेचूलणीपिया समणोवासया तंउज्जलं जावअहियासेइ ततेणंसेदेवेचूलणीपियं

अभितंजावपासइरत्ता दोच्चंपितच्चंपि चूलणीपियं समणोवासयं एवंवयासी हंनोचूलणीपिया अपछियं जावणभंजसि

ततोअहंमज्झमंपुत्तं सातोगिहातोणीणेमि२ तवअग्गउघाएमि जहाजेठपुत्तंतहेवभणइ तहेवकरेइ एवंकणीयंसंपिजावअहि

डाक्टर भाऊ दाजी ... DR. BHAU DAJI

उपासक०
२८

यासेइ तसेदेवे चूलणीपियस्स अभिक्खणं जावपासइ चउच्छिपि चूलणीपियं एवंवयासी हंभो चूलणीपिया अपछियपछिया

जावपरिवज्जिया जइणंतुमं जावणभंजसि ततो अहं अज्ज जाइमा तवमाया भद्दासछवाहि देवतंगुरूजणणी दुक्करकारि

रयं ततो साओगिहाओ णीणेमी तवअग्गओ घाएमि ततोमंससोलए करेमि अदाणभरयंसि अद्दहेमि ततणायमंससोणिएणय

आइंचामि जहाणंतुमं अट्टदुहट्ट अकाले चेव जीवीयाओ ववरोविज्जसि ततेणं सेदेवे चूलणीपिया अभितंविइरमाणं पासइ

चूलणीपियं दोच्चंपि तच्चंपि एवंवयासी हंभो चूलणीपियासदेव जाव ववरोविज्जसि ततेणं तस्स चूलणीपियस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि

एवंवुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जावसमुप्पज्जित्था अहोणं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धि अणारियाइं पावकम्माइं

२९

समायरे जेणं ममं जेट्ठपुत्तं साओगिहाओ णीणेमि ममअग्गओ घाएइ जहाकयं तहाचिंतेति जावगायं आयंचति जेणंममं

मज्झिमं पुत्तं साओगिहाओ जावसोणिय आयंचति जेणंममं कणीयसं पुत्तं साओगिहाओ णीणेमि तहेव जाव आइंचइ जावियणं

इमं ममा माया भद्दासछवाही देवतंगुरुजणणी दुक्करकारयं तंपियणं इच्छइ साओगिहाओ णीणेत्ता ममअग्गओ घाइत्तए तंसेयं खल

खु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए तिकट्टु उट्ठातितेसेविय आगासे उप्पतिए तेणयखंभे आसातिए महताए सद्देणं कोलाहलेणं क

ते तएणं सा भद्दासछवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चूलणीपिया समणोवासए तेणेव उवागच्छइत्ता चूलणीपिया

समणोवासयं एवंवयासी किण्णंपुत्ता तुमे महता सद्देणं कोलाहले कते तएणं से चूलणीपिया अम्मयं भद्दसछवाहिं एवंखलु

अ० ईमाता जी अ० हुं नथी जाणतो | के० कोइक पुरुष आज | आ० क्रोध्यो | ए० एक म० मोटो नि० वीजली सरीखो नीलोत्पल सरीखो म० मुकनइ | ए० इम व० बोल्यो | हं० अरे चू० चूलणी पिता श्रावक | अ० अणप्राथ्यों प्राथनार

अमो न जाणामि केवि पुरिसे आसुरत्ते ५ एगं महं नीलुप्पल असिं गहाय ममं एवं वयासी हंभो चूलणीपिया अपत्थियपत्थिया

वज्जित्ता जइ णं तुमं जाव ववरोविज्जसि अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते अभीए जाव विहरामि तए णं से देवे ममं अभीतं जाव विहरमा

णं पासति २ ममं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हंभो चूलणीपिया तहेव जाव गायं आयंचति अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि

तए णं से देवे ममं अभितं जाव पासइ २ ममं चउत्थंपि एवं वयासी हंभो चूलणीपिया अपत्थियपत्थिया जाव न भंजसि तो

अज्ज जा इमा माता देवगुरु जाव ववरोविज्जसि तते णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि तए णं से देवे दोच्चंपि २९

तच्चंपि ममं एवं वयासी हंभो चूलणीपिया अज्ज जाव ववरोविज्जसि तए णं अहं तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झ

त्थिए ४ अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावकम्माइं समायरति जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जा

व कणीयसं जाव आइंचइ तुब्भेवि यणं इच्छइ साओ गिहाओ जाव णीणेत्ता ममं अग्गओ घाएइ तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गि

ण्हित्तए त्तिकट्टु उट्ठाति से विय आगासे उप्पतिए मए विय खंभे आसादिए महया २ सद्देणं कोलाहले कए तए णं सा भद्दा चूलणी

पियं समणोवासयं एवं वयासी णो खलु दे० केइ पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेमि तव अग्गओ घाएइ एस णं केइ

पुरिसे तव उवसग्गं करेइ एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे तं णं तुमं इयाणिं भग्गव्वते भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरइ तं णं तुमं पुत्ता एयस्स ठाणस्स

आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि तए णं से चूलणीपिया समणोवासए अम्माते भद्दा सत्थवाहि तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसु

नइय० तउइ | त० तेहनुं० थाप स्थानक | आ० आलो० वाइ | प० पाव तपच्चखाण लिनइ पडिकमइ | त० तिवारइ पछइ सेउ० ते चूल० चूलणीपिता | स० श्रमणो पासक श्रावक | प० पहली उ० श्रावकनी प० पडिमा उपसंपदा लेइ विचरइ जावत इग्यारइ प्रतिमा

णेइ २ तस्सठाणस्स आलोति जाव पडिवज्जइ तएणं से चूलणीपीया समणोवासया पढमं उवासगपडिमं उवासगपडिमं

फडीपरे आराधी पाली पाली नइ पछइ | वी० वीस वरस लगइ स० श्रमणोपासक श्रावके नीपरइ व० पर्याय पाली नइ पछइ | ए० इग्यारइ ११ उ० श्रावक पडिमा | आ० यथासूत्र मांहि ज० जिम आ० आणंदनामो श्रावक पडिमा वहि

उवसंपज्जित्ताणं विहरइ वीसं वासइं समणोवासए परियागं पाउणित्ता एक्कारस मं उवासगपडिमाउ आहासुत्तं जहा आणंदो

जा० यावत एग्यारे श्रा० आराधइ श्रावकनी प्रतिमा वहइ त० तिवारइ पछइ से० ते चूल० चूलणीपिता समणोपासक श्रावक ते० ते तेणइ उ० उदार धर्मनिं० घणउं तप नय कर्म | स० सुको लु० लुखउ लु० लुखउ सरीर मं० मांसरहित | अ० अस्थि चावडी वीटी ज० जीम

जाव एक्कारसवि ततेणं से चूलणीपिया तेणं उरालेणं विपुलेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे लुक्खे निम्मंसे अट्ठिचम्मावणद्धे ज

का० कामदेव श्रावकनी परइ | जा० यावत सो० सोधर्म | क० कल्पइ सो० सोधर्म व० वतसक | म० मोटा विमांने नइ विषइ | उ० इसानकुण नइ विषइ | अ० अरुणाभ विमान नइ विषइ दे० देवता पणइ | उ० उत्पन्न थउ

हा कामदेवे जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववण्णे च

चि० पल्योपमनी स्थिति कही तिहां थकी चवइ | से० ते भं० भगवान चू० चूलणीपिता श्रावक ते० ते दे० देवलोकथी आ० आउखो क्षयकरीनइ भवक्षय करीनइ स्थितिक्षय करीनइ चवइ | मा० हे गोतम म० महाविदेह क्षेत्र नइ विषइ सि० सिझसि बुझसी मुकावसी सर्व दुःखक्षय करिसी | चूलणीपिताना नि० निक्षेवो उपासकदसानो तीजो अध्ययन संपूर्ण

त्तारि पलिओवमाइं ठिई सेणं भंते चूलणीपिया ततो देवलोगाउ आउ० गोयमा महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ५ निक्खेवो उवासगदसा

ह० हिवै कहे धर्मस्वामी जंबूप्रते कहे छे जं० जंबू जीम इ० श्री महावीर देवकने मांभल्यो तो तिम हुं कहुं छुं मांहरी मतथकी नथी कहतो | आ० आगइ चोथो अध्ययन वखाणइ छइ जइ० जो भं० हे भगवान स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत श्री महावीर देव भगवंत कीसा एक छइ | आ० धर्मनी आदिना करणहार ति० चतुर्विध सिद्ध तीर्थ नाथ स्वयं तावत जाव यावत संप्राप्त पाम्या मोक्षने विषइ | स० सातमो

णं ततियं अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते २ जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स

अ० अंगना | उ० उपासक दसानां | त० त्रीजा | अ० अध्ययनना | अ० ए अर्थ प० परूप्यो | च० चोथानं हे भगवान | अ० अध्ययन | के० कुण अर्थ | प० प्ररूप्य | त० तिवारे सेउ० ते सुधर्म

अंगस्स उवासगदसाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चउत्थस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ततेणं से सुह

अ० अणगार साधु | ज० जंबू अ० अणगार प्रतइ | ए० इम व० बोलतो हुं कौ० इम ख० निश्च इं जे० हे जंबू | ते० तीण कालइ चउथा आरानइ विषइ ते० तेणे समे सुधर्मस्वामी विचरइ छे समे वा० वाणारसीनामइ न० नगरीनइ विषइ | को० कोष्टक चे० चइत्य वन | जि० जितशत्रु

मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नयरीए कोट्ठए चेइए जियस

उ० नामे राजा | सु० सुरादेव गा० गाथापती व० वसइ छे पण केहवो एक छे ते कहइ छइ | अ० रिद्धिवंत दि० दिप्तवंत अ० कोइ पराभवी न सक इ० छ० हिरणनी को० कोडि नि० धरती मांहि गाड्या छइ धरतीमांन कीना | छ० छ० वर्णनी कोडि बु० व्याज नइ अर्थे कीधा छइ | छ० छ० वर्णनी

त्तू राया सुरादेवे गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते अपरिभूए छ हिरण्णकोडीउ निहाणपत्ताउ छ हिरण्णकोडीउ वुड्ढिपत्ताउ छ हि

को० कोडी प० मांडी जनइ का० जइ हस्तावसइ इत्यादि कोडि सोनइया | छ० दसहजार गायानो एक व्रज ए व्रज बालइ ६०००० साठ हजार गायना थाय छइ ते० तेहनइ | ध० धना भार्या बाल छइ | ते० तीण कालइ विषइ तेणे समयानें विषइ | स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत मा० श्री महावीर देव गा० अनुक्रमें ग्रामानुग्राम विहार करता स० समोसर्या भगवंत वीचरं

रण्णकोडीउ पवित्थरत्ताउ छव्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं धण्णा भारिया तेणं कालेणं २ समणे २ पुव्वाणुपुव्विं गामाणुगामं दुइज्जि

सा० साधु साधवी नइ परवारइ जा० यावत स० बोलारसीनगरीनइ विषइ आव्या समोसर्या | प० परषदा लोक वांदीवा नीकल्यो सु० सुरादेव पण वांदिवा नीकल्यो जेम आणंदनी परइ १२ बार व्रत | प० धर्म अंगीकार कीधो सु० सुरादेव गाथापतिसि गृहस्थ नो धर्म बार व्रतरूप अंगीकार करे | जे० जिम कामदेव बार व्रत उदयवंत तिम सुरादेव पण आगारे अ० जीवाजीव आणे छे जी० अजीव अजीव पुन्यपाप अर्थ सं

रमाणे जाव समोसरिए परिसा निग्गया जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं जहा कामदेवो जाव समणस्स भगव

यर नी रजरा व धर्मा० पदना दिवसाइ प० आ० पडिमा अ० जाव पावत | स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत म० श्री महावीर देवनइ समीपइ ध० धर्मप्रज्ञप्ति कहीते धर्म नी उ० उपसंपदा लेइ नइ विचरइ ति० तिवारइ पछइ त० ते सुरादेव नामा गाथापती | सु० सुरादेव श्रावकनइ पु० मध्यरात्रीनइ स० समयनइ विषइ आधी रात्रे | ए० एक दे० देवता अ० समीपइ

उ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ततेणं तस्स सुरादेवस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतियं

उपासकदं०
३१

फ० धुत्तो आयो | मं० ते देवं देवताए एक नील जी नील कमल जा० यावत् अ० बीजली सरीषो खड्ग लेइनइ | प्र० प्रम व० बोलतो हवो | देवता इ० अरे सो० सुरादेव आ० वक अ० अणचीवसतनो वांछ

ताए णं से देवे नीलुप्पल जाव असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी हंभो सुरा अपत्थियपत्थिया ४

ज० जोत सीलसी लव्रतादिक | जा० यावत् ए० नहीं भं० जो भइतो | त० तो जे० तारो वडो बेटो तारो | गि० घरथकी नी० काढीनइ | त० तारइ अ० आगलि घा० मारीस | ए० इम मं० मांसना सो० सो लोका करइस | आ० आध

जइ णं तुमं सीलाइं जाव ण भंजसि ततो ते जेट्ठपुत्तं साओ गिहाओ णीणेमि तव अग्गतो घाएमि एवं मंससोल्लए करेमि आया

ए० अरनइ कडाह मांहि तलीनइ पचइस | त० तारो गात्र मंसे करी | सो० लोहि जो छिडकी नइ आ० छांटस्युं | ज० जीम तुं० तुं अ० आर्तध्यान रोद्रध्यांने करी नइ | अ० अकालनइ वि० षइ जी० जीवित थी

णभरियंसि अद्दहेमि तव गातं मंसेणय सोणिएणय आइंचामि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीविया

व० व्रतथकी रहित थाइस | ए० इम म० विचलो पुत्र मारीस क० लघु पुत्र मारीस पचइस | ए० एकेकना पांच पांच सो० सोला करी त० तिमज क० करइ | ज० जीम चू० चूलणी पीतानी परे सर्व प्रकार | ए० एतलो नो विशेष | ए० एक २ ना पांच पांच सो० सोला करइ

ववरोविज्जसि एवं मज्झिमयं कणीयसं एक्केक्के पंच सोल्लया तहेव करेइ जहा चूलणीपियस्स णवरं एक्केक्के पंच सोल्लया

त० तिवारइ पछइ से० ते देवता सु० सुरादेवप्रतइ च० चउथीवार पं० इम व० बोलतो हवो | हं० अरे सु० सुरादेव सं० अप्रार्थ्यनो करण हार सो० सोभा रहित | जा० यावत् प० जो तुं व्रत नहीं भांजइ तो | त० तो अ० आज स० सरीरनइ विषइ

तए णं से देवे सुरादेवं चउत्थंपि एवं वयासी हंभो सुरा अपत्थियपत्थिया जाव परिच्चया जाव ण परिच्चयसि ततो ते अज्ज सरीरं

ज० समकालइ | सो० सोले ए० रोग रोग प्रधान सरीर मांहि घालिसि नाखिसं | तं० ते कहइ छइ | सा० सासनो रोग १ का० कासनो रोग २ | ज० जर ३ दा० दाह ४ | कु० पेट मां दिसूल ५ | भ० भगंदर ६ | अ० रस ७ नावादी ७

सि जमगसमगमेव सोलस रोगायंके पक्खिवामि तं० सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ अरिसा ७

अ० अजीरण ते आहार पचइ नहीं ८ | दि० आंखइ सूलमारेइ ९ | सू० माथानो विषसूल १० | अ० आहार उपर रुचि नहीं तथा आहार पचइ नहीं ११ | अ० आंखनइ विषइ वेदना १२ | क० कानने विषइ वेदना १३ | कं० पांमखाज १४ | उ० जलोदर पेट वधइ १५

अजीरए ८ दिट्ठीसूले ९ मुद्धसूले १० अकारिय ११ अच्छिवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंडुए १४ उदरे १५

को० कोढ १६ ॥

जं० जिम तुं० तुं अ० आर्तध्यांने करी रुद्रध्यांने जा० जीव | जी० जीवित थकी रहित थास्यो मारी सकुं तेह तेनि वार पछइ से० ते सुरादेव था पतो वचन कल्पो देवताना जा० यावत् ध० धर्मध्यानमइ विषइ विचरता हवा | इ० सोल रोग नाम

कोढे १६

जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट जीवियाओ ववरोविज्जसि तए णं से सुरादेवे जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ

ए० एम दे० देवता दो० दोयवार त० तीनवार ज० कहइ देवता ए० इम वु० वचन स० कह्यो थको | इ० ए मन अ० अध्यवसाय मनन विषइ उपनउ | अ० अहो ए० पुरुष कोइ | अ० अनार्य | अ० अनार्य बुद्धिनो धणी

एवं देवे दोच्चंपि तच्चंपि भणइ एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी

अ० अनार्य पासे छइ | पा० पापकर्म स० समाचरइ छइ | जे० जेणे मां० हरो बेटो म० मझम ल० लघु पुत्र मारीनइ | जे० जे वली सोल रोग मांहरा सरीर मांहि घालवा वांछइ | ते० तेनइ पकडुं

अणारियाइं पावकम्माइं समायरइ जे णं ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयसं आइंचइ जे वि य इमे सोलस रोगा ते वि इच्छइ मम सरी

तं० ते से० श्रेय ख० निश्चय मु० मुझनइ ए० ए पुरुष नइ गि० झालवो ति० इम कहीनइ ए० देवो दिवारीनइ | उ० उठ्या ति० तिवारइ अ० आकासनइ विषइ उडी गयो | ते० तिणइ ख० भोटो थांभो | अ० फाल्यो कालो नइ मह मोटइ २

रंसि पक्खिवित्तए तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए तिकट्टु उठ्ठाति से वि य आगासे उप्पतिए तेणय खंभे आसातिए महया २

प्रा भाति मजलोदर १५ सासरोग य समं को धो सिसमी सोक रोग १४ कर रोग त्रि सुगा गकवे न समज्य्स तेकर रोग १५ को ढ ते वीतराग वचन अश्रद्धत्वा सकोढ रोग १६ इति श्री सोल रोग ना घरोग विचार समाप्तं ॥

३१

उपासक० ३२

स० सद्द करीनइ को० कोलाहल शब्द करइ कीधो तव तिवारइ पछइ | सा० ते धन्ना नामइ भा० भार्या को० कोलाहल शब्द कणी सांभलीइ पछइ जिहां छि तिहां आवइ विय अधरे धारीनइ धरती मीसरी | जे० जी स्वामि म० सुरादे० देवस० समणोपासक श्रावक छइ | ते० तिहां आवे आवी

सद्दं णं कोलाहलं करेति तए णं सा धण्णा भारिया कोलाहलं सोच्चा णिसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए तेणेव उवा

गच्छइ २ त्ता एवं वयासी किं णं देवाणुप्पिया तुब्भेणं महया २ सद्देणं कोलाहले कए तए णं से सुरादेवे सा धन्नं भारियं एवं वयासी

त० तिवारइ पछइ सो० ते सुरादे० स्रावक सुरादेव धन्ना नामा भार्या प्रतइ | ए० इम बोलतो हवो | ए० इम बोल्या हे० देवानुप्रिया | कि० कि० कि० कारणे म० मोटइ २ शब्दइ कोलाहल शब्द कीधो | जा० जाव तं० हुं मारी वाल् पुत्री पुत्री वे तथा लघु पुत्र ते हणे | न० नथी जाणु | के० कोइक पु० पुरुष तिम जकोइ करइ कछउ नेउपसर्ग कीधो | ज० जीम चु० चुलणीपि० पिता नी परइ | ध० धन्ना नामे स्त्री ज० कहइ

एवं खलु देवाणुप्पिया न जाणामि के वि पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं नो खलु देवाणु

को० कोइ पुरुष पापीनु कोइ रनसक इ कोइ पुरुष तुम्हारइ सरीर इ | जा० समकालइ सो० सोलरोग | नथा वेदना पालीनइ सक इ ए० ए के० कोइ पु० पुरुष | तु० तुम्हनइ उ० धर्मथी चुकावा उ० उपसर्ग कि कइ छइ | से० सर्व पाछलो सर्व इ धकार कु० चुल

पिया तुब्भं केइ पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायंके पक्खिवइ एस णं केइ पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ सेसं जहा चुलणी

णी पीता नी परे जाण वो न० नहीं कहइ | ए० इम क० तिम ब० चुलणी पीता नी प रइ इग्यार प्रतिमा वह सुरादेव श्राव कनि० सं थाको ता | जा० यावत सो० सोधर्म देवलोके तिमज | अ० अरुणकान्त नाम वे० विमान न इ विषइ देव दे वतापणइ उ० ना वन उपनो सुरादेव श्रावक

पियस्स तहा भणइ एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकंते विमाणे देवत्ताए उववन्ने

च० च्यारि प० पल्योपमनी सि० स्थिति छइ | म० महाविदेहइ क्षेत्रनइ विषइ | सि० सिझसी कर्म मुकावसी कर्म पकी बु० बुझसी प० परिस० सर्व इह बनो अंतर करस्ये | स० ए० इम ख० निश्चइ जं० हे जंबू स० समण तपस्वी तं० भगवंत म० श्री महावीर देव कि सारु क छइ आ० धर्मनी आदि नो करणहार ति० तीर्थना प्रवर्त्तावणहार

चत्तारि पलिउवमाइं ठिइ महाविदेहे वासे सिज्झिहिति निक्ख० बुज्झिहि० सद्दु एवं खलु जंबू समणेणं ३ आदिगरेणं तित्थ०

३२

जा० जावत संप्राप्ति जे मोक्षनइ विषइ थया | च० चो० अ० अध्ययन | उ० उपासक द० साने | अ० ए अर्थ प० प्ररूप्यो तिम ति० इम बेमि व० बोलुं चोथो अध्ययन सम्पूर्ण इति श्री सुधर्मा स्वामी जंबू प्रतइ कहइ छइ हे जंबू जीम इ श्री महावीर देवकनइ सांभल्यो छइ तो तिम हुं तुझ कहुं छुं स्वेरक छइ कुमारी मनथकी नथी कहतो अतेरो पांचमो अध्ययन बोलसीनि कहइ छइ

जाव संपत्तेणं चउत्थस्स अज्झयणस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि चउत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ४

पहिलो जं० जंबूपी ने केहेत्य वान स० समण तपस्वी भ० भगवंत श्री महावीर देव | ते किसा रुक छइ आ० धर्मनी आदि नो करण हार ति० चतुर्वि ध सिध तीर्थ नो प्रवर्त्तावणहार जा० यावत सं० सं प्राप्त पाम्यो मोक्षनइ विषइ | स० सातमा अं० अंगना उ० उपासक दशाना चो० चोथो अध्ययन ना भा वक संति अ० अर्थ कह्या | प० प रूप्या

पंचमस्स णं भंते समणेणं ३ आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं चउत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते

पं० पांचमा भं० हे भगवान प्रज्य | अ० अध्ययन नां के० कुण अर्थ प० प्ररूप्या | तं० तिवारइ पछइ सो० ते स० सुधर्मा स्वामी अणगार साधु | जं० जंबू अण गार प्रतइ | ए० इम बो० लता हवा | ए० इम ख० निश्चे जं० हे जंबू सांभल स० धर्म स्वामी कहइ | ते० ते काल च उ था आरा नइ वि षइ

पंचमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू तेणं काले

ते० तीणसमे स० धर्म स्वामी जयवंता विचरे ते समय | आ० आलंभिका नाम नगरी होती स्वचक्र परचक्रना भयकरी रही तथा नथान कर संपूर्ण छइ | सं० संख वन नाम व० वन उ० उद्यान वाग १८ भार वनास्पती करी सहीत छइ तेवाग जि० जित सत्रु नामे रा० राजा आलंभ | क नगरी नै विषे कं चूलशतक नामे गा० गाथापती प० वसे छइ रहे छे सर्व अधिकार पाछलो कही लीजइ ते वि षमे ठी समान छइ चुल सतक गा० केहवो छइ

णं तेणं समएणं आलंभिया नामं नयरी होत्था संखवणे उज्जाणे जियसत्तू राया चुल्लसयए नामं गाहावई परिवसइ

अ० अद्धिवंत स० दिसवंत जा० यावत अ० कोइ सराजवी न राकइ पंजीन सकइ | छ० छ सुवर्ण नी को० कोडि नि० निधान भारत छइ धरती मांहि | छ० छ वृद्धि | को० कोडि कु० व्याजनेअर्थे छइ | छ० छ सुवर्ण नी को० कोडि कु० व्याज नेअर्थे छइ छ० छ सुवर्णनी को० कोडि पवि० घर वाखर छइ व्यवहार केरा सानइया | छ० छ गोकुल दस हजार गायनो

अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ हिरण्णकोडि वुड्ढिपउत्ताओ छ हिरण्णकोडि पवित्थरपउत्ताओ छ वया दस

एक गोकुल एहवा छे व्रत गो कुल छइ ६०००० साठ हजा र गायां छइ चलसतकनइ | ब० बहुला नामे भा० भार्या | ते० तिण कालइ चो० तीण समया नै विषइ स० श्रमण तपस्वी भ० भगवंत महावीर देव पु० पुर्वानुपुर्वी गा० गांमाउ ग्राम नै विषइ सु० सुखे सुखे विचरता थका आवे आलंभका नगरी नइ विषइ संखवाग नै वि | जा० यावत स० समोसर्या स० परषदा वांदवाने कली चलसतक पणि वांदवाने कल्यो

स गोसाहस्सिएणं वएणं बहुला भारिया तेणं कालेणं २ समणे ३ पुव्वाणुपुव्विं गामाणुगामं सु० ६५ जाव समोसरिए परिसा निग्ग

उपासक०७
२१

या जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ सेसं जहा कामदेवे जाव धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तएणं तस्स चूलणीप

स्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अंतिए जाव असि गहाय एवं वयासी हंभो चूलणीसए जाव ण भंजसि तो ते अज्ज

जेठ पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि एवं जहा चूलणीपियं तहेव एक्केक्के मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि तएणं से चू

लणीसए जाव विहरइ तएणं से देवे चूलणीसयस्स चउत्थंपि एवं हंभो चूलणी जाव ण भंजसि तो अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहा

णपउत्ताउ छ वुड्ढि छ पवित्थर पउत्ताउ ताओ साओ गिहाओ नीणेमि आलंभियाए णगरीए सिंघाडग तिय चउक्क चच्चर चउम्मुह मह

महापहेसु सव्वओ समंता विप्पइरामि जहाणं तुमं अट्ट दुहट्ट अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि तएणं से चूलणीसए तेणं देवे

णं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ तएणं से देवे चूलणीसए अभीए जाव पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे

तहेव जाव ववरोविज्जसि तएणं तस्स चूलणीसयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतीए पत्थी

ए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धि अणारियाइं पावकम्माइं समायरे जेणं मम जेट्ठं पुत्तं

साओ गिहाओ नीणेइ मम अग्गओ घाएइ जहा कयं तहा चिंतेति जाव गायं आयंचइ तहा चिंतेइ जाव कणीयसं आइंचइ जाओ

वि य णं इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढि छ पवित्थर पउत्ताओ ताओ वि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलंभिया

ए नगरीए सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्ति कट्टु उट्ठाइ ते जहा सुरादेवे तहेव भारिया पुच्छइ

DR BAHADUR ... (library stamp)

स० सिवए स्थाइ के ता अधिकार सर्व चूलणीपिता नी परइ जा० यावत सो० सोधर्म नामा क० देवलोक नै विषइ — अ० अरुणसिट्ठि विमा० विमान नै विषइ देवता पणइ उ० उपनो — च० च्यार प० पल्योपम नी ठि० स्थिति — से० सेष जा० यावत

उपासक० ३४ — तं देवं कं देइ मे संजहा चूलणीपियस्स जाव सोहम्मे कप्पे अरुणसिट्ठे विमाणे देवत्ताए उववणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिइ सेसं जाव

म० महाविदेह क्षेत्र नइ विषइ सि० सीझसी बुं० बुझसी मु० मुकासी प० सीतली भूत थासी — स० सर्व दुःखनो अंत करस्यइ मोक्ष नै विषे जासी। ए० इम खलु निश्चइ जं० हे जंबू स० श्रमण तपसी भगवंत श्री महावीर देवइ कि० सा० कहइ — आ० धर्मनी आदिना करणहार जा० जा० यावत उ० उपासक दसा नो पं० पंचम अ० अध्ययनस्स अ० इति श्री सुधर्मस्वामी — जं० जंबू प्रतै कहइ छइ हे जंबू जीम मइं श्री महावीर देव कहे नै

महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥ निक्खेवओ ॥ पं० अ० स० ॥ एवं खलु जंबू समणेणं ३ आदिगरेणं जाव उवासकदसाणं पंचमं अज्झयणं

म० जल्पो दं० तिम कुं० उपश्रुत कं० मा० रामतं अ० कीन अथक हतो पं० च अध्ययन समाप्त आगे छठी अ० — जं० जो जं० हे भगवान स० श्रमण तपसी भगवंत महावीर देव अ० धर्मनी आदना करणहार — जा० यावत सं० संप्राप्त पाम्यां मोक्ष नइ विषइ पं० पांचमा उ० उपासक दसानो अ० ए अर्थ पं० परूप्या — छ० छठा

सम्मत्तं ५ ॥ थीन कहइ छइ ॥ जइणं भंते समणेणं ३ आदिगरेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पं० छट्ठस्सणं

भं० हे भगवान अ० अध्ययन का के० कुंण अरथ प० परूप्य — त० तिवार पछइ से० ते सुधर्मा अ० अणगार — जं० जंबू अ० अणगार प्रतइ — ए० इम बोल नो हवो — ए० इम खलु निश्चइ जं० हे जंबू — ते० तिण काल ते० ती समइ — कं० कंपिल्लपुर नामा नगर

भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पं० तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू तेणं कालेणं २ कंपिल्लपुरे नामं न

होतो — स० सहस्राम्रवन उद्यान — पु० पृथ्वी सिलापट्ट छइ — जि० जितसत्रु नामे राजा — कुं० कुंडकोलिक नामा गा० गाथापती व० वसइ छइ — पू० पूसा नामे भार्या तेहनी — छ० छ हि० सोनानी को० कोडी नि०

गरे होत्था सहस्संबवणे उज्जाणे पुढवीसिलापट्टए जियसत्तू राया कुंडकोलिए गाहावई परिवसइ पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ नि

निधान प्र० मलइ — छ० छ हि० सोनानी को० कोडी वु० व्याज मइ अरथइ — छ० छ हि० सोनानी को० कोडी प० घर वाखरइ पकोडी सो नइया — छ० छ व्रज छइ द० दस सहस्र गायना व्रजो एकेको कलइ एक वाडउ छइ ६०००० साठ हजार गाया — ते० तेण काल ते० तेण समइ — स० समण भगवंत महावीर देव पु० अनुक्रमी

हाणपउत्ताओ छ हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ छ हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ छव्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं तेणं कालेणं २ समणे ३ पुव्वाणु०

गा० गामानुगाम स० सुखे सुखे — जा० यावत कंपिल्लपुर नामा नगर नै विषइ स० भगवंत समोसर्या प० धर्मदेसना कही त० वार सदेन एक करी आ० आपणी आतमा भा० भावता थका वि० विचरइ छइ — प० परषदा वांदीवा नीकली — स० श्रावक नो धर्म प० पच्चक्खाण अंगीकार करइ — जे० जीम कामदेव नीवी धरमें एवं श्रावक

गाम० दूइ० जाव समोसरिए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ परिमाणिपया सावयधम्मं पडिवज्जइ जहा कामदे

तो अधिकार स० सर्व वगत मतां कहवी — जा० यावत प० साधु ने प्राते लाभता थका आहार पाणी वि० विचरइ कुंडकोलीयो श्रावक — त० तिवार पछइ से० ते कुं० कुंडकोलियो श्रावक अ० अन्यदा प्रस्ताव नइ विषइ — प० पाछिलइ पुहरइ थयइ थकइ वासित मति — जे० जी० — अ० अशोगवाडी नइ विषइ

वो मम्मेवं सुन्नत्ता जाव पडिलाभेमाणे विहरइ तते णं से कुंडकोलिए समणोवासए अन्नया कयाइ पच्चावरण्ह कालसमयंसि जेणेव असोगवणि

जे० जीहां पु० पृथ्वी सिला प० पट्ट छइ — ते० तिहां उ० आवे आवी सीला नइ उपरइ — णा० नामांकित मुं० मुंदडी आवी टीउ० मुंकी आपणी उत्तरासङ्ग — पु० पृथ्वी सि० सिलापट्ट नइ उपरि ठ० थापी नइ — स० भ० ता — भ० भगवंत म० महावीर देवनइ

या जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ २ णाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स

अं० समीपइ ध० धर्म प० प्रकपीत — उ० अंगीकार करीनइ — अ० धर्म ध्यान रूप भगवंत नो धर्म सामाइकादिक अंगीकार करी विचरइ त० तिवार पछइ से० ते कुं० कुंडकोलीयो श्रावक सामाइक लेतनइ कंठनइ समाइक करी बइठउ तिसमयानै विषइ एक देव देवता अं० समीपइ प० प्रगट हवउ देवता — ते० तिवार पछइ से० ते देव देवता — णा० नाम किं मुद्रा

अंतिए धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तते णं तस्स कुंडकोलियस्स एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था तते णं से देवे णाममुद्द

उ० उतरासङ्ग — पु० पृथ्वीसीला प० पट्टथकी गिण्हइ लेइ नइ — स० घूघरमाली नाद सहित घूघरी रणरणाट करे बीजइ अं० आकासे रह्यो लीनइ बोलइ — कुं० कुंडकोलिया स० श्रमणोपासक श्रावक प्रतइ एहवो कहइ तो देवता — हं० अरे कुं० कुंडकोलिया सांभली

गं च उत्तरिज्जगं च पुढवीसिलापट्टयाओ गिण्हइ २ सखिंखिणियं अंतलिक्खपडिवन्ने कुंडकोलियं समणोवासयं एवं वयासी हंभो कुंडकोलिया

सुं० भलउ धर्म दे० हे दे वानुप्रिया — गो० गोसालो नामे मंखलि पुत्र तेहनो — ध० धर्म परवली पुत्र इक हतु तेहनी धर्म नि० नथी उ० उठवा आदि कं० कि आइ छइ तेहनी — क० कर्म ति० मनादिक — ब० बलसरी रइ वंछइ — वी० वीर्य हती जीवनो — पु० पुरुषाकार अ० भिमानी हतो पुरुष

सुंदरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती नत्थि उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेति वा वीरिएति वा पुरिसक्कारप

नेउट्ठाणइवा कारकनाकर्म ... | नि० नियतायासवभावा सर्वभाव उठतिमसर आदीकरानी ... | नो ... भगवंत | भ० श्रीमहावीरनी कही धर्ममांहि श्रम... | अ० छे उत्थानकर्म ... | ...

इकम्मेतिवा नितियासव्वभावा ।। मंगुलीणंसमणस्स भगवतोमहावीरस्स धम्मपण्णत्ती अत्थिउट्ठाणेतिवा परक्कमेतिवा

सर्वजीव उठाणादिक ... | अ० अनित्य स० सर्व भावा | तं० तिवारइ ... कुंडकोलिया ... | ए० इमबोल्यो ... | ...

बलेतिवा वीरिएतिवा पुरिसाकारपरक्कमेतिवा अणितितिवासव्वभावा ततेणंसेकुंडकोलिए तंदेवं एवंवयासी जइणंदेवाणुप्प०

सुं० भलो गोसालो नामे मं० मंखलि पुत्रनो | ध० धर्मनि... | ... | ... | ... | स० श्रमण भगवंत म० श्री महावीरनो धर्म ...

सुंदरीणंगोसालस्समंखलीपुत्तस्स धम्मपण्णती नत्थिजावउट्ठाणेतिवा जावनितिवासव्वभावा मंगुलिणं समणस्स भगवतो

ध० धर्मप्र... | अ० छइ उ० उठाणादिक बल वीर्यादिक | जा० यावत् ... सर्वभाव | ... | प्रधानदेवसंबंधी ... कांति ...

धम्मपण्णती अत्थिउट्ठाणेतिवा जावअनितियासव्वभावा तुमे देवाणुप्प० इमेएयारूवे दिव्वादेविड्ढी २ दिव्वादेवाणुभावे किण्णालद्धे

ना० ... | किं० स्यइ करी ... | ना० यावत् ... | ... | जा० यावत् पु० पुरुषाकार ...

किंपावते किण्णअभिसमण्णागए किंउट्ठाणेणं जावपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदाहुंअणुट्ठाणेणं जावपुरिसक्कारअपरक्कमेणं

तं० तिवारइ ... | ए० इम ... | ए० इम ... देवानुप्रिया | म० मइ ... | अ० अनुत्थानविना जा० यावत् | अ० अपुरुषाकार पराक्रम ...

ततेणंसेदेवे कुंडकोलिए एवं० एवंखलुदेवाणु० मएइमेयारूवेदिव्वादेविड्ढी २ अणुट्ठाणेणंजाव अपुरिसकारपरक्कमेणंलद्धाए

अ० ... | जे० ... जीव ... | उ० उठाणादिक क्रिया नथी | जा० यावत् परा० ... | ते० ... देवानुप्रिया | अ० ... देवानुप्रिय | तु० ...

ता अभिसमण्णागया जेसिंणंजीवाणंणत्थि उट्ठाणेतिवा जावपरक्कमेतिवा तेकिंणंदेवा० अहणंदेवा० तुमेइमेएयारूवेदी

दि० देवतानी ... | उ० अनु... | जा० यावत् ... | त० ... | सुं० भलो गो० गोसालो मं० मंखलिपुत्रनइ | ध० धर्मप्रज्ञप्ति नथी ... | उ० उठाणा ... | जा० यावत् ...

व्वादेविड्ढी २ उट्ठाणेणं जावपरक्कमेणवा ततोजंवदसि सुंदरिगोसालमंखलीपुत्तस्स धम्मपण्णतिनत्थी उट्ठाणेतिवा जाव णि

स० सर्वभाव ... | मं० ... धर्म स० श्रमण भगवंत म० श्री महावीरदेवनउ | ध० धर्मप० ... | अ० ... | जा० यावत् ... | तं० ते ... | ते० ति...

तिवा सव्वभावा मंगुलीणंसमणस्स भगवउमहावीरस्स धम्मपण्णति उट्ठाणेतिवा जावअणीतिवा सव्वभावा तंतेंमिच्छा तते

त० तिवारइ से० ते दे० देवता कुं० कुंडकोलिक स० श्रमणोपासकनें ... | ए० इम ... | सं० संका ... | ... | जा० यावत् ... | नो० नही ...

णंसेदेवे कुंडकोलिएणंसमणोवासएणं एवंवुत्तेसमाणे संकिते कंखिए वितिगिच्छसमावन्ने जावकलुससमावन्ने नोसंचाएति

कु० कुंडकोलिया | स० श्रमणोपासक ... | किं० किंचितमात्र उत्तर देवी असमर्थ ... | णा० नामा ... | उ० उत्तरीय ... | पु० पृथ्वीसिलापट्टक ... | जा० जिण दिस ...

कुंडकोलियस्स समणोवासस्स किंचिविपामोक्खमाइक्खित्तए णाममुद्दगंच उत्तरिज्जंच पुढविसिलापट्टए ठवेतिठवेत्ता जामेवदि

पा० ... | ता० तीणइ दिस प० ... | ते० तीणकाल ... | सा० समोसर्या भगवंत श्री महावीरदेव | त० तिवारइ ... कुंडकोलीक | इ० ... | ह० ...

संपाउब्भूए तामेवदिसंपडिगए तेणंकालेणं २ सामीसमोसड्ढे तएणंसेकुंडकोलिए इमीसेकहाएलद्धट्ठे हट्ठतुट्ठ जावदियए

जं जीम का० कामदेव श्रावक तेम वांदवा तिम कुं० कुंडकोलियो पिण आयो जा० यावत् ५० पर्युपासना सेवा करइ छइ | ध० धर्मकथा कहो नाम लेइ कुं० कुंडकोलियो कहवो | स० श्रमण तपस्वी भगवंत महावीर देव बोलावइ कुं० कुंडकोलिक श्रमणोपासक श्रावक प्रते एम कहइ

उपासक० ३६

जहा कामदेवे तहा णिग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ धम्मकहा कुंडकोलिया इति समणे भगवं कुंडकोलियं समणोवासयं एवं

से० निश्चय कुं० कुंडकोलीया | क० कालि पू० पाछिला पोहोर समय नइ विषइ | अ० आसोक वाडीका नइ विषइ एक देवता | अं० समीप प्रगट हो देवता | त० तिवार पछइ से० ते देव नाम मुद्रा

से णूणं कुंडकोलिया कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था तए णं से देवे णाममुद्दं च

तं० ते वे० नि० यावत् पाछो गयो देवता से० निश्चय कुं० कुंडकोलीया श्रावक | अ० ए अर्थ समर्थ छइ हंता स्वामी सा० साचो छइ | तं० तुम्हे धन्य छइ धर्मध्यानी जिम कामदेव श्रावक | अ० अहो आर्यो स० श्रमण भगवंत महावीर देव साधु साध्वी प्रते कहइ

तं चेव जाव पडिगए से णूणं कुंडकोलिया अट्ठे समट्ठे हंता अत्थि तं धन्नेसि णं तुमं जहा कामदेवे अज्जो त्ति समणे भगवं महावीरे

स० श्रमण नि० निग्रंथ साधु प्रतइ | नि० निग्रंथी साध्वी प्रतइ श्री महावीर देव आमंत्रीने इतेला बोल बोलता हुवा | ज० जो तु० तुम्हे अहो साधो अहो आर्य गृहस्थ वासमें रहता थका | अ० अन्यतीर्थी | अ० अर्थे करी | हे० हेतइ करी

समणे निग्गंथे य निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी जइ ताव अज्जो गिहिणो गिहिमज्झावसंता अण्णउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य

प० प्रश्न करी | का० कारणे करी | वा० वाकर णीकरण करी | नि० निरुत्तर करवा वाकी | स० तुम्हे सम्यगवादी | अ० अहो स० समणो साधो | नि० निग्रंथ ग्रंथ रहित | दु० बारह अंगो

पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेंति सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गंथेहिं दुवालस

गणिपिटक | अ० भणता पुण्य | अ० अन्यतीर्थी | अ० अर्थे करी | नि० निरुत्तर करी जा० यावत् | स० तिवार पछी स० श्रमण साधु साध्वी | स० श्रमण तपस्वी

संगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अण्णउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसिणवागरणे करित्तए तए णं समणा निग्गंथा समणस्स

३६

भ० भगवंत श्री महावीर देव नो वचन सांभली कुंडकोलीया नीच सम्यकरी त० तहत करी मानइ ए० ए अर्थ वि० विनय करी नइ प० सांभली नइ | त० तिवार पछइ से० ते कुं० कुंडकोलिया | स० श्रमण भगवंत श्री महावीर देव प्रते वं० वांदी नमस्कार करइ | प० प्रश्न पुछइ

भगवतो तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ तते णं से कुंडकोलिए समणं भगवं वंदइ णमंसइ पसिणाइं पुच्छइ

अ० अर्थ ग्रहइ | जा० जेहि दिस थी आव्या हुंता | ता० तिणहि दिसि पाछो गयो | स० श्रमण भगवंत बाहिर जनपद देस नइ विषइ | वि० विहार करइ | त० ते कुं० कुंडकोलीया

अट्ठमादियइ जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए समणे भगवं बहिया जणवयविहारं विहरइ तस्स कुंडको

श्रावक ब० घणा व्रत सील | सी० सील व्रत आदिक पालीने गुण व्रतादिक | प० पच्चखाण | पो० पोसह उपवास करइ | अ० आतमा भावतां थकां | चो० चउदस वरस | वि० विलंघ्या

लियस्स बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोदस संवच्छराइं वितिक्कं

ताइं गया | प० पनरमा वरस नइ विषइ | अं० अंतरइ वर्त्तता थकां | अ० एक दा प्रस्तावे कामदेवनी परइ | पु० मध्यरात्रिना समय ने विषइ | ध० धर्म जागरिका करता

ताइं पन्नरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अन्नया कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागर

थकां | ए० एतादृस रूप | अ० अध्यवसाय उपनो | चि० चिंता उपनी प० प्रार्थना म० मनोगत | सं० संकल्प विचार उपनो | ए० इम खलु निश्चय बहु ध० यावत् | स० आपणा कुटुंब नइ आधार रूप छइ

माणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं कुंडं जाव सदस्सवि य णं आधारे

तं० तिवार कुं० घणा घात करीनइ | अ० अहो नहीं स० समर्थ | स० श्रमण भगवंत नइ | अं० समीप धर्म प० धर्मपणो लेते | उ० अंगीकार करी नसकुं | तं० ते भणी से० श्रेय स्व निश्चय म० मुझनें

तएणं वरवेणंवणं अहं नो संचाएमि समणस्स ३ अंतियं धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए तं सेयं खलु मम

क० कहि आ० यावत् ज० सातइ जा हवि० विपुल अ० सपवाणीला इम साधु अ० अनगार | ज० जीम कामदेव यणीपरे त० तीम | जे० वडा पुत्रने घर नीविषइ थापीनी | त० तिम पोसह साला नइ विषइ | जा० यावत् ध० धर्म पन्नती कहि गते | उ० पुलसंपदा लेइनइ

कहं जाव जणेतेति विपुलं अणगारा जहा कामदेवो तहा जेठ पुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपणती उवसंपज्जि

वि० विच रइ | ए० इम ए० इग्यारइ उ० श्रावकनी पडिमा वहि नइ | त० तिम ज० आ० यावत् अ० सा अवस्था अणसण करी सो० सौधर्म देवलोकइ अ० अरुणाभ विमाननइ विषइ देवता हुवो गोतम स्वामी पूछि प्रभु कहि गया चवी महाविदेहि ...

त्ताणं विहरइ एवं इक्कारस उवासग पडिमाउ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिति उवास

देवता नो आउखो पूरो करी देवतानो ... महाविदेह क्षेत्रनइ विषइ ... अवतार ... उत्तम कुलनइ विषइ ... संसारनो अंतकरसी मोक्ष जासी उ० उपासक दसानो ... धर्मस्वामी जंबूस्वामी प्रते कहि छै ... श्री महावीर देव ... तिम कहुं छुं ... इति श्री छठो अध्येन संपूर्ण हुवो आगे सातमो अध्येन कहि छइ जंबू प्रते ॥

दसाणं छट्ठमज्झयणं समत्तं ६

ज० जइ भं० भगवन् स० श्रमण भगवंत श्री महावीर देव किं साहु कहि छइ | आ० आदनो करणहार ति० तीरथनो करता जा० यावत् सं० संप्राप्त मोक्षनइ विषइ तिण इम ज० कइ विषइ | छ० छठा अ० अध्येन नइ विषइ अ० ए अर्थ प० परूप्यो ... आगे सातमा अध्येन ... कहि छइ ॥ | स० सात

जइ णं भंते समणेणं ३ आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।।।। सत्तम

मा० सात भगवान | अ० अध्येनना | के० कुण अर्थ प० परूप्या | त० तिवारे से० ते स० सुधर्म अ० अनागार | जं० जंबू अ० अनगारनइ | ए० इम व० बोलता हुवा ए० इम ख० निश्चै जं० जंबू | ते० तिणइ कालइ ते० तीणइ समयनइ विषइ | पो० पोला

स्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू तेणं कालेणं २ पोलास

पु० पुर नामि न० नगर | स० सहस्राम्रवन उ० उद्यान | जि० जितसत्रु राजा | त० तीहां पो० पोलासपुर न० नगरनइ विषइ कुंभार | स० सद्दालपुत्र नाम | कुं० कुंभकार वसइ छइ | आ० गोसालानो श्रावक छइ

पुरनामं नगरं सहस्संबवणे उज्जाणे जियसत्तू राया तत्थ णं पोलासपुरे नगरे सद्दालपुत्ते णामं कुंभकारे इही आजीविओवासए परिवसइ

आ० गोसालानो मत तेनइ विषइ प्रवीण चतुर छइ | अर्थ सामलि तिणइ ग० ग्रह्यो अर्थ पु० पुछ्या कीधा | वि० निरणय कीधो | अ० आण्या छइ तेह | अ० हाड मांहि मींजी सा तेहना धर्मनइ राग ली सद्दालपुत्रनी | आ० गोसाला मतनो धर्म तिण गोसालनो पंथ धर्म हि तकीधो

आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो आजीविय

नी धर्म सार तत्व छइ मत परमार्थ ते ह धर्म गोसालानो | से० बीजा धर्म अनर्थ जाणवा छइ | ए० इम आ० गोसालानो धर्मनइ विषइ रक | अ० आपणी आतमनि भाव ता थकाथि विचरइ | त० तेहस० सद्दाल पुत्रनइ | आ० गोसालानो श्रावक

समए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे त्ति एवं आजीयसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासग

ए० एक हि० सोनानी कोडी नि० निधानमां छइ | व० एक सोनानी कोडी व्याजइ ए० एक कोडि नइ घरवखरी छइ एक ब्रज छइ दस हजार गायनो एक ब्रज छइ १०००० दस हजार गायो छै सद्दालपुत्रनइ | त० तेह सद्दालपुत्रनइ अ० अग्निमित्रा नामे ना० भार्या छइ | त० तेह

स्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता वड्ढिपउत्ता पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं तस्स णं अग्गिमित्ता णामं भारिया तस्स णं

स० सद्दालपुत्रनइ | आ० गोसालानइ श्रावकनइ | पो० पोलासपुर नगरनइ | ब० बाहिर पं० पांच सय कुं० कुंभारनी सद्दालपुत्रनी हाट | हो० छइ त० ते ह० घणी | पु० पुरुष | दि० दीधी छइ आ०

सद्दालपुत्तस्स आजीविउवासयस्स पोलासपुरस्स णयरस्स बहिया पंच कुंभकारावणसया होत्था तत्थ णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्त

जीविका ली | क० दीन प्रतइ कीजइ छइ व० घणा क० करवा | पि० थाटुड्या पां लीका ठाम | घ० घडा | अ० अधघडा | क० कलसा | अ० वाली मांहिली जे० गेवूलकको ठी | उ० उष्टिकाकार ते लघुतघा

वेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिंजरए य जंबूलए य उट्टियाओ य

लेवाना ठाम क० करइ इत्यादि | अ० अनेक जातनां ब० घणा पुरुष पासे करावइ | दि० तेहने वाकरी नइ ते भोजनादि आजी वका दइनइ | क० दिन दिन प्रतइ करावइ छइ तेपासे व० घणा घडा क० करावइ | का० कल्या वस्तु उ० उष्टिकाकार तेल घृत घालवाना ठाम | रा० राजमार्गनइ विषइ | वि० वेचतो थको

करेंति अन्ने य से बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य जाव उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्ति

उपासक०
३८

व्यापार करतो थको विचरइ छइ | तिवारइं पछइ ते सद्दालपुत्र | आ० गोसालानो श्रावक | अ० एकदा | प० पाछला पहुर ना समय नइ विषइ | जे० जिहां अ० असोक वाडि छइ

कप्पेमाणे विहरंति तते णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अण्णया कयाति पच्चावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया

ते० तिहां उ० आवे आवीनइ | गो० गोसाला मंखली पुत्रनइ | अं० समीपइ ध० धर्म संबंधीनी प्रज्ञप्ती | उ० अंगीकरी नइ वि० विचरइ छइ | त० तिवारइ त० ते स० सद्दाल पुत्र पुत्रनइ | आ० गोसाला मतनी

तेणेव उवागच्छति २त्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरति तते णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीवि

ए० एक दे० देवता अं० समीपइ पा० प्रगट हवो | त० तिवारइ से० ते दे० देवता | अं० आकासमा र० रह्यो | सं० घुघरीवा अनइ | जा० यावत् प० वस्त्र | स० सद्दाल पुत्र | आ० गोसाला ना श्रावकप्रते

ओवासगस्स एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणीयाइं जाव परिहिते सद्दालपुत्तं आजीविओवासगं

ए० इम क० कहइ | ए० आवसइ दे० देवानुप्रिय क० कालि | इ० इहां म० माहण | उ० उपनो ज्ञान दर्शन धरता छइ | ती० अतीत अनागत वर्तमान काले तेहना जाण छइ | अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली

एवं वयासी एहिति णं देवाणुप्पिया कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुप्पन्नाणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू

स० सर्वदर्शी | ति० त्रिलोकना पूजनीक छइ | स० सदा देवता मनुष्य असुरादि | अ० अर्च नीक | वं० वंद नीक | पू० पूज नीक | स० सत्कार देवइ छइ

सव्वदरिसी तिलोक्कवहियमहियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे कल्लाणं मंगलं

देवयं चेतियं जाव पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसंपयासंपउत्ते तं णं तुमं वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि पडिहारिएणं पीढफलग

ते० तिवारइ | आ० गोसाला ना श्रावक नइ | ते० ते देवे | ए० इम कहइ छइ | अ० अध्यवसाय उपनो विचारणा | म० माहरो धर्माचार्य

सिज्जासंथारएणं उवनिमंतेज्जाहि दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति २ जामेव दिसं पाउब्भूते तामेव दिसं पडिगए तते णं तस्स सद्दाल

ध० धर्मोपदेसक | गो० गोसालो मंखली पुत्र | से० ते ह माहण | उ० उत्पन्न ज्ञान दर्शन तेह ना धरणहार छइ | जा० यावत् सत्य कर्म सहित

पुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिते ५ समुप्पन्ने एवं खलु ममं धम्मायरिए

धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते से णं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपयासंपउत्ते से णं कल्लं इहं हव्वमा

ग० आवसे | त० तिवारइ पछे अ० हुं वं० वांदिसु | जा० यावत् प० पर्युपासना सेवा करइ | त० तिवारइ ते सद्दाल पुत्र आ० गोसालो मती | स० समवसर्या

गच्छिस्सति तते णं अहं वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि पडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि तते णं कल्लं जाव जलंते समणे भगवं

महावीरे जाव समोसरिए परिसा निग्गया जाव पज्जुवासति तते णं से सद्दालपुत्ते आजीवि इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे

भ० भगवंत म० श्रीमहावीर | जा० यावत् विचरइ छइ | त० ते जाउं | वं० वांदुं | जा० यावत् प० पर्युपासना सेवा करुं | ए० इम सं० मन मांहि विचार

भगवं महावीरे जाव विहरंति तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव पज्जुवासामि एवं संपेहिति २ ण्हाते जाव पायच्छित्ते सुद्धे

Dr. BHAU DAJI

अ० बहुमोल्य महग्घ आभरण अलंकार शरीर | नो करी सदाल पुत्र गोसाला नो श्रावक | म० मनुष्य समूह परवर्या थका | सा० पोतानाघरथकी प० नीसरे नीसरी नें | पो० पोलास पुर नगरमध्ये नीव

रे अप्पमहग्घाभरणालंकीयसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगते सातो गिहातो पडिनिक्खमति २ पोलास

जी० जीहां स० सहस्रांब्र व० वन उद्यान तिहां आवे | जे० जीहां स० समण भ० भगवंत म० महावीर छइ | ते० तीहां आवे आवीनइ ति० तीनवार | आ० प्रदक्षिणादि करी तीनवार नमस्कार

तीव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ त्तातिक्खुत्तो आयाहिणपयाहि

जा० यावत प० सेवा करइ | त० तीवारे स० श्रमण भगवंत म० श्रीमहावीर देव | स० सदालपुत्र आ० गोसालाना श्रावक प्रतइ आगइ मोटी | जा० यावत ध० वारप्रतिं ते धर्मकथा कहे

जाव पज्जुवासति तते णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीवितोसियस्स तीसे य महति जाव धम्मकहा सम

भगवंत म० महावीर देव | स० सदालपुत्र आ० गोसालाना श्रावक प्रतइ | ए० इम कहे | से० ते सदालपुत्र | क० कालें तेज मनइ प० पाछला पोहर आंगला क० समय नइ विषइ

मणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीवियं एवं वयासी से णूणं सद्दालपुत्ता कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयंसि

माहे जा० यावत विचरतो थको | त० तीवारे तु० तुझ पासे ए० एक देवता | अं० आवीनइ प्रगट थयो आयो | त० तिवारे से० ते देव देवता | अं० आकाश में रह्यो थको | ए० इम कहे

जाव विहरति तते णं तुज्झं एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने एवं वय

तत प० पर उपासे से० सेवा करजे | से० ते सा वीत्रा तस्स सदालपुत्र | अ० लोलेस्वामी माता वाता ए० अर्थ समर्थ इम छे नइ छइ | ते० ते सदालपुत्र एवा वे कही | ते० ते देवे में खलीं

ह पज्जुवासिस्सामि से णूणं सद्दालपुत्ता अट्ठे समट्ठे हंता अत्थि तं नो खलु सद्दालपुत्ता तेणं देवे

अ० आजनेता वंदे सं० सेकाव ता प्रकाटे तीरें | त० तीवारे से० ते समण भगवंत | स० सदालपुत्र | आ० गोसाला ना श्रावक प्रतें नइ | ए० इम कहे इ

ति आयवेसि दलयंति तते णं से समणे २ सद्दालपुत्तस्स आजीवितस्स एवं वयासी

त० तिवारे से० ते सदालपुत्र श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देव प्रतइ | ए० इम कहे | ए० एहवे त्रं दे पुत्र पुत्र पद्दली माटीना ठांव ला रण मय | त० ति

सद्दालपुत्ते समणं भगवं महावीरं एवं वयासी एस णं भंते कुल्ली मट्टिया आसी तते णं पच्छा

ए० मिश्री तकरी पिंड का पी नइ पछे नेली करी | च० चाकने पर चाढीको रीनइ | त० तिवारे पछें ब० घणा क० कारे वाछ्या | आ० यावत अ० अग्नि का रांते ल घृत घाल्या वा नाजा म करइ

य एयउ मिसिच्छति २ चक्के आरुहिज्जति तत्तो बहवे करगा य जाव उट्टियाउ य क

ए० इम क० हे | स० हे सदा ल पुत्र | ए० एह कीड मा टीनाभाजन | किं० माटीना भाजन | जा० यावत उ० पुरु ष क्रम कीधा

तस्स एवं वयासी सद्दालपुत्ता एस णं कोलालभंडे किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारप

त० आ० बल वीर्य पुरुषाकार पराक्रम विना क्रिया करी नइ ए० एवो क्रिया नीतर कीड कहइ छइ | तं० तिवारइ प० ते स० सदालपुत्र आ० गो सालाना श्रावक प्रतइ स० समण भग वंत म० श्रीमहावीर देव प्रतइ

रक्कमेणं कज्जति उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरिक्कमेणं कज्जंति तं से सद्दालपुत्ते आजीविए समणं भगवं महावीरं

त० पुरुषाकार पराक्रम विना छइ नथी उ० ठाण | जा० यावत प० पराक्रम नथी | नि० सर्वभाव नीतर छे तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देव | स० स

पुरिसक्कारपरिक्कमेणं नत्थि उट्ठाणेइ वा जाव परक्कमेति वा नियता सव्वभावा तए णं स

इम कहइ | त० तिवारे ते० ते | स० सदाल पुत्रनें | स० श्रमण भगवंत श्रीमहावीर ए० इम कहइ | इ० इह ए० होला देव स० अर्थ धर्म सा य उपनो

य एवं वुत्ते तते णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ एवं

उ० उपनो ला० नांणदंसण नांधरणहार अतीत वर्तमान अनागत जाणइ अरिहंत जीन केवली सर्वजाण सर्वदर्शी तीन लोक पूजनीक नाव यावत त० तथ्य कर्म संपदा सहित ते ते जाणी स० श्रेय | स० सि० ए म क जे नें स० श्रमण भ० वांदे नें नमस्कार करे वांदी पगे फलक सीझा संथारो

महाणे उप्पन्नणाण जाव कम्मसंपउत्ते तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता पाडिहा

ए० इम चिं तवीनें | उ० उठे उ० ठीनें | स० समण भगवंत नें वंदे वांदे | न० नमस्कार करी नइ | ए० इम कहइ | ए० इम स० भ० नि० मं० दि० नगर माहे माहरा पोलास

तेणं तेणं एवं संपेहेति २ उट्ठाए उट्ठेति २ समणं भगवं वंदति नमंसति २ एवं वयासी एवं खलु भंते मम पोला

पं० पांचसे कुंभारनी हाटछे | त० तिहां तु० तुमे प० प्राति हारि रूपीढ फलक संथारो तेसो | उ० अर्थ मिथ्या जोइ ये | वि० विचरो ए वे | ते० तिवारे सस० सदाल पुत्र कहे | त० तिवारे स० समण भगवंत श्रीमहावीर देव

स पंच कुंभकारावणसया तत्थ णं तुज्झे पाडिहारियं पीढं जाव संथारयं उगिण्हित्ताणं विहरह तते णं समणे

ग० गोसाला नो श्रावक ना | ए० एहवो वचन सांभली नेमन माहे अवधारइ | स० सदालपुत्र | आ० गोसाला नो श्रावक | पं० पांचसे कुंभारनी हाटे | फा० फासु देफले

आजीवितस्स एतमट्ठं पडिसुणेति २ सद्दालपुत्तस्स आजीवितस्स पंच कुंभकारावणसतेसु फासुएसणि

जा० यावत सि० उपध उपगरण लेताथका विचरे | त० तिवारे से० ते | स० सदालपुत्र आ० गोसाला नो श्रावक | अ० एक दा प्रस्तावें | वा० वायरे हणा

जाव संथारयं उगिण्हित्ताणं विहरंति तते णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ वायाहयं

ए० इम त्रं० | स० सदाल पुत्र | ज० जो तुझ ताहरा | के० कोइ पु० पुरुष वा० वायरे हण्या | प० पाकाभी पना | को० नओ

एवं वयासि सद्दालपुत्ता जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोला

नि० नाजे तथा अ० वाहिर नाखे | प० पर तवी नाखे | अ० अयुक्ति ना | अ० भार्या स० संघाते | वि० घणा | नो० नस

वा अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा वा परिट्ठवेज्जा वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भो

पुं० पुरुष प्रते नइ किं० किसो दंड करे | भं० हे स्वामी ते तेहनइ पुरुष प्रतइ आ० आक्रोश वचन कहुं | द० दंड मार तेहनइ | बं० र री

पुरिसस्स किं दंडं वत्तेज्जासि भंते अहं णं तं पुरिसं आओसेज्जा वा हणेज्जा वा बंधे

नि० निरंतर समाकरीनइ उपवनइ | नि० कठोर वचन वारि सर | आ० आकालि जीव | त० व्यर्थी रहित करूं | स० ते सदा लपुत्र

वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जा व सद्दालपुत्ता

प० पर कानी पना | को० माटीना भाजन नइ | अ० चोर ले इ ले कइ छइ | जा० यावत प० परठवे | अ० ताहरी अ ग्निमित्रा | भा० भा र्या

क्केल्लयं वा कोलालभंडं अवहरति वा जाव परिट्ठवेति वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए

नो० नकरइ तुम्हे तुम पुरुष नइ | आ० आक्रोस मारइ | जा० यावत अ० आकाल जीवित व्यर्थी रहीत करे किं वा न करे

हयं वत्ति नो वि तुमं तं पुरिसं आओसेसि वा हणेसि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोविसि

उपासक०
३८

निर्मलीव स्त्रवह जीनइ | अ० बहुमोला महघ्या नेरण अलंकार शरीर | तो कारइ सदाल पुत्र गोसाला नो श्रावक | म० आपणा मानुस नी श्रेणि कपर वस्यो थको | सा० गोसाला ना घर थकी प० नीसरे नासराने | पो० पोलास इ० म० मध्ये नीक

पाउसे माइं अप्पमहग्घाभरणालंकीयसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगते साओ गिहाओ पडिनिक्खमति पोलास

जे० जी पोलास० सहस्र वन व नउ उद्यान नइ विषइ | जे० जी हां स० समण भ० भगवंत म० महावीर छइ | ते० ती हां आवे आवीनइ ति० तीन वार | आ० प्रदक्षणा दिई करीनइ नमस्का

सिरि जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति तिक्खुत्तो आयाहिणपया

नमं म स्कार कर | जा० यावत प० सेवा करइ | त० तीवारे स० श्रमण भगवंत म० श्रीमहावीर देव | स० सदालपुत्र आ० गोसाला ना श्रावक प्रतइ आगइ मोटी | जा० यावत धं० वा पर ति० धर्म कथा क

नमंसति जाव पज्जुवासंति ततेणं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीवितोसिय महति जाव धम्मकहा स

स० श्रमण भगवंत म० श्रीमहावीर देव | स० सदालपुत्र आ० गोसाला ना श्रावक प्रतइ | ए० इम कहे | से० ते सा जो भलो स० सदालपुत्र | क० काले तुम नइ प० पाछला पोहरनां स० समय नइ विषइ

समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीवियं एवं वयासी से णूणं सद्दालपुत्ता कल्लं तुमं पच्चावरण्हकालसमयं

क० वाडीनें मांहे जा० यावत वि० विचरतो थको | त० तीवारे तु० तुम पा से ए० एक देवता | अं० आवीनइ प्रगट थयो आयो | त० तिवारे से० ते देव देवता | अं० आकासे पु० रहीनइ थको | रु० इम कह

वणिया जाव विहरति ततेणं तुब्भं एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था ततेणं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने एवं वय

जा० यावत प० पर्युपास ना तेहनी सेवा करजे | से० ते सा यी वात स० सदालपुत्र | अ० हंता हां आ सा वी वात ए० अर्थ समर्थ इम हती नइ छइ | ते० ते सदालपुत्र एवा वेकरी | तें० ते देव मंखली

वसद्दं जाव पज्जुवासिस्सामि से णूणं सद्दालपुत्ता अट्ठे समट्ठे हंता अत्थि तं नो खलु सद्दालपुत्ता तेणं देव

ए० इम कहइ यक्कइ | त० तिवारे त० ते | स० सदाल पुत्र नें | स० श्रमण भगवंत श्री महावीर ए० इम कहइ | इ० एह वो चिंतव संकल्प अ० धवसाय उपनो | ए० ग

णंपणिहाय एवं वुत्ते ततेणं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ज एव

म० माहण माहणा | उ० उपनो ला० ज्ञान दंसण नाणा स्त्र ना धरण हार अ० तीत वर्तमान अनागत जीव जाणइ अरिहंत जीण केवली सर्वज्ञानी सर्वदर्शी तीन लोक पूजा जनीक ... यावत त० तथ्य कर्म संपदा सहित ते० ते सर्व साधु श्रेय | स० सिद्ध म० ... श्रमण भ० वांदेनइ नमस्कार करे पा० फलग सीज्जा संथारे

वीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपउत्ते तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता पाडिहा

ए० इम चिं तवीनें | उ० उठीने | स० समण भगवंत नें वांदे | न० नमस्कार करीनइ | ए० इम कहइ | ए० इम खलु भिक्षु नें ... माहण मारा को० पोलास

जाव उवनिमंतेत्तए एवं संपेहेति २ उट्ठाए उट्ठेति २ समणं भगवं वंदति नमंसति २ एवं वयासी एवं खलु भंते ममं पो

नें वा हिर | पं० पांच सै कुंभारनी हाटडे | त० तिहां उ० तुमे प० पाडिहारि ... रू पीठ फलग संथारो लेइ | उ० ग्रहीने जोइये | वि० विचरो ए वी सदाल पुत्र कहें | त० तिवारे स० श्रमण महावीर देव

वहिया पंच कुंभकारावणसया तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियपीढं जाव संथारयं उगिण्हित्ताणं विहरह ततेणं समणे

पु० पुत्रने | आ० गोसाला ना श्रावक ना | ए० एहवो वचन सांभली | स० सदालपुत्र | आ० गोसाला नो श्रावक | पं० पांच सै कुंभारनी हाटें | फा० फास दफल

पुत्तस्स आजीवितस्स एतमट्ठं पडिसुणेति २ सद्दालपुत्तस्स आजीवितस्स पंच कुंभकारावणसतेसु फासुएस

जा० यावत सं० उपधि उपगरण लेता थका वि० विचरे | त० तिवारे से० ते | स० सदालपुत्र आ० गोसालानो श्रावक | अ० एकदा प्रस्तावें | वा० वायरे हणा

फलग जाव संथारयं उगिण्हित्ताणं विहरंति ततेणं से सद्दालपुत्ते आजीविवसए अण्णया कयाई वायाहयंच

आ० आजने ताव मे रेकावताम्र क्वादेशीने | त० तीवारे से० ते समण भगवंत | स० सदालपुत्र | आ० गोसाला ना श्रावक कहे तइ | ए० इम कहे | स० जो सदालपुत्र

ति आयवेसि हलयंति तते णं से समणे० सद्दालपुत्तस्स आजीवितस्स एवं वयासी सद्दालपुत्ता

त० तिवारे से० ते स० सदालपुत्र श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देव प्रतइ | ए० इम कहे | ए० एह भं० हे पुज्य पु० पहली माटी हंता पा... मय | त० तिवारे पछे उ० पाणी से

सद्दालपुत्ते समणं भगवं महावीरं एवं वयासी एस णं भंते पुच्ची मट्टीआ आसी ततो पच्छा उदएणं

ए० मिश्रीत करी पिंड कीनइ पछे मेली करी | च० चाकइ पर चाढी केरी नइ | त० तिवारे पछे ब० घणा क० करवा... | जा० यावत उ० उष्ट्रिका करतेल घत घात वा नाहाम करइ | त० तिवारे स० समण तपस्वी

य एगयउ मिसिज्जति एगयउ चक्के आरुहिज्जति ततो बहवे करगा य जाव उट्टियाउ य कज्जइ तते णं सं

ला क | ए० इम कहे | स० हे सदालपुत्र | ए० एह कोला० माटीना भाजन | किं० माटीना भाजन | जा० यावत पु० पुरुषाकार पराक्रम कीधा कुवा

तस्स एवं वयासी सद्दालपुत्ता एस णं कोलालभंडे किं उठाणेणं जाव पुरिसकारपरिक्कमेणं कज्ज

त० अ० बलवीर्य पुरुषाकार पराक्रम विना क्रिया कुवा ए दवी लांनी तरके रकहइ छइ | तं० तिवारइ पछइ से० ते स० सदालपुत्र आ० गोसाला न श्रावक प्रतइ स० समण तपस्वी भ० भगवंत म० श्रीमहावीर देव प्रतइ | ए० इम व० बो जलेकुवो

अपुरिसकारपरिक्कमेणं कज्जति तं से सद्दालपुत्ते आजीविसमणं भगवं महावीरं एवं वयासी ४१

र पुरुषाकार पराक्रम विना कुवा छइ नथी उ ठाण | जा० यावत प० पराक्रम नथी | णि० सरब भाव नीतछे तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर देव | स० सदालपुत्र आ० गोसाला ना श्रावक प्रतइ

अनुट्ठाणेइ वा जाव अपुरिसक्कारपरिक्कमेणं नत्थि उठाणेइ वा जाव परक्कमेति वा णितिया सव्वभावा तते णं समणे भगवं

ए० इम व० कहइ | स० सदालपुत्र | ज० जो तुझ | के० कोइ पु० पुरुष वा० वायरइ सुका | प० पाका नी पना | को० वासण मे० मांहा

एवं वयासि सद्दालपुत्ता जइ णं तुज्झे केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभंडं

ना | नि० नाजे तथा अ० वाहिर नाखे | प० परतवी नाखे | अ० अग्नि ना | भा० भार्या स० संघातइ | वि० घणा | भो० भोगसजोग सारमांस कवनो

वा अक्खिंदेज्जा वा परिट्ठवेज्जा वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोग

ते पु० पुरुष प्रतइ कि० किसा दंड करे | भं० हे भगवान तेह नइ पुरुषइ पुरुष नइ आ० आक्रोस वचन कहु | ह० हणु मारु नइ | बं० रास मीक रीबांधु

पुरिसस्स किं दंडं वत्तेज्जासि भंते अहं णं तं पुरिसं आउसेज्जा वा हणेज्जा वा बंधेज्जा वा

ा | नि० निरन्तर समाकरनइ पुरुषनइ | नि० कठोर वचन पापि स | आ० आकालि जीव | त व्यथी रहित करु | स० ते सदालपुत्र | नो० नही ख० निश्चे

वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाउ ववरोविज्जा व सद्दालपुत्ता नो खलु

पर कानी पना | का० माटीना भाजन नइ | अ० हरे नाम चोरे तेह | जा० यावत प० परठवे | अ० ताहरी अग्नि मिता | भा० भार्या | स० सधिकी भोगु

क्केलयं वा कोलालभंडं अवहरति वा जाव परिट्ठवेति वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउला

नो० न कर तु० तु तेह पुरुषनइ | आ० आक्रोस मारइ | जा० यावत अ० आकालि जीवित व्यथी रही न करे कि वा न करे | जा० जो ए० नथी

ति नो वि तुमं तं पुरिसं आउसेसि वा हणेसि जाव अकाले चेव जीवियाउ ववरोविज्जसि जति णं

उपासक० ४१

ग० गहीने | आ० आवत प० प | णि० निसमव सा | अ० अथवा त० तुजने के० कोइक पु० ते | जा० यावत ता० तारा भा | अ० अग्नि
विकिसा | नीकाम नथी | वपदारथ | वकंप वाठ वायखइ कोकाथा कालीवासड ना ता | मां ते पर नारवइ नाजेअथवा | मित्रा ना

च्छिंदीणितिवा जावपरठ्ठवेइवा णितियासमवाखा अहलतुज्झकेइपुरिसेवातादयंवा जावपरिठ्ठवेतिवा अगिमि

करी स्त्री स० आ० यावत | तु० तारुं म० ते० ते | आ० आक्रो | जा० यावत प० जीव | जे० तारुं जेकहइ लइ | जा० यावत
भोगनोगइविचरि वरइ | पु० पुरुषनइ | सेहीं | ते व्यथी रहित नकरे | थी ज० अकाला दिक्रिया | नि० निसम संना वहे

त्ताएवा जावविहरइ तुमंवातंपुरिसं आउसेसिवा जाव वरोविसिनि जंवदसिणत्थिउठाणेइवा जावणितियासव्व

ते० तीते प्रतव्य आकू वउ | स० सद्दा | आ० गोसाला म | त० तिवारे स० ते स० | स० समण ज० न्ना | न० नमस्का | ए० इम व० क
इणा तलइ सं० ते | लपुत्रा | ति सं० वुतिबू वीसमको | सद्दाल पुत्र | वं ते नेइ वं० वांदे | रकरेकरीने | हइ लइ

नावातंतेमिच्छाए त्थणंसे सद्दालपुत्ते आजीविसंबुद्धे ततेणंसे सद्दालपुत्ते समणंनगवं वंदति नमंसिति एवंवयासी

इ० वांछु तु० तुमार | ध० धर्म सां न | स० लि | स० समण नगवंतश्रीमहावीर देव | ती० ते दमें जा० यावत मोटी वारदा परष
इ अं० समीप | लवो | वार इ | स० सद्दालपुत्र अ० गोसाला नइ श्रावकनइ | दा नइ विषइ ध० धर्मकथा कहइ ते ते तिवारइ पलइ न० ते

इच्छामिणंतुज्झंअंतिते धम्मंनिसामित्ता ततेणं समणेसद्दालपुत्तस्स आजीवि तीसेयजावधम्मंपरिकहंति ततेणंसे

स० सद्दालपु | स० श्रमण न० नगवंत म० | अ० समीपइ ध० धर्मसांनलीजीवदया | ह० हरखसंतोष पाम्यो जा० यावत हि० हियो
त्र | श्रीमहावीर देवने | रूप विनय मूलसांनली निइ हियामां धारीने | विकस्यो ज० जीम आणंद तिम ग० तिम गिहिधर्म

सद्दालपुत्ते समणस्स नगवतो महावीरस्स अंतिते धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुठ्ठ जावहियए जहाआणंदे तहा गिहि

ध० धर्मवारव्रत | ण० न | ए० एक कोडि सोनानी कोडि प० | ए० एक व्रज द० दस सह | जा० यावत स० समण न० नगवंत श्री | जे० जी
तरूप व० अं | जो वि | निधान भांगले एक कोडिव्या जे एक कोडि घरवखरी छे | अ गायांए एक वाव ज | महावीरने वं० वांदे न० नमस्कार करे | हां
गीकार करे | शेष

धम्मंपडिवज्जति णवरं एगाहिरणकोडिपवित्थरपउत्ता एगेवएदसगोसाहस्सीएणं जावसमणंनगवंवंदइनमंसतिर जेणे

पो० पोलासपुर | ते० तिहां उ० पोतानी हा | पो० पोलासपुर नगरें म० मध्ये | य० आपणो तानो | जे० जीहां अ० अग्निमित्री | ते० तीहां आ
न० नगरछइ | टछे ति हां आवे | मध्यपइने जे० जीहां स० अ | गि० घरछइ | नार्या छे |

वपोलासपुरेणगरे तेणेवउवागच्छतिरत्ता पोलासपुरंनगरंमज्झंमज्झेणं जेणेवसएगिहे जेणेवअगिमित्तानारिया तेणेवउ

आवें आवीने | अ० अग्निमित्रा ना० | ए० इम | ए० इम ख० निश्चे दे० हे | स० समण नगवंत म० | जा० यावत स० | त० तिहां इ० जा इ० तुमे
नार्य जित इ | कहइ | देवानुप्रिया | श्रीमहावीरदेव | समोसर्या प धार्या | स० समण

वागच्छइरत्ता अगिमित्तंनारियं एवंवयासी एवंखलुदेवाणुप्पिया समणेनगवंमहावीरे जावसमोसढे तंगच्छाहिणंतुमं समणं

नगवंत म० श्री | वं० वां | जा० यावत प० पर्जु | स० समण नगवंत म० श्रीमहा | पं० पांच अणु | स० सात सिक्षा | दु० समकित मूल
महावीर देव प्र | दि | पासना सेवा करे | वीरदेवने समीपे आइ नइ तुमें | व्रत | व्रत | बारस प्रहीं
तइ जानइ | ए

नगवंमहावीरं वंदाहि जावपज्जुवासाहि समणस्सनगवंतोमहावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावयं दुवालसविहिगि

न इ श्रावकधर्म | त० तिवा | अ० अग्निमित्रा | स० सद्दाल | स० सारावक जो कुलाव | वि० विनयकरीनेप० सांनले सो ततीन इ न० ते
अंगीकार करी | रेसे० ते | ना० नार्या | पुत्रनो | वेसन्ना तत करे ए द वा अर्थ | तिवारेपछे से० ते स० सद्दालपुत्र आपणा

हिधम्मंपडिवज्जाहि ततेणंसा अगिमित्तानारिया सद्दालपुत्तस्स समणोतहत्ति एयमठ्ठं विणएणंपडिसुणेतिर ततेणंसे सद्दाल

को० कोटंबिक पुरुषने स० | ए० इम क | खि० उतावला थावो जो० | ल० लहु करणजेहनो | स० समा पुरुष नें | स० सरीखा
तेडावे तेडावीने | हइ | अहो दे० देवानुप्रिया | वेगतरथ जोतरी | उखलां जो | माग ए

पुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेतिर एवंवयासी खिप्पामेवजोदेवाणुप्पिया लहुकरणजुत्तंजोइयं समखुरवालिहाणे समलिहि

ह वाडा | जं० जंबूनंद रतनमय श्री वाम | रु० रूपानी | रु० रूपानी घुघ घुघरमाल ते | सु० सुवर्णनी नाथ ते | क० तेसोने करी बांधी त ग्रहइ ग्रहया त
दत्याछे | जोतरी जोत्र गलइ बांधी | नाथ | लेसी नीत | ह्वी मकर प्रधान | नेपरोंसवलीकाली

यसिंगएहि जंबूणयामयकलावजोतपइविसिठ्ठएहि रययामयघंट सुतरज्जुगवर कंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहि

नी० नीलोत्पलकमुत्त नो उपरसेन्ही | प० एहवा प्रधान तरुण ब्रखसबलीवेगवंत | ना० नाना प्रकार ना मणी स्कार्णनी नान्ही घंटा तेहनी झलरी क जा नलो सुधरी | ति० एहवा जोत्र प्रसस्त सु घंटि घड्यो नाराम लेनलीजे जोताए करल लगवलीपेन

नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणीकणगघंटिया जालपरिगयं सुजायजुगजोत्तरज्जुजुगपसत्थसुविरई

नि० चला | व० वर प्रधान लक्षण सहित | जु० सं० संयुक्त पलीं जोतरी धर्म संबंधी रथ जोतरी लावो | म० एम माहरी आज्ञा करीनें पाछी आपो | त० तिवारें ते कोड० कोटंबीक पुरुष

यनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह ममएयमाणत्तियं पच्चप्पिणह तते णं ते कोडुंबियपुरिसा

जा० यावत पच्चरख जोतरीनें लाव्या | त० ति वारे | अ० अग्निमित्रा भार्या | ण्हा० स्नान करी जाव यावत प्रधान वस्त्र पहरीनें अल्प | भार बहुमोला आभरण अलंकृत चेडी दासी तेहना चक्रवालसमूह तेणे परवार्यकी अधिक दिसनी घा

जाव पच्चप्पिणंति तते णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा जाव चेडि

सीलिह | ध० धर्मसंबंधि प्रवहण चढी नइ चढें | पो० पोलासपुर नगर | म० मध्योमध्य थइनें | नि० नीसरीनें | जे० जीहां से० सहस्त्रांबवन उद्यान छै | ते० ति

या चक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति २ पोलासपुरं णयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणे

उ० आवी आवीनइ | जे० जीहां स० समण भगवंत महावीर देवने देखीनें | ध० धर्मिक नामा रथ थकी पउतरे उ० नइ पउतरइ | चे० दासीने परवरी थकी | जे० जीहां स० समण भगवंत श्री महावीरदेव छै तं० तिहां आवे

व उवागच्छइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति २ त्ता चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा जेणेव समणे तेणेव उवाग

आवी नइ | ति० तिनवार वं० वांदइ | न० नमस्कार करे | नच्च० अती दूर अती नजीक नहीं दूरपि नइ नहीं जा० यावत प० हाथ जोडी नइ जो पकी विनय सेवा चाकरइ त० ति वारे पछे स० समण भगवंत श्री महावीरदेव | अ० अग्निमित्रा नामे भार्याने तेह बोलवइ

च्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो वंदति नमंसति २ त्ता नच्चासण्णे जाव पंजलिउडा ठितिया चेव पज्जुवासति तए णं समणे अग्गिमित्ताए ती ४२

पश्यदा मध्ये जा० यावत् ध० धर्मकथा कहइ | त० ति वारे पछें अ० अग्निमित्रा नाम भ० भार्या | स० समण भगवंत श्री महावीरदेवनें | अं० समीप ध० धर्म सो० सांभलीनें सांभली | नि० हियामें विचारी ह० हरखसंतोष पांमी | स० समण भगवंत नें वं० वांदे

सेय जाव धम्मं कहेति तते णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवतो अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं वंदति

ए० एम कहइ | स० सरदहुं जं० हे भगवान स्वामी नि० निग्रंथनो प्रवचन मारग | जा० यावत से० तुमे कहो तें सत्य छै

एवं वयासी सद्दहामि णं भंते निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वदह जहा णं देवा अंतिते बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइया नो खलु

दे० हे स्वामी अहो देवानुप्रिय | अं० उ० अमे पासइ पं० पांच अणुव्रत | स० सात शिक्षाव्रत | दु० द्वादश बार प्रकारनुं श्रावकनो धर्म लेईने संजाद पडिवजीस

अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पिया मुंडा भवित्ता अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिते पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिव

डिय ज्जे | आ० जिम सुख होइ तेम करो | त० ति वारे सा० ते अ० अग्निमित्रा नामे भार्या स० समण भगवंत श्री महावीर देवनइ अं० समीपइ पं० अणुव्रत फु | स० सात शिक्षाव्रत एवं १२ व्रत स्त्र धर्म अंगीकार करइ | स० समण भगवंतनें

ज्जामि आहासुहं तते णं सा अग्गिमित्ता समणस्स भगवउ अंतियं पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं पडिवज्जति जाव पडिगता समणं भग

वं० वांदे | न० नमस्कार करें ता० तेवार | ध० धर्म प्रवहण उपरे दु० चढे चढीनें | जा० जीहां थकी दिसथी आवी हती | ता० तिणें दिस पाछी गइ | त० ते वारे सें० ते स० समण भगवंत श्री महावीर देव

वं वंदति नमंसति २ त्ता मेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगते तते णं से समणे भगवं महावीरे

अ० अन्यदा प्रस्तावे | पो० पोलासपुर नगर थकी स० सहस्त्रांबवन थकी | प० नीकलीनें नीकलीनें | व० बाहिर ज० जनपद देसनें विषें वि० विहार करें | त० ति वारे पछें स० | स० समणो सद्दालपुत्र

अण्णया कयाई पोलासपुरातो सहस्संबवणाउ पडिनिग्गच्छति २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरति तते णं से सद्दालपुत्ते समणो

पासकश्राव कहूवो | अ० जाण्याछे जीवअजीवादिकनवप दार्थसरूपतेणेकरिने विचरइ छै इ | तं० तिवारे गो० गोसालो खलिपुत्र | इ० एहवी क० कथावारता ल० लाधेथके | ए० इमखलु निश्चे स० स दालपुत्र

वासए जाए अभिगयजीवाजीवे जावविहरति ततेणं गोसाले मंखलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धठे समाणे एवंखलुसद्दालपुत्ते

आ० गोसालानोधर्मवमीने छोडीने | स० समण नि० निर्ग्रंथनो धर्मअंगीकरेछे | प० श्रावक हूवो | तं० तेजाउं हुं तिवारे स० सदालपुत्रने | आ० माहरोधर्मछांडी महावीरभगवंतनो धर्मलीधोछइ तेनो छोडावी

आजीवीयसमयंवमित्ता समणाणंनिग्गंथाणंदिठं पडिवण्णे तंगच्छामिणंसद्दालपुत्तं आजीविसमणाणंनिग्गंथाणंदिठिवामेत्ता

पु० वली | आ० माहरो धर्म मारगअंगीकारकरा वुं ति० इमकहइ | ए० इमसं० चीतवें चीतवीने | आ० गोसालोसंघसमुदाय लेइनेसं० परवर्योथको | जे० जीहां पो० पोलास पुर नगरछे | जे० जीहां गोसालो

पुणरवि आजीवियंदिठिं गिण्हावित्तएतिकट्टु एवंसंपेहेति२त्ता आजीविसंघसंपरिवुडे जेणेवपोलासपुरेणगरे जेणेवआ

गोसालकसभा नकहइ | ते० तीहांउ० आवे आवीनइ | भं० भोजननोउपग रणमूके | कें० केतलाएक आजी वकांसंघातथा लइने | जे० जीहांसद्द सालपुत्र | स० समणोपास कश्रावकनइ | ते० तिहां उ० आवे आवीने

जीवियसभा तेणेवउवागच्छइ२त्ता भंडेगनिक्खेवंकरेति२ केवइएहिंसद्धिं जेणेवसद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेवउवागच्छइ२त्ता

त० तिवारेसे० स दालपुत्र | स० श्रमणोपास कश्रावक | गो० गोसालामंख लिपुत्रने | ए० आवतादेखे दे खीनइपछइ | नो० आदर नदीधो | नो० सामोमिल नजोयो | अ० आदरना पदेतो | अ० सामो

तएणंसेसद्दालपुत्ते समणोवासते गोसालेमंखलिपुत्तं एज्जमाणंपासति२त्ता नोआढाइ नोपरिजाणति अणाढायमाणे अपरि

नसामोजोवतो | तु० मौनकरीने बेठो | त० तिवारेसे० तेगो० गोसालो मंखलीपुत्र | स० सदालपुत्र समणोपासक श्रावकनें | अ० आदर अ णदेतो | अ० अजाणतो देखीने

जाणमाणे तुसणीएसंचिठति ततेणंसेगोसालेमंखलिपुत्ते सदालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढिज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे

पी० पीठफलगसिज्यासंथारादि कनइअरथे | स० सम णि | भ० भगवंतश्रीमहावीरना गु० गुणकिरतनकरतोथको | आ० आव्याछेतादे० देवाणुप्रिया | इ० इहांमाहण माहणो | त० तिवारेसे० तेस दालपुत्र

पीढफलगसिज्जासंथारयठाए समणस्स भगवतोगुणकित्तणंकरेति आगएणंदेवाणुप्पिया इहंमाहमहणे तेतेणंसेसद्दालपुत्ते

गो० गोसालामंखलि पुत्रप्रते | ए० इमकहइ कें० कुणदेवानुप्रिया मा० माहमाहण | तं० तीवारे गो० गोसालोमं० मंखलिपुत्र | स० सदालपुत्रस० समणो पासकश्रावकप्रतइ | ए० इमक हइ | स० समण भगवंत म० मा हामाहण कहिजे

गोसाले मंखलिपुत्ते एवंकेणंदेवा महमहणे ततेणंसेगोसालेमंखलिपुत्तं सद्दालपुत्तंसमणोवासयं एवंवयासी समणेभगवंमहामाहणे

स० तेस्यामाटइ दे० हे दे वानुप्रिया | ए० इमक हइ | स० समणभगवंतमा० मा हमाहणकहीजे | ए० इमखलु निश्चे स० हे सदालपुत्र | स० समण भगवंत महावीर मा० माहणसानावर जकहमा हणकहवाछइ | उप्प० उपनो ज्ञानदरसण

सेकेणंठेणंदेवाणुप्पिया एवंवुच्चति समणेभगवंमहामहणे एवंखलुसद्दालपुत्ता समणे भगवंमहावीरेमहामहणे उप्पण्णणाणदं

धारक नाधणी | जा० यावत् इंद्रकोम ठइं इनइ पूजनीकछे | जा० यावत् इच्छाकारतवनवांदिवा जोग्यछेत० तपकरीनइ सहित | सें० तेतेणेअर्थ दे० हे देवानुप्रिया | ए० इमक हीजे | स० समणभगवंतश्रीमहावीरदे व मा० माहमाहण कहिजइ | इ० एह जो

सणधरे जावमहियपूइए जावतच्चकम्मसंपयासंपउत्ते सेतेणठेणंदेवाणुप्पिया एवंवुच्चति समणेभगवंमहामाहणे इ०

[illegible] कल्याणतर लीजोअइ माहक हइछइ | स० सदा लपुत्र | इहां आव्या देवता दे० हे देवानुप्रिया इ० इहां म० महागोपकहीयेइ तिवारइ गोसाला प्रतइ सद्दा लपुत्र बोल्यो ते कूंणछे से० ते हें० कुण दे० हे दे | वानुप्रिया म० महागोप स० समणभगवंत श्रीमहावीरदेव महागो पगोवालसमानजिमगायनोपालणहार गोपगोवालहें कसंचेतरक्ष केसोइति शिष्योसें० तेहे० कुण दे० हे देवानुप्रिया

मद्दगोवेतर सद्दालपुत्ता आगतेणंदेवाणुप्पिया इहंमहागोवे२ केणंदेवामहागोवे समणेभगवं महागोवे सेकेणठेणं

जा० जावत म० किम गोवालीयोगायांनो प्रतिपालहार गोसालोबोल्योसदाल पुत्र इए० इमखलु निश्चइ दे० हे देवानुप्रियासं० समणभगवंत श्री महावीरदेवसं० संसाररूपणी महाअटवीपणकहवीछइ तेकहेछइ॥ | सं० संसाररूपकारी एहवी सं० संसाररूप अटवीनेविषें व० घणाजीवनं सकनेन यस्थासताबाहुलीत्रास ना आ घादिला | जतानमुष्यनवइ इ० ह णावदिजते प्रपनतां नइजे सरिरनासकरवाथी विलं० सनमात्रथात्रा सवाथीख० अत्यादिक खाइ जतनहि

देवा जावमहागोवे एवंखलुदेवासमणेभगवं।।।।। संसाराडवीएबहवेजीवे नस्समाणे विणिस्समाणे खज्जमाणे २

ज० खडगादिके छेदीजतां नें
भि० भालादिके भेदीजतां नें | लुप्प० नेकरतासादिकनइ छेदे वेवि
लुप्प० विसेषथी छेदीजतां अथ
वादिकनइ लुटवइ | ध० धर्मनय दंडइक
रा राखीनइ | सं० जलीपरेंगो
पवीनें | णि० निर्वाण रूप
महावाडइ

च्छिज्जमाणे ४ भिज्जमाणे ५ लुप्पमाणे ६ विलुप्पमाणे ७ धम्ममएणं दंडेणं ८ सारक्खमाणे ९ संगोवेमाणे १० णिव्वाणमहावाडं
सा० आपणें हाथे
निरुपद्रवपणें राखइ | से० तेणें अर्थें स०
हे सद्दालपुत्र | ए० समण भगवंत श्री महावीर देव म
हागोप कहीइं ए बीजो प्रसुतदिवेबीजो प्र
श्न कहे छइ गोसालो बोलो सद्दालपुत्र | स० समण भगवंत श्री महावीर देव जाव यावत् स०
महासार्थवाह कहीजें इहां आ मांहे ता महासार्थवा
हे सद्दालपुत्र बोलो कुण सार्थवाह ति वारे गोसालो बो
ल्यो समण कहे

ए साहत्थिं संपावेति २ से तेणंट्ठेणं सद्दालपुत्ता एवं वुच्चति २ अते: समणे भगवं जाव महासत्थवाहे २ से केणं
ए० इम खलु निश्चे
हे हे देवानुप्रिया | स० समण भगवंत श्री महावीर जिम सार्थवाह गणि प्रमुख मारि छेजइ तादिकी गयाणी जेम (जिम) संसार रूपणी अटवी
वीनइ विषें भार गति रूप अनादि अनंत काल नो जीव कर्म रूप चोरादिक थी नासतां त्रासतां विलसितां थकां वि० विलसतां थकां
विलसतां त्रासतां

हेणं एवंखलु देवा समणेभगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे
जा० यावत् प० खडगादिके करी छेदाजतां थकां ध० ध
र्ममय पंथइ करी उ० समक्तादिक साधु
श्रावक धरमइ करीनि० निर्वाण रूप महापाटणनइ | वि० वइ श० वइ आवइ पालइ समण भगवंत श्री महावीर देव पा०
पुहचावें अनंता कष्ट मइ जनम मरण न ल्हे एहवो स्थानक | से० तेणि इ अर्थे
स० हे सद्दालपु
त्र ए० इम

जाव विलुप्पमाणे उमग्गपडिवन्ने धम्ममतेणं पंथेणं सारक्खमाणे णिव्वाणमहापट्टणा भिमुहे साहत्थिं पावेति से केणट्ठे
व० महासार्थवाह कहीजे २ ए त्रीजो
प्रश्न हिवे चोथो प्रश्न कहे छइ
गोसालो बोल्यो सद्दालपुत्र प्रते: | आ० इहां आव्या हता हे देवानुप्रिया छइ
सो महाधर्मकथानो करणहार | के० कुण हे हे दे
वानुप्रिया | म० महाधर्मकथानो क
हणहार गोसालो
कहइ छइ | ए० इम खलु
निश्चे हे हे दे

णं सद्दालपुत्ता एवं वुच्चति ३ आगते णं देवाणुप्पिया इहं महाधम्मकही ४ केणं देवाणुप्पिया महाधम्मकहा एवंखलु
व० तानाव
लनसोनल | स० समण भगवंत
म० महावीर देव | म० मोटी कथानो कहणहार मोटी जे परखदा
नो विस्तार तेहनइ दानादि धर्म सं० संसार
चउगति रूप भ्रमण करै घणा जीव मिथ्यातवी | न० नासतां थकां वि० विणसतां थकां पितं छेदाजने भेदीज
तें मारीजते थके लुटिजे ते थके

देवाणुप्पिया समणेभगवं महावीरे महतिमहालयंसि संसारंसी बहवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमा

४४

उ० उन्मार्ग प्रमा | स० सत्यमार्ग भ्र
विणठा नुका | मि० मिथ्यात्वे करी पलइ प
राजमाणता देवक पमिथ्या
तवव लाभि भूता नतथा | अ० आठ विध कर्म रूप तम पडल अंधकार समूह
तेणे प्रगटव सर्वव्याप्यानि तिआठ प्रकार नां निकाचि कर्म
मंतर रूप तमर अपणा नइ करी दांक्या छइ | ब० घणा अर्थ जीवनइ अ०
अर्थइ करी जाव यावत् वा०
व्याकरणे करीने इकरी स

णे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छबलाभिभूते अट्ठविहकम्मतमपडलपडिछिन्ने बहूहिं अट्ठेहिय जाव वाग
मकावीन त्वार्थनइ कहीवइ चा० चार गति रूप सं० सं
सार थी कं० निस्तार पार पमाडइ कुण भगवंत
श्री महावीर देव इम बोल्यो छइ | से० तेणि अर्थें हे सद्दाल हे हे देवानुप्रिया महाक
थानो कहणहार ए० इम कहीजइ चोथो प्रस
न समाप्त ४ आगे पांचमो प्रश्न कहइ छइ | आ० आगंता हे हे देवानु प्रिया
इ० इहां महानिर्यामक आमा

रणेहिय चाउरंतसंसारकंताराओ साहत्थिं नित्थारेति से तेणंट्ठेणं देवाणुप्पिया एवं वुच्चति ४ आगते णं देवाणुप्पिया इहं
तां सद्दालपुत्र गो
साला प्रते इ बो
ले तो हुवो | के० ते कुण | दे० हे देवा
नुप्रिय | म० महानिर
जामका | ए० इम खलु निश्चे हे
हे देवानुप्रिया | स० समण
भगवंत | सं० संसार रूप समुद्र मांहि घणा जीव नासतां त्रासतां
सताजनम जरा मरण थी विणसतां विकतां निगोदमें प
तां ने सतइ अनंत संसार समुद्र थकी हूबतां नइ राखे इ ४

महाणिज्जामते ५ से केणट्ठेणं देवाणु० महानिज्जामते एवंखलु देवाणुप्पिया समणेभगवं संसारेमहासमुद्दे बहवे जीवेनस्समाणे जाव
मीस मसकादिक आलावो तथा संसार समुद्र केहवो छे तेकहइ छे संसार रूप समुद्र जनम जरा मरण रूप सो मोह रूप पाणी छइ २ राग द्वेष रूप पांणी कादो कीच ३
क्रोधादिक आरपा लालकलसा छइ ४ चार कर्म जाल मगर छइ ५ कुटंब सने ह मच्छ कच्छादिक छइ ६ प्रमाद मीमिथ्या लो रूप सीय सं घोटीयाछे ७ मी तिर्यं
करण धरादि दि समण मांणक मोती अमोलक छइ ८ तीर्थंकर नी वाणी अमोलक अमृत प्रवाह छइ जीके जीव संक्षेप आष मालेइ नइ व्रत पच्चक्खाण बोले
इ ने फल माय रूप सीमाधसी जीके जीव संसार समुद्र तीरसी सासार रूप संसार समुद्र मांहि जरा मरण संजोग मरण मांनसी इस्य मस्यादि व उले जलकल्लोला
दिकनी लाहीर करें धगति रूप बडवानल विषइ परिभ्रमण करतो आवइ जे धर्म रूप द्वीप नो आधार लइ तथा संजम रूप नावा तिणे सुधर्मप्रमुख निर्जामक नो वांनो छे
कहणहार छइ एहवी नावाइ करी जीव सीध रूप मदान मरनइ विषइ पोहचावइ तिहां अनंत अनंत आडलीनिर्मल विहु सुख जीव अनुभवे निबुडतां संसार समुद्र मांहिसे
संसार प्रवाह मांहि तो प्रालीन इ जीव नइ धर्म रूप नि नावा तारवा समर्थ नियोंल मो रूप तीर व तइ पार्श्व स मख प्रणई अजरामर: ॥१॥

विलुप्पमाणे बुडमाणे निबुडमाणे उप्पियमाणे धम्मतीते नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं संपावेति से तेणंट्ठेणं देवाणुप्पिया
प० पडइ जीवसुधर्मांमइ से० तेणें कही ये देवानुप्रिया
इ० इम कह ज० समण भगवंत श्री महावीर देव महानि
र्जामक इहां जाणवा गोसालो गुणग्राम करइ छइ | सद्दालपुत्र नइ आगइ कर आणे कहइ
त० तिवार पछी से० ते स० सद्दालपुत्र
स० समणोपासक श्रावक | गो० गोसाला मं०
मंखलीपुत्र प्रते | ए० इम
कहे | तु० तुम्हे हे हे देवानुप्रिया इ०
एवा तम म ह

एवं वुच्चति ५ समणे भगवं महाणिज्जामते ततेणं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी तुज्झेणं देवाइयाण्या

जा० यावत् अतिनिपुण चतुर दे० आप कालिने मह वीरे ए० ८तु नायसमस्तनय वादी मातनय ना जाण ए० नार | छ० अति लि तर्प दे मनादि ए० नार अ० अ तिदिचिज्ञान वत वचन क० नाए लौकाई | प० प्रश्न समर्थ तु० तुम्हे म० माह राघ० धर्माचार्य साथे | ध० धर्मे दि० स दाना | स० समर्थ न० नगवंत

उपासक० ४५

जावइय निउणाईय नयवादी इयवयणसलद्ध इयविण्णाणपत्ता पहूणं तुम्हे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं भग

म० श्री महावीरदेव सं० संघात ह | वि० विवाद रस्या | णि० नहीं जाणवा तेमे समरथ | से० ते केणं अर्थे दे० अहो देवानुप्रिय ए० इम कहइ | नो० नहीं ख० निश्चय० प्रभु समरथ तु० तुम्हे माहरा ध० धर्माचार्य | जा० यावत् श्री महावीर

वंतामहावीरेणसद्धि विवादं करेत्तिते णोतिणठे समठे सेकेणठेणंदेवा एवंवुच्चति णोखलुपभूतुम्हे ममं धम्मायरिएणं जाव महावी

स० संघा तइ | वि० वाद न करी सोकार एकां ८ गोसालो बोल्योसदे हे सद्दालपुत्र | से० ते अर्थ हं सांजइ | के० कोई एक पु० पुरुष अतीहीनिरदयतरु० तरुणयुवा न वहतीवयनो बली नली कलानो जाण बलेत विगनानी | ए० एकमहे मोटो अ० बली | ए० बोक को

रेणसद्धि विवादं करित्तते सद्दालपुत्ता सेजहानामए केइपुरिसे तरुणेजुगवंजावनिउणसिप्पोवगते एगंमहं अयंवा एलयंवा

स० सू अर | कु० कुकड जीव | ति० तीतर जीव | वि० विंदा जीव | ला० लावक लावराजीव | क० कल नर | क० बलीजी ववि जीव | व० काग ओ जीव | सि० सिवो णजीव | ए० हाथे फाली | पा० पगमाफ फाली | खु० खुरथी फाली | पु० पो छ

सूयंवा कुक्कुडंवा तित्तिरंवा वट्टयंवा लावयंवा कवोयंवा कविजलंवा वायसंवा सेणयंवा हत्थंसिवा पायंसिवा खुरंसिवा पुछं

थीफा ली | पि० पूछथी फाली | सिं० सिंगम थी फाली | वि० दांतथी फाली | रो० रोमथी फाली | ज० जिहां थीजी हाथी फाली | ति० तिहां र निश्चल चालीन सकर्ड नेश्चा गोफाली नि० च्यार अंग ह लोवी न सकइ | ए० इणे दृष्टांते इम श्री म० स मणनगवंत श्री महावीर

सिवा पिछंसिवा सिंगंसिवा विसाणंसिवा रोमंसिवा जहिं२ गिण्हति तहिं२ निच्चलं निफ्फंदं धरेति एवामेवसमणेभगवंमहावीरे

म० मुझने बं० घणा | अ० अर्थे करीने | हे० हेतेकरी नइ | वा० प्रश्नेकरी व्याकरणे करी | ज० जिहां २ पु० छेतिहां २ हं बोली न सकुं विवादीन कहुं मुझने वचनमांथी सटकाइ | से० तेतेण इ० अर्थे स० हे सद्दालपुत्र | ए० इमक हिजइ

ममंवहुहिं अठेहिय हेऊहिय जाव वागरणेहियजहिं२ गिण्हति तहिं२ निप्पठ वागरणं करेति सेतेणठेणंसद्दालपुत्ता एवंवुच्च

४५

नो० नहीं ख० निश्चय प० प्र तुम्हे छ० | त० तुम्हारा धर्मा चार्य | जा० यावत् म० श्री महावीर स० साथे वि० विवाद सास त्रनो करीन सइ | ते० तिवारे से० ते स० सद्दालपुत्र | स० समणो पासक | गो० गोसालामंखलि पुत्रप्रतइ

ति णोखलुपभूतुम्हे ममधम्मायरिएणं जावमहावीरेणंसद्धिंविवादं करित्तए तत्तेणंसे सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालंमंखलिपुत्तं

ए० इम व० कहइ | ज० जेहिलै हे देवानुप्रिय | तु० तुम्हे म० माहरा ध० धर्माचार्य नइ | जा० यावत् म० श्री महावीर नइ | स० छता गुण | त० सत्य | त० तथ्य ते | स० सविद्यमान त० ते कहता वइ सम | गु० गुणकीरतन स्तवनाकरी

एवंवयासी जम्हाणंदेवाणुप्पिया तुम्हे ममधम्मायरियस्स जावमहावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूतेहिं भावेहिं गुणकित्तणंकरे

त० तेमा टइ | अ० हुं तु० तुमने | पा० पाडिहारी पी० पीठफ० फलग जा० यावत् सं० संथारादिक | नि० निमंत्रं छे जोइयें ते ल्यो जा० नहीं तुमनें हीं धर्मनहीं कर्म करीने हि तुनथी | त० तप नहीं अह्मारा तव नो फल नहीं | उ० ते मा टइ उ० तुमेय ज्यो कुं० माहरा

हि तम्हाणंअहंतुब्भे पाडिहारिएणंपीढ जावसंथारएणं उवनिमंतेमिनोचेवणंधम्मोतिवा तवोतिवातं गच्छहणं तुब्भे ममंकुंभारावणे

कुं० माहरी हाट बइ वा० पाडीहारु जा० यावत् पि० पीठ फलक रासी छ्या संथारो | उ० जेइ मा इ विवारी ज्यो वसे पछाले इन इ वि० विचरो | त० तिवारे गो० गोसालो मं० खलिपुत्र | स० सद्दालपुत्र स० श्रावक नो | ए० एह वो वचन सांभल सजलीनइ

सुपाडिहारियं पीढफलगं जावउगेण्हत्ता उवसंपज्जित्ताणंविहरति ततेणंगोसालेमंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तसमणोवासयस्स एयमहं पडिसुणेइ ता

कुं० कुमारनी हाट सेती पाडिहारु पी० पी ठफलक सेजा संथारो जा० यावत | गि० लेइ न इ वि० वि चरे | त० तिवारे गो० गोसालो मं० खलिपुत्र | स० सद्दालपुत्र श्रावक घणी आजीवणा विचार णा करी नहीं समरथ व० घणा

कुंभारावणेसुपाडिहारियंपीढफलगजावउगिण्हित्ताणंविहरति ततेणंसेगोसालेमंखलिपुत्ते सद्दालपुत्तंसमणं जावनोसंचाएतिवहूहिं

आ० अनुकूल वचनेकरी विनंतिवे अक्रोस वचन करि ४ | नि० निरुपिथ वचन मार्ग थकी | चा० चाल्यो नहीं | खो० खोभन पाम्यो | वि० सकाविपरिणा मी नहीं | ता० तिवारे सं० थाको व० विसेष थाको | पो० पोलासपु रथकी गोसालो

आघवणाहिय जाव निग्गयाणिपावयणाओ संचालित्तएवा खोभित्तएवा विप्परिणामित्तएवा ताहे संते परितंते पोलासपुरतो पडिनि

कजेनीक लानइ: | किं वादिस्देसमां हिकिं विवरे घणापरवासमां विवरतउइवे | तं० तिवारि तं० ते | स० सद्दालपुत्र स० समणो वासक श्रावकः | व० घणा सी० सील व्रतादिक जाव तनावताथ का गुणवत तेवे रमणपवखाणपोसह करी आ० आत्माभावतो...

समणोवासए विहिया जणवयविहारं विहरति तते णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वय जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराति
मारगया | व० घनराव वरसाधे वरततांथ कांधसमधनकरतांथ कांए कदाइस्नावैनेवि | बे | उ० आदी रात्रना समयने विषे जा० यावत | वो० वोलवा वाना निविचइ धर्मजा गरका करतांथका स० समणन भगवंत श्रीमहावीर | सेवासइ धरमनी

वितिक्कंताइं पन्नरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स भगवतो अंतियं
उपसंपदा जो तेथ कोविवरे तं० तिवारे थके | से० ते ए० एकदे० दे वतामा० मोहि: | नी० नीलोत्पल कमलसमान घणा लेइने इ० एक म० चु० चुलणीपिता नइ अवसर नृ की धी: | त० तिमज दे० देवता न उपसर्ग करइ | ए० एतलो विसेष | ए० एकेक वलि नव मास ना

धम्मपन्नत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरति तते णं तस्स सद्दालपुत्तस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अंतियं पाउब्भवित्था तते णं से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय एवं जहा चूलणीपियस्स तहेव देवे उवसग्गं करेति णवरं एक्केक्के णवमंससोल्लए करे
ला क रे | जा० यावत क० लघु पुत्र मारीलोहीना ट इ: | जा० यावत आ० सरीर सीचइ: | त० तिमज स० सद्दालपुत्र नें | क० अवी दवलेजा० यावत धर्मध्यानने विषे विचर तेथ को देवीने त० तिवारइ पछे से० ते दे० देवता स० सद्दालपुत्र प्रतइ: | अ० अवी दवले जा० यावत प० देखाइ देवीनइ पछे

ति जाव कणीयसं घातेति जाव आयंचति तते णं सद्दालपुत्ते अभीते जाव विहरति तते णं से देवे सद्दालपुत्ते अभीतं जाव पासित्ता
च० चोथीवार स० सद्दालपुत्र | स० समणोपासक श्रावक प्रतइ एइम कहेवा लागो | द० देवता वालउ त | अ० अकाल मरणना वांछणहार जा० जावत वरतनही ते० नाज नो: | त० तो जेतारा अ० अग्निमित्रा ना० नायाः

चउत्थंपि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी हं भो सद्दालपुत्ता अपत्थियपत्थिया जाव न भंजसि तातो ते जा इमा अग्गिमित्ता भारिया
ध० धर्म मती सवाइ | ध० धर्मनइ विषे वेगली | स० समानसुख दुख नी सहाय करी | त० ते तेने सा० ता करी घरथकी आ० लीनइ: | त० ताहरे आगे मारीमारी नइ | न० नव मास ना सोला करेनी | आ० आधणनी करी नइ

धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं ते साओ गिहाओ णीणेमि णीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि नव मंससोल्लए करेमि आयाणभरियंसि

का० कडाहा मांहि आ० पचावीने | त० ताहरा गा० गात्र मंसा सहीने | स० तो ही करीने आ० छाटि स० ता ताहरी मीजने विषइ: | ज० जिम तु० तु आ० आरत ध्यान करीने दुख्या नेकरी जा० यावत इहबदेवीने मरीसी | त० तिवारे तेस० सद्दालपुत्र ते० तेदेवे

कडाहयंसि अद्दहेमि तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयंचामि जहा णं तुमं अट्ट दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि तं से सद्दालपुत्ते
व० तानइ | ए० एम ख० खव नकहेथके | आ० अवीहवले जा० यावत वि० विचरइ | त० तिवारे तेदेव तासद्दालपुत्रने | दो० दो यवार | त० त्री नवार | ए० इमकहे इ | ते० तोसद्दाल पुत्र | त० तिमइज कहइ:

तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीते जाव विहरति तते णं से देवे सद्दालपुत्तं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हं भो सद्दालपुत्ता तं चेव भणति
त० तेदेवे स० सद्दालपुत्र नइ | ते० तेदे० देवताए दो० दोयवार तीनवार | ए० इमकहे थके | अ० अ० अधवा सा य उपनो | ए० इमजे० जिम चु० चुलणीपिता नीपरइ | त० तिम चिंतवे | जे० जेणे पापी ऐम० मारा जे० ज्येष्ठपुत्र जे० जेणे दे

तस्स सद्दालपुत्तस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अयं अज्झत्थिए ४ एवं जहा चुलणीपिता तहेव चिंतेति जेणं मम जे
वि० म० मारा घर थकी म० लघु पुत्र मारी लोहि करी कड़ाई | जे० जेणे पापी एम० मारा घर थकी पुत्र ने मारीने जा० जावत म० लोहि सरीर इसींचइ: | जा० एव ली धर्म करी अस्त्री | अ० अग्निमित्रा ना रजा | स० मारे साधु सुख...

ट्ठं पुत्तं जेणं ममं मज्झिमं पुत्तं जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव आयंचति जाविय णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्ख
उपहार ते पिण घावीवे मा० मा० घर थकी आणीनइ: | म० मारे आ० आगलि मारसे एपापि स० | त० तो श्रेयजनें नहि० स्त्र० निश्चे म० इस | ए० एह पु० पुरुषनें नी० गृहवा नाम काल्ये | वि० इम चिंतवी क० कहवाने नइ

सहाइया तंपिय इच्छति साओ गिहाओ णीणेत्ता ममं अग्गओ घातित्तए तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उट्ठाइए
ज० जीमचू० चुलणी पिता नी परइ सर्व अधिकार | ना० जाणवो ति मज | ल० एत लो विशेष: | अ० अग्निमित्रा को० कोलाहलनो साद स लीनइ कहइ: | से० सेव सर्व चूलणी विषे | थ० कतो अधिकार जाणवा कती परवार जाय वाली न ल० एतलो विसेष

जहा चूलणीपिता तहेव सव्वं भाणियव्वं णवरं अग्गिमित्ता कोलाहलं सुणेत्ता भणति सेसं चुलणीपितावत्तव्वया णवरं अरुणे

उपासक० ४७

कूयवत्तव्वया जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति निक्खेवो उवासगदसाणं सत्तमस्स अज्झयणस्स सम्मत्तं ७ जइ णं भंते समणेणं

भगवया महावीरेणं आइगरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अ-

ट्ठे पण्णत्ते तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी एवं खलु जंबू तेणं कालेणं २ रायगिहे नयरे गुणसिलए

चेइए सेणिए राया तत्थ णं रायगिहे महासतए नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे जहा आणंदे नवरं अट्ठ हिरण्णकोडिओ

निहाणपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं ४७

वएणं तस्स णं महासतयस्स रेवतीपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था अहीण जाव सुरूवाओ तस्स णं महासतगस्स रेवतीए

भारियाए कोलघरियाओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था अवसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं घरियाए

एगमेगा हिरण्णकोडी एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु० गामाणं

गामं दूइज्जमाणे संजमेणं तवसा जाव विहरइ परिसा निग्गया जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ णवरं

अट्ठ हिरण्णकोडिउ सकंसाओ उच्चारेइ अट्ठ वया रेवतीपामुक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खामि सेसं सव्वं तहेव इमं

च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ कल्लाकल्लिं कप्पइ मे दोणिदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए तते णं से

महासतगे समणोवासए जाए अभिगय जाव विहरइ तते णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ तते णं तीसे रेवती

वक्तीवइ: | अ० एकदा प्रस्ता वनेंविषइ | पु० मध्यरात्रनें समयनें वि षइ: | कु० कुटुंबजागरकाकरती इ० एहवो | अ० अध्यव साअउपनो | ए० इम मन० निश्चे अ० हुं बारइ सो क्यनइमागइ:

उपासक० ५८ एगाहावइणीए अण्णयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजावइमेयारूवे अज्झत्थिए ४ एवंखलुअहंइमासिं दुवाल
केकरीनइ | वि० व्याघात इकरीनइ: | नो० भोगतीअंत रायनदीसमर्थ | म० महा सतक: | स० समणोपासक आवकनें संघातइ | स० संघातनइ उ० उदारधप्रं नम० मनुष्यसंबंधिया: | भो० भोगभोगवीनइ भोइयासोकाअतीपो एहवोकामककम० महासतकसंघाते भोगवतीथकी विचरु:

सण्हंसवत्तीणं विग्घाएणं नोसंचाएमि महासएणं समणोवासएणं सद्धिंउरालाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरित्तए
तं० ते सं० श्रेयस्क निश्चकमनइ: | ए० एहइ० बारइसोकनइ तेहनेंमारवी: | अ० अग्निनेंप्रयोगेए तलेअग्निकरीबालू नेंवकरेने: | स० शस्त्रीअ० रेंकरी तरवारकटारी | वि० विसप्रयोगक रीसोमलआदि | जी० जीवितव्यनाशकरी एहबारसोकनेंमा रनारीविषेः | ए० इमरीए

तंसेयखलुममं एयाओदुवालसवि सवत्तीयाओ अग्गिपओगेणवा सत्थपओगेणवा विसप्पओगेणवा जीवियाओववरोवित्ता एयासिंए
क० एकसोनानी कोडि: | ए० एककगायनोव्रज ते लेइनें सर्वलेइनइ: | उ० किं वीवरुतीनजो | म० महासतकसमणोपासकश्राव कसु संघातइ | उ० उदारधप्रनजा० प्रभोगतो भोगवतीथकी विचरु

गमेगंहिरण्णकोडिं एगमेगंवयं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ महासतएणं समणोवासएणंसद्धिं उरालाइंजाव विहरिस्स
ए० इमचीतवे इमचीतवीनें | ता० ते इ० बारइसोकनइंसार वानइअस्रथइरेवती: | अ० आंतरा देवइ: | छि० छिद्र देवें | वि० विवरक रे | क० एकोतेपरवाररहितदेष तीविचरइ | त० तिवारेरेवतीगा० गाथापती

एवंसंपेहेइ तासिंदुवालसण्हंसवत्तीणं अंतराणिय छिद्दाणिय विवराणिय पडिजागरमाणीविहरइ तएणंसारेवतीगाहाव ५८
अ० एक दाप्रस्तावे नेंविषइ: | त० तेहइ० बारइसोकनें तेहनो | अ० आंतरोजा णीनें | छ० छसोकनेंतरवारिकरीमारेछथी यारकरीविनासे | ब० छसोकनेंविसनइ प्र योगइकरीनइ मारइ

णीअण्णयाकयाइवि तासिंदुवालसण्हंसवत्तीणं अंतरंजाणित्ता छस्सवत्तीसत्थप्पओगेणउद्दवेइत्ता छस्सवत्तीउविसप्पओगेणंउद्दवेइ

ता० तेह इ० बारइसोकनेंमारी नें | को० पीहरसंव धी | ए० एकसोनानीकोडिएकएकव्र ज: | स० आपणेंघरेलि इनें | म० महासतकनें स० संघातें | उ० उदारधप्रनभो० भोगभोगावती

त्ता तासिंदुवालसण्हंसवत्तीणं कोलघरियं एगमेगंहिरण्णकोडीएगमेगंवयं सयमेवपडिवज्जइ महासएणंसद्धिं उरालाइंभोगभो
वि० विचरइ | त० तिवारे सा० ते रे० रेवतीगा थापतीणी | मं० मांसनेंविषे लोलित: | मं० मांसनइविषेंमूर्छितगि० एद्धइ० तपरसेंदनमांकइघणुंगीरधप्रएकाग्रपणें आसक्त: | ब० घणाप्रकारनाम मांसनानेंद: | सो० सूलाक रीनें

गाइंभुंजमाणीविहरइ तएणंसारेवतीगाहावइणी मंसलोलुया मंसेसुमुच्छियागिद्धागढिया अज्झोववण्णा बहुविहेहिंमंसेहिय सोल्लेहिय
त० ततिन तलीनें | भ० भूंजइया कर्तीनइ: | स० धवा दिवाल १ | म० मधनो नीपनो २ | मे० ताडक लनोनीव नो ३ | म० मद्यद्राखनोनीपनोप्रसीध द्राखनीनीपनोप्रंउउछाव द्राखनोतीपनो ४ | आ० छोडोवा बुधणेंनाथा सुं: | वि० आस्वादणो नाथवुंथोडो | प० देतीछ ती | प० सर्वथाप्रकारे भोगवतीथकीसा लीस

तलेहिं भज्जएहिं सुरंच १ महुंच २ मेरगंच मज्जंच सीधुंच पसण्णंच आसादेमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजे
वा दिवि० वि चरइ: | त० तीवारेरा० राजगृह नगरनइविषइ: | अ० एकदाप्रस्ता वनइविषइ | अ० एहवोअमारवर्त्तायो सेलकराजाकोइजीवनइ विनासीमती | त० तिवारेसा० तेरे० रेवती | मं० मांसनीलो लुप | मं० मांसनेंविषे म० मूर्छितप्र | को० आ पलीपी

माणी विहरइ तएणं रायगिहेणयरे अण्णयाकयाइ अमाघाएघुट्ठेयाविहोत्था तएणंसारेवई मंसेलोलुया मंसेसुमुच्छिया ४ कोल
हर नामनुष्यविस्यासी सं० तेडावीतेडावीनइ | ए० इमकह इ: | तु० तुम्हेदे० देवानुप्रीयाम० माहराघीहरर्ना बुज्ञोकलमाहिथी: | क० दिनदिनप्रते देइय दोयगायनांवाछा | कु० मारीनेंतलीवरेंकजनेंआणीदो

घरएपुरिसेसद्दावेइ एवंवयासी तुब्भेदेवाणुप्पियामममंकोलघरएहिंतो कल्लाकल्लिंदुवेरगोणपोतए उद्दवेह २ ममंउवणेह
त० तीवारेतेको० पीहरनालोकतेरे वती: | गा० गाथापतीणीनोव चनत० प्रमाणकरइ: | ए० एहवोअर्थवीनयसेंसांभलेसांभलीनइरे० रे वतीगाथापतीणीनें | को० पीहरीया नाकुलथी | क० छ्नातसम यइ० दोय वाछरुया

तएणंतेकोलघरियापुरिसेरेवतीए गाहावइणीएतहत्ती एयमट्ठंविणएणं पडिसुणेइरेवतीएगाहावईएकोलघरिएहिंतो कल्लेर दुवेर

डाक्टर भाऊ दाजी
Dr. BHAU DAJI

मारीनें | उ० आलिंदिरे रेवतीगा० याथाव तीलीनें आवइ: | त० तिवारेतें रे० रेवतीयीयांगो० वाबइ वानामांसनइ: | सो० फलाक रीनइ: | फ० मदसंघातें अ० आ स्वादथीफबइ: | वि० विव रइ:

उपासक०७ ५५

गोणपोसए उ वद्देती रेवतीए गाहावइणी उववोइ तएणं सा रेवति एतेहिं सोणमंसेहि सोल्लेहि य सुरं च आसाएमाणी ४ विहर

त० तिवारे तें | म० महासतकश्रावकनें कं घूणा | जा० जावतसीलव्रतधा नतानावनानाव्रता | व० ववदें वसव तिक्रमा: | त० तीमजजे० कमउत्तनइ स्थाविंसथावीनइ | जा० ज्या नतः | पो० पोवधसाला नइ विबइ:

इ तएणं तस्स महासतगस्स बहुहिं सीलव्वय जाव भावेमाणस्स चउद्दस संवच्छरा विइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए

ध० धर्मनी कथा ए व्रतमांवर्ततां थ कांवि० विचरइ | त० तिवारे तेरे० रेवती गा० गाथावतीजी | म० मातीथकीमद्यवीवीने लोलवीमासतें विबइ वि० विखरमामाथानाकेसर० उपर लोचस्त्रहतारी नें | वि० आकारनो मीतेविकटव वनकहती: | ते० जीहां पो० पोषधसालानें

धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तएणं सा रेवती गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोस

विबइ: | जे० जीहां स० महासतकश्रम० समणोवासकश्रावक छे: | ते० तीहां आवी आवीनें | मो० मोहनां करणहार मनोमतावचनः | सि० एहवा श्रृंगार कीधा | इ० स्त्रीभाव चेष्टा दिखावती आं० देखाव इरेखावती | म० महासतक समणोवासक

हसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ मोहुम्मायं जणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावइ उवदंसेमाणीं २ महासतयं

श्रावकछे ते: | ए० इमकहे इ: | हं० हेमहासतक हा | स० समणोपास कश्रावकः | ध० धर्मनइ कांवेवइ: | पु० पुन्यनां वांछे छे: | स० देवतानां सुखवांछे: | मो० मोक्षनीवांकरइबइ: | ध० एहीज धर्मनीवांछा | ध० एली धर्मनी

समणोवासए एवं वयासी हंभो महासतया समणोवासया धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकंखिए धम्म

पिवासा | कि० तेसर्व उजनेंदे देवानुप्रिया: | ध० फलनेंवे वाधीधर्म | पु० पुन्य सी: | स० स्वर्ग दोसी | मो० मोक्ष सा: | ज० जोतुंमतस अज्जिनाथे० उदार भोग जाज्यावतमनुष्य संबंधीया भोग भोगवतो न विचरइ:॥ | ५५

पिवासया ४ किं णं तुब्भं देवाणुप्पिया धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा जं णं तुमं मए सद्धिं उरालाइं जाव भुंजमाणे णो विहरइ

त० तिवारे म० महासतक: | रे० रेवतीनामें गा० गाथावतीलीनें | ए० एहवो वचनो कें सामी विलनजोयो | रा० आदर कीनइ:

तएणं से महासतए रेवतीए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ णो परियाणाइ अणाढाइमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए विह

ध० धर्मध्यांननइ विबइ महासतकविचरवालागो | त० तिवारें रे० रेवती | म० महासतकस० समणोपासकश्रावकनइ | दो० बीय वार | त० तीन वार | ए० इमकहइ: | हं० अहो महासतक त० तिमज श्रावक: | सो० महासतकतत्तीम

इ धम्मज्झाणोवगए विहरइ तएणं सा रेवइ महासतयं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हंभो तहेव भणइ सो वित

जजा० यावते | अ० सामोपीलनइ नायोसाकरीनइ | अ० आदरपीलनदी छेकि विचरवालागो महासतक: | त० तीवारेस० तेरे० रेवता | गा० गाहा वइली | म० महासतकस० समणोपासकश्रावक: | अ० संमोपील नजोयोरागइ करीनइ:

हेव जाव अणाढाइज्जमाणे अपरियाणिज्जमाणे विहरइ तएणं सा रेवती गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं अणाढाइज्ज

अ० आसलाइमलीचिंता करती आदरवी लनदी छे: | जा० जीणे दिसथकी आवीहेती | ता० तिणे दिसें पाछी गइ: | त० तीवारइ पछेंसा० तेम० महास तकस० समणोपासक श्रावक: | प० पहलीश्रावकनी प्रत

माणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया तएणं से महासतए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उव

मा एकमासलगइ उ० लेइनइ विवरे | प० पहलीवतमा जीमसूत्रमेंकहीबइ तिमजा० यावत ए० इम्पारे व्रतमा ववइ इ | त० तिवारेसें तें म० महासतक: | तें० तेहउदार तवें इकरीनें | जा० यावतकि० सधमनीसमांनस रीरथयो

संपज्जित्ताणं विहरइ पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि तएणं से महासतए तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसंतए जाते तएणं

त० तिवारें तें० तेम० महासतकश्रा० समणोपासकश्रावक: | अ० एकदाव स्ताव: | पु० आधीरात्रना समयनें विबइ: | ध० धर्मजागरकाजागतां थकां | इ० एहवो मननें वि छइ

तस्स महासतयस्स समणोवासगस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे

उपासकद० ५१

अ० अध्यवसाय उपनो किं चिंता | थयो | म० मनोगत न | स० अपनो | ए० इ म | स० संकल्प आ० अज्झत्थिए | जा० यावत् किसे धमनिसंतए जलिजा० इवो | ते० तेतलीअ० छे मे० माहरइ

अज्झत्थिए चिंतिए पत्थीए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं इमेणं जाव किसे धमणिसंतए जाए तं अत्थि ता मे

उ० उठाण कर्म बल वीर्यनादिक | पु० पुरुषाकार प० पराक्रम | स० सद्दहणा धृतिसंवेग | अ० अछि ते छता | जा० यावत् धर्माचार्य | ध० धर्मना उपदेशक

उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिइसंवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे

स० श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेव जिन जिन नामवंत | ता० तेतली सो० श्रेय | क० काले प्रभातिरात्रि गया पछे | अ० अर्धरात्रि पछी | जा० यावत् जलंते

समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव ता मे सेयं कल्लं पाउ जाव नाए रयणीए अहं पुव्वरत्ता जाव जलंते

अ० अपश्चिम मरणांतिक | स० संलेखना करी झूसी सरीर | भ० भातपाणी प० पचखीने | का० काल अणवांछतो थको धर्मध्यान विहरे | त० तिवारे तेह

अपच्छिममारणंतियं संलेहणा झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खित्ते कालं अणवकंखमाणे विहरइ तए णं तस्स

स० तेह श्रावक | अ० अध्यवसाय | सु० भला परिणाम | ले० लेस्या | त० ते आवरणी कर्मनो क्षय

महासतगस्स समणोवासयस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं ख

उ० उपसम | अ० अवधि उपनो | पु० पूरव दिसि लवण समुद्र ताइ जो० हजार जोजन | खे० खेत्र जाणे | द० दक्षिण दिसि लवण समुद्र ताइ जो० हजार जोजन

ओवसमेणं ओहिनाणे समुप्पन्ने पुरच्छिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ दक्खिणेणं लवणसमुद्दे जोयणस

खे० खेत्र जाणे देखइ | प० पश्चिम दिसि | उ० उत्तर दिसि जा० यावत् चूलहिमवंत ताइ | व० वासधर पर्वत ताइ जा० जाणे देखइ | उ० ऊंचो जा० यावत् सो० सौधर्म देवलोक ताइ सीम जा० खेत्र जाणे देखइ

हस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ पच्छिमेणं २ उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवंतं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ

अ० नीचे इ० ए रत्नप्रभा पृथ्वीनो | लो० लोलुयच्चुत नरकावास | वा० चोरासी हजार वरस स्थिति | त० तिवारे रे० रेवती नामे | गा० गाथापतणी | अ० एकदा प्रस्तावे

अहे इमीसे रयणप्पभाए लोलुयच्चुतं णरयं चउरासी वाससहस्सट्ठितियं जाणइ पासइ तए णं सा रेवई गाहावइणी अण्णया कयाइं म

ज० जेथे महासतक | जे० जिहां पोसहसाला | ते० तिहां आवीनइ | म० महासतकने त० तिम ज क० कहइ

त्ता लुलिता विइण्णकेसी उत्तरीज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव महासतए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ महासतयं तहेव भणइ

जा० यावत् मोहना करणहार | सिं० सिणगार | इ० स्त्रीना भाव | दो० दोय वार | त० तीन वार | ए० इम कहइ | हं० अहो महासतक त० तिम ज कहइ | रे० रेवती नामइ | गा० गाथापतणी

जाव मोक्खमाइं जणणाइं सिंगारियाइं इत्थिभावा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हंभो तहेव तए णं से महासतए रेवतीए गाहा

दो० दोय वार | त० तीन वार | ए० इम कहु | स० सखं | आ० क्रोध उपनो | क० रुसीं कोप्यो | मि० मिसमिसीस | उ० अवधि पउंजइ | उ० अवधिये जोइने | रे० रेवती गाथापतणी

वइणी दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए मिसिमिसिमाणे ओहिं पउंजंति ओहिणा आभोएइ रेवती गाहावइणी

ए० इम कहे | हं० अहो रेवती | अ० अप्रार्थितनी प्रार्थनी करनार | ए० इम निश्चे तुं | अ० सात रात्र मांहि | अ० अलस नामइ रोग | वा० व्याधि करीने | अ० पराभवी थकी | अ० आर्त्त ध्यान... थकी

एवं वयासी हंभो रेवती अपच्छियपच्छिया एवं खलु तुमं अंतो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूता समाणी अट्टदुह ५१

असमाहिपाम्यथकी दुःखपामतीथकी | काः कालनेअवसरेकालकरीनइ | अः नीचीइ रत्नप्रभानामापृथ्वीनइविषइ | लोः लोलुचानामेनरकावासो | चोराशीहजारवर्षनीस्थीतीनरकनइविषइ

उपासक० ५२

यमट्टी असमाहीपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहेइमेसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुएणारिए चउरासीतिवाससहस्सठि
नइनारकीनपणइ | उः उपनी | तः तिवारेंपछेंसेतेरेवती गाः गाथापतीणी | मः महासतकसमणोपासकश्रावकनो | एः इमकहइ थकइ | एः इमकहइ: | रुः रुठो

तिएसु नेरइयत्ताए उववन्ना तए णं सेरेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी रुट्ठे णं
मः कोपवन्यो महासतकश्राव कः | सः समणोवासकहीण हीणमः कजपरे | मः महासतकअतीक्रोधथयोछतोपणजे नजिमकोइसरापदेवेतिमकजेमहासतकरापदीधो | मः कहइनइमः महासतकः | सः समणोवास कश्रावकः | नः नमानइन जाणः

ममं महासयए णं समणोवासए हीणे णं ममं महासयए णं अवज्झायाणं ममं महासयतएणं समणोवासएणं न नीज्जइ णं
अः कवनइकेः कीणहीकः कुमारणइ | माः मारीसेंएकोपोथकोइमचिंतवेवितवीनइजाः बीहनीतः त्रासपामीवः नाठी: | अः अनिष्ट पामी: | सः चिंतमांहिनिपनोसः हलवइहलवइपाछीवलीनी | जेः जीहांसः आपणो घरछइ:

अहं केणवि कुमारेणं मारिज्जिस्सामिति कट्टु भीता तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया सणियं २ पच्चोसक्कइ जेणेव सए गिहे
तेः तीहांआवेआवीनइ: | उः आगलइथोदेइआर्तध्यानध्यावइकरी: | तः तीवारइपछसातः तेरेः रेवती | गाः गाथापतीणी | अः सातरात्रमांहिं | आः आलसनामारोगउपनोसरवशरीरव्यापीः

तेणेव उवागच्छइ २ ओहता आवझियाइ तएणं सा रेवती गाहावइणी अंतोसत्तरत्तस्स आलसएणं वाहिणा अभिभूया
अः आर्तध्यानरोद्रध्यानइकरीनइ: | काः कालइअवसरइकालकरीनइ: | इः एहीज | रः रत्नप्रभानामेपृथ्वीनइविषइपहिली पाथडो: | लोः लोलुचनामेंनरकावासानेविषेंचोराशीहजारवरसनेआउखेंनारकीपणेंआवनेंउपनी: ॥

अट्ट दुहट्ट वसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयचउरासीइ वाससहस्सट्ठिएसु उववन्ना

५२

तेः तीणेकालइतेतेसमइ | सः समणभगवंतमश्रीमहावीरदेवआव्यते | सः समोसरया | जाः यावतपर्षदावांदिवानीकली | गोः गोतमादिकआदेइनइसः समणभगवंतश्रीमहावीर: | एः इमकहे

तेणं कालेणं २ समणे भगवं महावीरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया गोयमादि समणे भगवं महावीरे एवं वयासी
एः इमखः निश्चे | गोः हेगोतम | इः एहीजराः राजगृहनगरनइविषइ: | मः माहरोअः अंतेवासीमः महासतकसमणोपासकश्रावकमांहरेंवासीवृत्तलेइनें पोः पोसधसालानइविषइ: | अः छेहलीमः मरणांतक:

एवं खलु गोयमाइ हेव राय गिहे णयरे ममं अंतेवासी महासए नाम समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम मारणंतियं
संः संलेषणाझूः झूसीतसरीरथको: | भः भातपाणीरूः खवीनइ: | काः कालअणवांछतोथकोकिंचिंत रइमलोमतका: | तः तिवारेंपछेंतः तेमः महासतकश्रावकनें | रेः रेवतीनामे

संलेहणा झूसणा झूसीरे भत्तपाणपडियाइक्खइ कालं अणवकंखमाणे विहरइ तए णं तस्स महा सतगस्स रेवती
गाः गाथापतीणी | मः मातीथकीजाः यावतविः वस्त्रनाषतीथकी: | जेः जीहांपोः पोसधसालानइविषइ: | जेः जीहांउः आवीनइ: | मोः मोहनीकरणहारएहवावचनकहइजाः जावतएः इमकहइतः तीमज:

गाहाथइणी मत्ता जाव विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव उवागच्छइ मोहुम्माइं जाव एवं वयासी तहेव
जाः जावतदोः दोयवारतः तीनवार | एः इमकहे | तः तिवारइपछइमः महासतकासः समणोपासकश्रावक | रेः रेवतीगाः गाथापतीणीनेवचन | दोः दोयवार | तः तीनवार | एः एहवावचनेन रुठ्या:

जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी तए णं से महासमतए समणोवासए रेवतीए गाहावइणी दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे
आः क्रोधउपनोक्रोध | उः अवधज्ञानप्रयुंजीनइ: | रेः रेवतीगाः गाथापतीणी: | जाः यावतनरकातेदीनेमरीनइविषइउपजसें | नोः नहीकः कल्पेंरखनिश्चइगोः हेगोतम: | सः समणोपासकश्रावकन इ:

आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ २ रेवइ गाहावइणी जाव उववज्जिहिसि नो खलु कप्पइ गोयमा समणोवा

आ० वेदनी जा० यावत् झू० संलेषणाइ झूषवलय थोसरीरम० हासतकनइ भ० भात पा० पाली | क० पचखाणइ वाश्रा व कनइ: | प० परनेंस विद्यमान | त० साचि वात | त० ति मइज | स० सद्भूत | अ० अ निष्ट

सगस्स अपच्छिम जाव झूसिय सरीरस्स भत्तपाणं पडिआइक्खियस्स परोसंतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूतेहिं अणि

अ० अमनोज्ञ नदी: | अ० अमनाम तीनदी | अ० आसावाना कर अलारक० क | बीरव चन | वा० कह्यो ते कह्वो नदी | तं० तो तुमे जावो दे० वे ते वानुप्रिय गोतमः | तु० तुमे म० महासतक स० सम णोवासक नें वास इ जाइ न इ

ट्ठी अकंतेहिं अप्पिएहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए तं गच्छ णं देवाणुप्पिया तुमं महासयं स

ए० इम क हइ: | णो० न ही ख० निश्चे दे० देहे वानुप्रिया: | क० कल्पइ स० समणोवास कश्रावकनइ: | अ० वेदनी संलेषणा ना तपालीय चवीनइ प० अनेरा नें स विद्यमान ए० वाकबोरवचन: | जा० यावत् वा० लिनी बो दे० देहे वानुप्रिया:

मणोवासयं एवं० णो खलु देवा० कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिमं जाव परो संतेहिं जाव वागरित्तए तुमे य

रे० रेवती नइ कह्यो | सं० साचा स दचनः | अ० अनि ष्टः | वा० बोलिवा ति मजवचन बोल्या ते तुमनें कल्पइ: | तं० ते तुमे ए० एह ठा० स्थानक आ० आ लोवो | जा० जावत् ज० यथा जोग्यः

णं देवा० रेवइ गाहा वइ संतेहिं अणिट्ठेहिं वागरणेहिं वागरिता तेणं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहिं जाव जहारिहं

प० प्रायश्चित्त लोपसवसैव: | प० पडिव जो: | तं० तिमेंज भ० भगवंत गौ तम श्रमण: | स० समण भगवंतनो वचन तं० तहत्ति प्रमाण करइ: | ए० एहवो अर्थ विनय संभाळेः | सांभळी नइ: | तं० ती हां थी प० नीकळइ नीक

च पायच्छित्तं पडिवज्जाहि तेसे भगवं गोयमे समणस्स भगवओ तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ तओ पडि

ळीनइ: | रा० राजगृह न० नगर नइ विच इ म० मध्यो मध्य थइ वइ: | अ० पइसइ: | जे० जीहां म० महासतक नें नि० घर बइ: | जे० जीहां म० महासतक समणोवासक श्रावकबइ

निक्खमइ २ रायगिहं णयरं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ जेणेव महासतगस्स गिहे जेणेव महासतए समणो वासए ५२

त० तीहां आ० आवि आ वीनइ: | त० तिवारे ते म० महा सतक | स० समणोपा सक | भ० भगवंत गो० गो तम नइ: | ए० आवता देखी नइ ह० हर्ष संतोष पा म्यो: | जा० यावत् व० वंदि या नइ विच इ: | भ० भगवंत

तेणेव उवागच्छइ तएणं से महासतए समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ हट्ठतुट्ठ जाव हियए भगवं

गो० गोतम नइ: | वं० वांदइ न० न मस्कार करइ | तं० तिवारे भ० भगवंत गौतम म० महासतक प्रतइ ए० इम कहइ | ए० इम ख० निश्चे दे० देहे दे वानुप्रिया | रे० रेवती गाथापतीनी नइ: | ए० तुमे एहवो नाप्यो | ना० कह्यो

गोयमं वंदइ णमंसइ तएणं भगवं गोयमं महसयं एवं० एवं खलु देवा० रेवती गाहावइणी एवमाइक्खइ भासेइ

१० पृष्ठाकी प्रतइ १० फेवेइ॥

प० प० रूपो | णो० न ही ख० निश्चे क० क ल्पइ दे० देहे दे वानुप्रिया | स० समणोपासक श्रावक नइ: | अ० वेदनी संलेषणाइ क हिवो न कल्पइ: | तु० तुमे दे० देहे देवा नुप्रिया: | रे० रेवती गाथा पतीनी न इ: | स० कठोर वचन

परूवेइ णो खलु कप्पइ देवाणु० समणोवासगस्स अपच्छिम जाव वागरित्तए तुमेणं देवा० रेवतीगाहावइणी संतेहि

जा० यावत् सा चाक ह्या | तं० ते तु० तुमे दे० देहे वानुप्रिय: | ए० एह ठा० स्थानक नइ: | आ० आलोवो पडिकमो तुमे | जा० यावत् प० प्रायश्चित: | प० पडिव जो | तं० तिवारे ते म० महासतक: | भ० भगवंत गो० गोतम नो वचन तहत्ति करे

जाव वागरित्ता तेणं तुमं देवा० एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि तएणं से महासतगं भगवं गोयमस्स

ए० एहवो अर्थ वि० विनय सं० सांभळी नइ ति वारे महासतक: | तं० तेह ठा० स्थानक नइ आ० आलोवइ: | जा० यावत् ज० यथा जोग्य: | पा० प्रायश्चित्त प० पडि वजइ: | त० तिवारे भ० भगवंत

तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ तस्स ठाणस्स आलोएदि जाव जहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जइ तएणं से भगवं

गो० गौतम स्वामी म० महासतक नें | अं० समीप इथकी | प० निकळे इवी कळीनइ: | रा० राजगृह न० नगर नें म० मध्यो मध्य थइनें | नि० नीकळे | जे० जीहां स० श्रमण भगवंत श्री महावीरदेव बइ:

गोयमे महासतगस्स अंतियाओ पडिणिक्खमइ २ रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावी

उपासक० ५२

रे तेणेव उवागछइ २ समणं भगवं वंदइ नमंसइ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ततेणं सम

वे भगवया कयाइ रायगिहाउ नगराउ पडिणिक्खमइ बहिया जणवय विहारं विहरइ ततेणं से महासतए सम

णो वासए उच्चावएहिं बहूहिं सीलवय गुणवय वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स

जाव धम्मं जागरियं जागरमाणस्स वीसं वासइं समणोवासग परियागं पाउणित्ता एक्कारस पडिमाउ सम्मं काएणं फासित्ता

मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसित्ता सट्ठिं भत्ताए अणसणाए छेदित्ता आलोइय पडिक्कंते कालमासे कालं कि

सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे उववन्ने चत्तारि पलिओवमाइं महासतगेणं तेतेदेवे ततोदेवलोगातो आउक्ख

एणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चत्ता कहिंगच्छिहिति कहिं उववज्जिति गोयमा महाविदेहेवासे इमाइं

कुलाइं भवंति अड्ढाइं दित्ताइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायइस्सइ सेणं तत्थ उम्मुक्क बालभावे

जाव जोव्वणग मणुप्पत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा जाव अणगारे भविस्सइ इरियासमिए जाव

बंभयारी सेणं तत्थ बहुहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्प

ज्जिहिति सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणं मंतं करेति एवं खलु जंबू समणेणं

भगवया महावीरेणं आदिगरेणं जाव संपत्तेणं निक्खेवाउ वासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं ८ नवमस्स

Dr BHAU DAJI

एक० कोऽर्थः धर्मास्वामीनोऽभिः ... जंबू संज्वलइ ते० तीणकालइ ते० तीणकालइ ते० तीणइसमे वर्त्ते: | सा० सावथीनामें एनगरी | को० कोष्टक नाम: | जि० जितसत्रुराजा नवते:

उपासक० ५४ उक्खेवो एवंखलुजंबू तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थीनामंणयरी कोट्ठएचेइए जियसत्तूराया

तत्र ते | सा० सावथीनगरी नइविसइ | नं० दनी | पि० पीता नामें | गा० गाथा पती | कं० कोलवी | प० वसे | अ० ऋधिवंत | च० च्यारकरोड़ सोनइयानी कोडि निधिमां घरतीमा भंडारे ...

तत्थणं सावत्थीए णयरीए नंदणीपियानामं गाहावई कलंबी परिवसइ अड्ढे चत्तारिहिरण्णकोडिउ नि

कोडि घरवखरीवइ: | च० च्यार वृजदस हजारगायानो एकवृज ... हजारगायावइ नंदणीपितानइ: | अ० अश्वनीनामे नव नार्यावइ: | सा० स्वामीसमोसस्या: | ज० जिम | आ० आणंद तस्तिम ...

हाणपउत्ताउ चत्तारि यवड्ढि दसगोसाहस्सिएणं वएणं अस्सिणीभारिया सामीसमोसढे जहा आणंदो तहेव

गि० गृहस्थनो धर्म अंगीकार करे | सा० स्वामी ... विचरइ: | त० तिवारे पछे नं० नंदणीपीता: | स० समणोपासक श्रावक: | जा० यावत विचरइ | ते० तीवारपछे नं० नंदणीपीता

गिहिधम्मं पडिवज्जइ सामीवहियाविहरइ तएणंसेणंदणीपिया समणोवासए जावविहरइ तएणंतस्स णंदणी

श्रावकनइ: | ब० बहु | सी० सीलव्रतादिक करणी करता: | जा० यावत आत्माने भावतो थको | च० चउदे वरस वहीगया | त० तिम | जे० जेष्ठपुत्रने वांछवें | ध० धर्मनी संवदा लेइनइ:

पियस्स बहुहिं सीलव्वयगुणव्वय जावभावेमाणस्स चउद्दससंवच्छराइं वितिक्कंता तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ धम्मपण्णत्ति ५४

वी० वीस वरसनी: | क० वर्ष व | पा० पालीनइ | अ० अरुणगवी माननें विषें देवतापणइ उपनो: | म० महाविदेह खेत्रे | सि० सीजसे | नि० बुझसें | उ० उपासकदसानो नवमो अधिनयणो अर्थ ...

वीसंवासाइं परियागं पाउणित्ता अरुणगविमाणेउववाए महाविदेहे वासे सिज्झिहिति निखेवो उवासगदसाणंन

समोकववइइ: | द० दसमोअधेनो सो अर्थ केसं धर्मास्वामी कहें | ए० इमख० निश्चेजं० हेजंबू | ते० तेणे काले | ते० तेणे समए | सा० सावथी नामें एनगरी

वमं नवमंअज्झयणंसम्मत्तं ९ दसमस्सउक्खेवो एवंखलुजंबू तेणंकालेणं तेणंसमएणं सावत्थी णयरी

को० कोष्टकनामें चैत्यकदताव ग | जी० जीवसत्रु राजा | त० ति हां | सा० सावथीनगरीनें विषें | ले० लेतियानामें | गा० गाथापती | प० वसेइ | अ० ऋधिवंत: | च० च्यारकव

कोट्ठएचेइए जियसत्तूराया तत्थणं सावत्थीएणयरीए लेतियापियानामं गाहावई परिवसइ अड्ढे चत्तारिहि

रनीकोडि धरतीमा भंडारें ... एवं ४ कोडि सोनइया: | च० च्यार वृजदसहजार गायानो एकवृज ... जार गायावइ ... फ० फगुणीनामे नार्या ... | स० समोसस्या: | ज० जीम

रण्णकोडिउ निहाणपउत्ताउ वुड्ढिपविच्छर चत्तारिवया दसगोसाहस्सिएणं वएणं फग्गुणीभारिया सामीसमोसढे जहा

आ० आणंद दनीपरइ: | त० तीम ज गि० गृहस्थनो धर्म अंगीकार करइ ज० जीम कामदेवनी परें | त० तीम जे० ज्येष्ठपुत्र ... घरनें विषें स्थापे स्थापीनइ: | पो० पोषधसाला नें विषेइ | स० समण भगवंत:

आणंदो तहेवगिहि धम्मंपडिवज्जइ जहा कामदेवो तहाजेट्ठपुत्तं ठवेइ पोसहसालाए समणस्स भगवउ

म० श्रीमहावीरदेवसंबंधीय मनेिकरनें | उ० उपसंवराजेइनें | वि० विचरें | न० तली विसेष: | णि० उपसर्ग रहित: | ए० इग्यारपडिमा श्रावकनी चली परेवहि | त० तीमज अधि

महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ नवरं णिरुवसग्गा एक्कारसवि उवासगपडिमाउ तहेव

का० कहवु जीवरें | ए० जीमकामदेवनी परे जाणवी | जा० यावत: | सो० सोधर्म देवलोके: | अ० अरुणकील: | वि० विमाननें विषेंदे० देवतापणें उपनो ठि० स्थीती: | च० च्यारपल्योपमनी

भाणियव्वं एवंकामदेवेणंणेयव्वं जाव सोहम्मेकप्पे अरुणकीलएविमाणे देवताए उववण्णे ठिइ चत्तारिपलिउवमाइं

उपासक० ५५

म० महाविदेहक्षेत्र नेंविषेंइ | सि० सीझसें | द० दसेश्राव कः | व० वनर में | सं० संव रः | व० वरतनेंथ कांधर्मनी विताइप नीकरवानी: | द० दसेश्रा वकः | वि० वीसवर सलगें

महाविदेहे वासे सिज्झिहिति दसएहवि पणरसमे संवछरे वट्टमाणाणं चिंताउ बवणा दसएहवि वीसं वा

स० श्रावक नी: | क० वरस्या यवाली: | ए० इमसर्व० निश्चे जं० हेजंबू | स० श्रमण भगवंत | जा० ज्या वत | सं० संप्राप्त थयांमो क्षे विषेंतिणसर्मे स० सातमा | अं० अंग ना: | उ० उपासकद सानो | द० दस मो | अ० अध्येन नो

समणोवासग परियाउ एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स

अ० एअ र्थ | व० व रुयाः | द० दस मो अध्येन संपूर्ण इतीश्री सुधर्मा स्वामी जंबू प्रतें कहें हे जंबू जीमेंमें श्री महावीर देव कहें हे ते वें कहुं छु माह रीमतथकी नथी कहतो दस अध्येन संपूर्ण कहा ॥ १०॥ | वा० वाणीयग्राम इं विवहणआणंद कहो त्वंपा नगरी नें विषे इ कामदेव कह्यो २ दीय श्रावक चुलणी पीयानो कह्यो वाराणसीइ ३

अयमट्ठे पणत्ते दसमं अज्झयणं सम्मत्तं १०

वाणारसीइ वा ४ चुल्लसतक आलंभिका नगरीनें विषे ५ कुंडकोलीयो कंपिलपुरनें विषे ६ ७ सद्दालपुत्र जाणवा गाथार्थ: | को० पोलासपुरनें विषे सकडालपुत्र कह्यो ७ महासतक राजगृहनें विषे कह्यो ८ नंदणीपीया १० जे तियाकिया ९० ए दस श्रावक सावथी नगरीइं वा एश्रावक नी नगरी नि सवइ जाणवा सालहीपीया नो कह्यो

वाणीय गामे चंपा दुवेय वाणारसीइ नयरीए

आलंभियाय पुरवरी कंपिल्लपुरंच बोधव्वं १ गाथार्थ पोलासं रायगिहं सावत्थीपुरिए दोन्निभवेउवास

व० कएमार्थ इ दिवे दस श्रावक नां स्त्रीयांकहइ बइ आणंदनी सत्री सिवनंदा १ कामदेवनी स्त्रीभद्रा २ चुलनी पियानी स्त्री सामा ३ सूरादेवनी अस्त्री धनना मे ४: | चुलसतकनी स्त्री बहुलीना मे ५ कुंडकोलीयानी अस्त्री पुसा नामें ६ सकडालनी अस्त्री अगनीमित्रा ७ महसतकनी अस्त्री रेवती ८ नंदणीपीयानी अस्त्री

गाणं नयरी खलु होति बोधव्वा २ सिवनंदा १ भद्द २ सामा ३ धण ४ बहुला ५ पुस्स ६ अग्गिमित्ता ७ रेवइ ८

अ० अश्वनीए | तेतीयानी नार्य ९ कफणीतामाइ १० ए दस श्रावकांनी नार्यनानाम जांणवा एहविबें आणंद | गाथावतीनें अवध ज्ञान ऊपनो कामदेवनइं: | उपसर्ग पियानें ऊपनो भद्रा माता नो उपसर्ग ३ उपसर्ग नंदणीपीयानें ऊपनो उपसर्ग | देवनें ऊपसर्ग रोगनो ऊपनो ४ चुलसतकनें उपसर्ग धननो ५५

अस्सिणी ९ तह फग्गुणी दस १० नउणणामाइ २ उहिनाणपिसाय २ माया ३ वाहि ४ धण ५ उत्तरिज्जेय ६ भज्जायां सुत्र

ह० कुंडकोलीयानें ऊपसर्ग मुद्रीकानो ऊपनो ६ सकडालनें ऊपसर्ग अगनिमित्रा भार्यानो कह्यो ७ वीजो नाम महावत तितला वत ७ महासतकनें ऊपसर्ग रेवतीनो ऊपनो बेइ ऊपसर्ग रहित थया देवलोकें गया ए गाथा ४ आणंद गाथापतीनें अरुण विमाननें ऊपनो १ कामदेव गाथापती अरुणनें देव लोक गयो २ ख० निश्चे

या ७ दुव्वयांय ८ निरूवसग्गया दोवि १० ४ अरुणे १ अरुणाने २ खलु अरुणप्पह ३ अरुणकंत ४

क० अरुणवडेंसेदेवलोकें नंदणीपियायो ३ सुरदेव अरुणकंतविमाननें विषे ऊपनो ४ चूलसत | क० अरुणसिष्ठ विमानें ऊपनो ५ कुंड कोलिया अरुणझय विमाननें विषे ऊपनो ६ सकडालपुत्र अरुणव | ए विमानें ऊपनो ७ महासतक अरुणवंतंसक विमानें ऊपनो ८ नंदनी पीया अरुण वाग विमानें ऊपनो ९ तेलीया पियाअरुणकिल विमानन ५

अरुणसिट्ठेय ५ अरुणज्झए य छट्ठे अरुणव्वए वि सत्तमे ७ अरुणवडिंसए ८ अरुणगवे ९ अरुण

विमाइ ऊपनो १० ५ ए श्रावकनो आचार: | उ० दस श्रावक सम्माप्त थया: | उ० उपासकदसानो: | स० सातमो | अं० अंग नो | ए० एक श्रुत स्कंध | द० अस अध्येन

णकीलए १० ५ उवासगदसाणं सम्मत्ता उवासगदसाणं सत्तमस्स अंगस्स एगो सुय खंधो दस अज्झयणा

प० वरु पा | व० दस चे० निश्चे | दि० दिवस नें विषें | उ० उपदि सें साधइ | इति श्री उपासकदसानो टबो संपूर्ण थयो: | दसा अध्येन सम्माप्त ॥ श्रीरस्तु

पक्सत्ता दसेसुं चेव दिवसेसु उद्दिसति ॥ इति श्री उपासकदसा टबार्थ सम्माप्तं ॥ श्रीरस्तु: ॥ दसा अध्येन

दस अध्येन संपूर्ण कह्या सुधर्मा स्वामी जंबू प्रतें कहें छें हे जंबू जीमनइं श्री महावीर देव कहें छें ते सांभल्यो तेतीमइं तुझ जंबू प्रतें कहुं छु मादरीमतथकी नथी कहतो इति श्री सातमो अंग संपूर्णमः ॥ तमनइं हर्षिक टिप्पीता अखोभकहें अक्षेविरे: कष्टेन लिखतं यास्ये यतेनपरिपालयेत: | समत १८०७ मीती माघमासे शुक्लपक्षे तिथा द्वादस ग्राम ॥ लिखतं विकानेरमध्ये

सम्मत्तं ॥ १०॥ संमत १८०७ मीती माघमासे शुक्लपक्षे तिथा द्वादस्यां १२ श्री

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017